Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SMARNIKA

1950 G. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112746

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६८वें वार्षिक समारोह पर प्रकाशित

स्मारिका

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संस्थापक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

112746

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल भवन की झाँकी

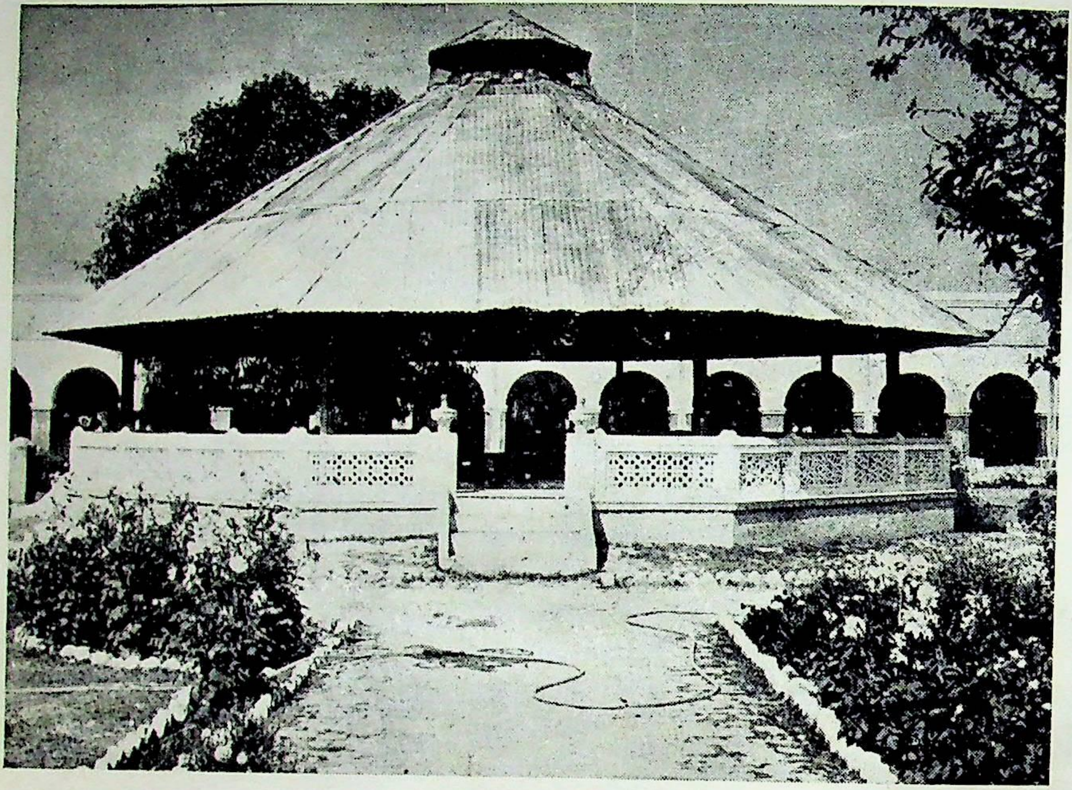

यज्ञशाला

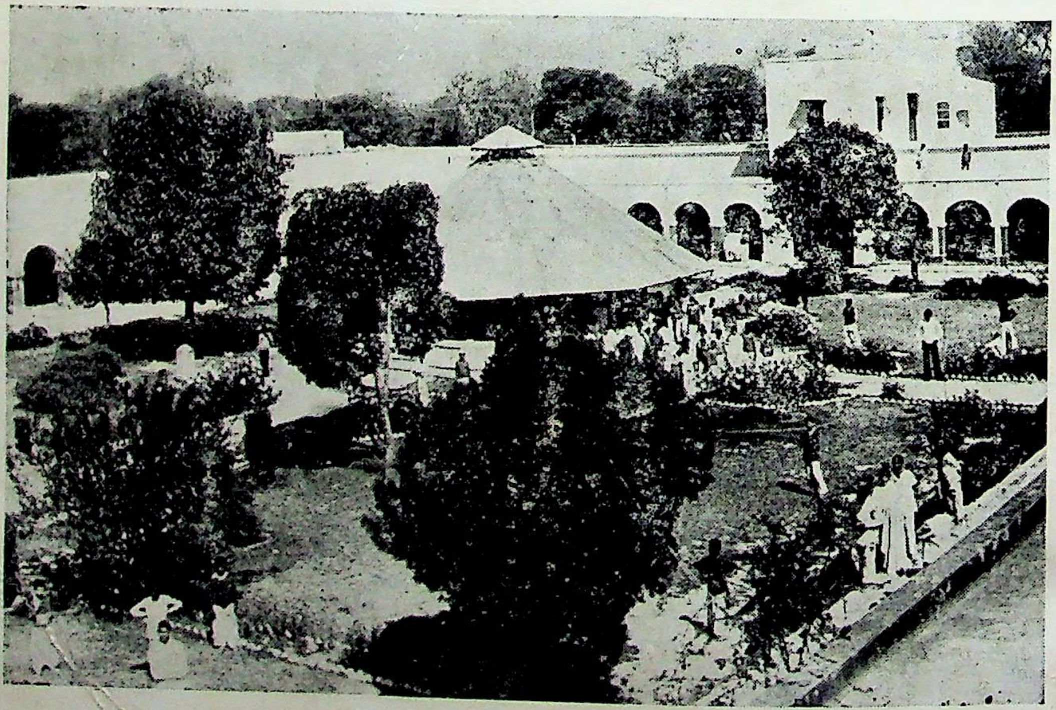

छात्रावास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112746

वेदोपदेश

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥

—ऋक् १०-११७, ६

शब्दार्थ

अप्रचेता:=मूर्ख आदमी। मोघम् अन्नम्=मुफ्त का भोजन, बिना कमाया हुआ भोजन। विन्दते=पाने का यत्न करता है। अर्थात् अपने भोजन के लिए कुछ करना नहीं चाहता। स=उसका ऐसा व्यापार। तस्य=उसके। वधइत्=नाश का ही कारण है। केवलादी=जो अकेला खाने वाला है वह। केवलाघ:=केवल पाप का भागी। भवति=होता है। सत्य ब्रवीमि=मैं सत्य कहता हूं। अर्थात् इस कथन के सच होने में किंचन मात्र भी सन्देह नहीं है।

भावार्थ

मूर्ख आदमी बिना कमाया हुआ भोजन पाने का यत्न करता है अर्थात् अपने भोजन के लिए कुछ श्रम नहीं करना चाहता। उसका ऐसा काम उसके विनाश का कारण है। जो अकेला खाता है वह केवल पाप खाता है। परमात्मा प्रदत्त पवित्र वेद वाणी का यह उपदेश जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा श्रम करने की देता है और बिना परिश्रम किए जो भोग सामग्री उपलब्ध होती है उसका सर्वथा निषेध करता है। अतः वर्तमान युग में ऊपर की कमाई जिसको व्यापारी भाषा में दो नम्बर का पैसा कहते हैं ग्राहय नहीं है।

हरिदत्त शास्त्री
आचार्य
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल का संक्षिप्त परिचय

स्थापना	:	प्रथम वैशाख १९६९ तदनुसार 13 अप्रैल १९१२
नाम	:	गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
संस्थापक	:	अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
निर्माता	:	रईस ला० ज्योति प्रसाद थानेसर
स्वामिनी सभा	:	आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा रोहतक
सम्बन्धित	:	विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
प्रधान	:	चौं० शिव राम वर्मा (दूध विकास मन्त्री) झंझाड़ी
उपप्रधान	:	श्री रामानन्द जी सिहल, पानीपत
मुख्याधिष्ठाता	:	श्री ला० साधु राम जी गुप्त लाडवा
आचार्य	:	श्री हरिदत्त जी शास्त्री
संख्या छात्र	:	२६५
अध्यापक एवं अन्य कर्मचारी	:	४०
अभ्यास की भाषाएं	:	हिन्दी, संस्कृत अंग्रेजी
अन्य विषय	:	गणित, विज्ञान, धर्म शिक्षा
शारीरिक व्यायाम	:	डण्ड, बैठक, दौड़, आसन, लेजियम, डम्बल
सामूहिक खेलें	:	हॉकी, क्रिकेट, फुटबाल, वॉलीबाल, कबड्डी, समतुलन, आग गोला, बैंड वादन, स्तूप निर्माण
स्थिति	:	डाण्ड रोड पर

□

आभार प्रदर्शन

जिन महानुभावों ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र को अपना समझते हुए अपने तन, मन और धन से गुरुकुल की सेवा की है और गुरुकुल को सुदृढ़, सफल और सम्भ्रान्त बनाने में हमारा हाथ बंटा कर हमें उत्साहित किया है हम उनको कभी भूल नहीं सकते। गुरुकुल का प्रत्येक व्यक्ति, एक-एक फूल, एक-एक पत्ता, तथा कुल भूमि का एक-एक रज कण उनका आभार मानता है। ऐसे सब ही महानुभावों को हम हृदय से अनेकानेक धन्यवाद देते हैं।

हरिदत्त शास्त्री
आचार्य
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

□ वाचस्पति 'कुलवन्त'
एम. ए. एम. फिल.

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ६८वें स्थापना दिवस पर प्रकाशित 'स्मारिका' पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूं।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द जी के परम भक्त एवं मानसपुत्र तुल्य थानेसर निवासी स्वर्गीय लाला ज्योतिप्रसाद जी के हृदय में सर्वप्रथम यह शुभ संकल्प हुआ कि इस क्षेत्र में एक गुरुकुल स्थापित किया जाये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने ग्राम कंथल की अपनी १०४८ बीघे जमीन तथा १०००० नकद रुपये देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर कमलों से इस विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना करवायी। आधार शिला रखते हुए स्वामी जी ने कहा था — "जिस धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि में एक दिन भारत भूमि के विनाश का बीज बोया गया था, उसी भूमि में आज यह भारत की उन्नति का बीज बोया गया है।···इस ज्ञान तरु से ऐसे पुष्प उत्पन्न हो जो भारत भूमि को फिर अपनी पुरानी उन्नतावस्था में लाने में सहायक हों।

और तब से लेकर आज तक यह गुरुकुल-तरु नाना रंग-बिरंगे, सुगन्धित सुमनों को प्रसूत करता आया है। इस गुरुकुल के स्नातकों ने देश-विदेश में अपनी योग्यता की हरेक क्षेत्रों में धाक छोड़ी है। गुरुकुल की इन मौलिक उपलब्धियों को प्रकाश में लाना वर्तमान अधिकारियों का नैतिक कर्त्तव्य था और इस कर्त्तव्य की पूर्ति के प्रथम चरण के रूप में वर्तमान आचार्य हरिदत्त शास्त्री जी ने 'स्मारिका' की प्रथा चलाई, जो उनकी मौलिक सूझ-बूझ एवं दूरदर्शिता की प्रतीक है। पहली 'स्मारिका' अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखती है। और यह दूसरी 'स्मारिका' भी मूल्यांकन के लिए विद्वज्जनों के समक्ष प्रस्तुत है।

अस्तु, संस्कृत की एक सूक्ति है :—"साक्षरा विपरीताश्चेद्राक्षसा एव केवलम्" यानी सदाचार रहित साक्षर विद्वान् राक्षस ही कहलाता है—रावण इसका प्रमाण है। आधुनिक युग में विद्यार्थी जो शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं यह उन्हें साक्षर तो बनाती है, पर सदाचारी और धर्मात्मा नहीं बनाती। शिक्षा की सफलता के लिए आवश्यक है कि शिष्य के मन में गुरु के प्रति आदर हो, श्रद्धा हो, गुरुत्व का ऊंचा भाव हो और जो देश का काया पलट कर सकें। जो शिक्षा अपनी भाषा, अपने वेश, अपने भोजन, अपनी संस्कृति और सभ्यता के गौरव को नहीं समझा सकती, वह शिक्षा भारत के बच्चों को सच्चा भारतीय कैसे बना सकेगी? चरित्रवान कैसे बना सकेगी? हमारी गौरवशाली सस्कृति की रक्षा कैसे कर सकेगी? क्या भारत अपना खोया गौरव फिर पा सकेगा? इत्यादि प्रश्न हैं जिनका उत्तर देने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली पूर्णत: असफल है। मैकाले के दिमाग की उपज इस शिक्षा प्रणाली ने हमें पंगु बना दिया है। यह मेरे देश के नवयुवकों को गुलामियत की जंजीरों में जकड़ रही है उनके दिलो-दिमाग से भारतीयता को समाप्त कर रही है। अंग्रेज चला गया किन्तु अंग्रेजियत की जड़ें तो और मजबूत हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की विकृत शिक्षा के युग में 'विद्या धर्मेण शोभते' नामक ऋषि वाक्य की महत्ता को अनुभव किया जा रहा है। वह शिक्षा मेरे देश के नवयुवक के किस काम की है जो उसे नास्तिक, अनास्थावादी, बेकार और पंगु बनाकर जीवन के संघर्षों में थपेड़े खाने के लिए छोड़ दे। अनास्था, अनास्था को ही जन्म दे सकती है। मेरा देश आस्तिक रहा है। यहाँ की आध्यात्म-शिक्षा ग्रहण करने के लिए दूर देशों से लोग आते थे। सच ही कहा है :—

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वयं स्वयं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवः ।

भारतवर्ष की अपनी परम्परायें है, इसकी अपनी संस्कृति है इसका अपना गौरव है, इसका अपना जीवन दर्शन है, इसका अपना महत्त्व है, इसका अपना एक अलग ही स्थान है। ऐसे प्राचीन गौरव-शाली देश को अपना गौरव यदि पुनः प्राप्त करना है तो उसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व को समझना होगा, और समझना होगा ऋषियों के सन्देश को और गुरुकुलों की स्वस्थ परम्परा को पुनर्जीवित करना होगा। मैं यह भी आशा करता हूं कि राम राज्य का स्वप्न लेने वाली गान्धी-वादी भारतीय सरकार गुरुकुलों की ओर ध्यान देगी। अंग्रेजी सरकार के सामने गुरुकुलों ने कभी हाथ नहीं फैलाया, किन्तु अब भारत सरकार को विशेष रुचि पूर्वक गुरुकुलों को अनुदान देना चाहिए। ताकि महर्षि दयानन्द, श्रद्धानन्द और गान्धी के सपनों के भारत का निर्माण हो सके।

'स्मारिका' के सम्पादन में यही कोशिश की गई है कि इससे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और आर्यसमाज का चित्र उभर कर पाठकों के सामने आ सके। सम्पादन में आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री का निर्देशन मिलता रहा बल्कि यों कहिये उन्होंने ही यह काम मुझ से करवाया, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूं। आभारी हूं उन सभी विद्वान् लेखकों का जिन्होंने इस महायज्ञ को प्रेमपूर्वक लेख भेजकर, पूर्ण करने में मुझे सहयोग दिया। स्नेहमय आशीर्वाद प्रेषकों, सन्देश दाताओं और विज्ञापन दाताओं के अमूल्य सहयोग के लिए भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूं। अत्यन्त अल्प समय में भी पूर्ण साज-सज्जा के साथ प्रस्तुत इस स्मारिका के प्रकाशन में श्री सुभाष बन्सल और परिवार के सभी सदस्यों के सहयोग को भी भुलाया नहीं जा सकता। अत्यन्त व्यस्त होने पर भी बन्सल साहब व फोरमैन हीरालाल भारती जी ने समय पर 'स्मारिका' मुद्रित कर हमें रचनात्मक सहयोग दिया, आभारी हूं। मैं स्वयं भी व्यस्त व्यक्ति हूं अतः 'स्मारिका' सम्पादन में त्रुटियाँ रह गयी हों उन्हें आत्मीयता के साथ स्खलन समझकर पाठक छोड़ देंगे, ऐसी आशा है।

सम्पूर्ण स्मारिका कैसी बन पड़ी है, इस विषय में मैं मूक ही रहना चाहता हूं, क्योंकि इसका निर्णय पाठकों को करना है।

इति शुभम् ।

ए-६, टैगोर भवन
विश्वविद्यालय परिसर, कुरुक्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देश

उप राष्ट्रपति, भारत
नई दिल्ली
Vice-President, India
New Delhi
फरवरी 7, 1980

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनांक २ फरवरी, १९८० का प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हैं कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) का ९८वां वार्षिक महोत्सव आगामी दिनांक ४ अप्रैल, १९८० से ६ अप्रैल, १९८० तक आयोजित करने का निश्चय किया गया हैं। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित होगी। मैं वार्षिक उत्सव तथा स्मारिका की सफलता के लिए अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं।

आपका
ह०/- म० हिदायतउल्ला

विदेश मंत्री, भारत
Minister of External Affairs,
India
नई दिल्ली
26, फरवरी, 1980

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र' आगामी अप्रैल मास में अपना ९८वां वार्षिक महोत्सव मनाने जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संस्था द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय हैं।

मैं आपके उत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

ह०/- पी. वी. नरसिंह राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

No.-MR-286/80
रेल मंत्री, भारत
Minister for Railways
India
फरवरी 8, 1980

प्रिय शास्त्री जी,

आपका २ फरवरी, १९८० का पत्र मिला। गुरुकुल के ६८वें वार्षिक समारोह में आमंत्रण के लिये धन्यवाद।

यदि उधर का कार्यक्रम बना तो आपको सूचित करूंगा।

महोत्सव की सफलता के लिए मेरी शुभ कामनाएं हैं।

आपका,
ह०/- कमलापति त्रिपाठी

कृषि मंत्री, भारत सरकार
नई दिल्ली-११०००१
Minister of Agriculture
Government of India
New Delhi-110001

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ६८वां वार्षिक महोत्सव आगामी अप्रैल को मनाया जायेगा तथा इस शुभ अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशन का निश्चय किया गया हैं। यह संस्थान अपने स्थापना काल से ही निःशुल्क विद्या दान के पवित्र कार्य में लगा हुआ हैं। यह अच्छा कार्य हैं और आशा की जाती हैं कि भविष्य में भी यह संस्थान इस पवित्र कार्य मे रत रहेगा।

मैं वार्षिक महोत्सव तथा स्मारिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

ह०/- बीरेन्द्र सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह मन्त्री, भारत
Home Minister,
India,
नई दिल्ली
मार्च 1, 1980

यह हर्ष का विषय है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा गुरुकुल के ६८वें वार्षिक महोत्सव के शुभावसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है। स्मारिका की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं स्वीकार करें।

ह०/- ज़ैल सिंह

मन्त्री,
सिंचाई एवं बिजली विभाग, हरियाणा,
चण्डीगढ़

मुझे यह जानकर अति हर्ष हुआ है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ६८वां वार्षिक महोत्सव अप्रैल के मास में मनाया जा रहा है।

गुरुकुल ने देश के अनेक बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देकर जो उपकार का कार्य किया है वह अति सराहनीय है। मुझे आशा है कि भविष्य में भी यह संस्था अपने कार्य को भली प्रकार निभाती रहेगी।

मैं इस शुभ अवसर पर सभी कार्यकर्ताओं तथा प्रबन्धकों को अपनी शुभ-कामनाएं देता हूँ।

ह०/- मेहर सिंह राठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य मंत्री हरियाणा
चण्डीगढ़
दिनांक 12 मार्च, 1980

हमारे देश में प्राचीन समय से ही गुरुकुल आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक शिक्षा के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। साधारण नागरिक से लेकर महान् सम्राटों तक की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल आश्रमों में होने के प्रमाण मिलते हैं। इस तरह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ऊंची और गौरवपूर्ण प्रम्पराएं रही हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने पिछले ६८ वर्षों में प्रदेश में गुरुकुल-शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि यह शिक्षण संस्था खूब फले-फूले और विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण में अपना योगदान देती रहे।

संस्था के वार्षिक उत्सव के अवसर पर मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई तथा शुभ कामनाएं भेजता हूं और स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

ह०/- भजन लाल

मन्त्री,
लोक निर्माण विभाग, हरियाणा,
चण्डीगढ़

मुझे यह जानकर अतीव हर्ष हुआ है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ६८वां वार्षिक महोत्सव अप्रैल के प्रथम सप्ताह में हो रहा है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली हमारे देश में पुरातन काल से चली आ रही है। हरियाणा के गांवों में जागृति लाने और लोगों को शिक्षा की ओर प्रेरित करने में गुरुकुलों का बहुत योगदान रहा है। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में भी गुरुकुल ग्रामों से अनपढ़ता और अज्ञान को दूर करने में सहायक होते रहेंगे।

मैं महोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

ह०/- रामपाल सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर आर० डी० शर्मा
उपकुलपति,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
२ मार्च, १९८०

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ६८वां वार्षिक महोत्सव अप्रैल मास में आयोजित किया जा रहा है यह हर्ष का विषय है। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी यह एक स्तुत्य निर्णय है।

यह सर्वविदित है कि हमारे देश की एक बहुत बड़ी जनसंख्या अशिक्षित है। कोई भी राष्ट्र, किसी भी दिशा में तब तक समुचित प्रगति नहीं कर सकता, जब तक वहां का प्रत्येक नागरिक शिक्षित या कम से कम साक्षर न हो जाए। गुरुकुल ने ही असंख्य विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा देकर इन परम्पराओं को निभाने तथा शिक्षा के नए कीर्तिमान स्थापित करने में सराहनीय प्रयास किये हैं।

मैं वार्षिक समारोह की सफलता की हार्दिक कामना करता हूं।

ह०/- आर० डी० शर्मा

मन्त्री,
खाद्य एवं पूर्ति विभाग, हरियाणा,
चण्डीगढ़

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र अपना ६८वां वार्षिक महोत्सव अप्रैल में मना रहा है।

गुरुकुल ने निःशुल्क शिक्षा देकर अनेक बच्चों के जीवन में ज्ञान की जोत जलाई है तथा उन का भविष्य बनाने में बड़ा योगदान दिया है। मुझे आशा है कि यह संस्था आगे भी इसी प्रकार अपना कर्त्तव्य निभाती रहेगी।

मैं इस अवसर पर कार्यकर्ताओं तथा प्रबन्धकों को अपनी शुभ-कामनाएं देता हूं तथा महोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

ह०/- गजराज बहादुर नागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५, सैन्ट्रल लेन
बंगाली मार्किट, नई दिल्ली

मान्यवर महोदय,

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ६८वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में 'स्मारिका' का प्रकाशन किया जा रहा—यह जानकर प्रसन्नता हुई। भारतीय संस्कृति के गौरव को अक्षुण्ण बनाये रखने तथा भारत के आध्यात्मिक सन्देश को विश्व में प्रसारित करने में गुरुकुलों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक सन्दर्भों में भी देश की सेवा में समर्थ हैं। इस प्रणाली को उच्च-स्तर पर प्रोत्साहन मिलना चाहिए क्योंकि यह प्रणाली हमारे देश की सबसे प्राचीन शिक्षा प्रणाली हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इस ६८वें स्थापना दिवस पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। कामना करता हूं आयोजन पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हो।

ह०/- डॉ० रत्नाकर पाण्डेय

मन्त्री,
वित्त विभाग, हरियाणा,
चण्डीगढ़

यह जानकर हर्ष हुआ कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र अपना स्थापना दिवस अप्रैल मास में मना रहा हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कार्य को बहुत अच्छे ढंग से किया हैं। गुरुकुल प्रणाली हमारे देश की प्राचीनतम प्रणाली है जिस के द्वारा प्राचीनकाल में भी शिक्षा का प्रसार होता रहा हैं। इसको ओर अधिक लोकप्रिय बनाना आज की एक बड़ी आवश्यकता हैं। मुझे आशा हैं कि स्थापना दिवस इस संस्था के कार्य मे और तेज़ी लाएगा और इसके अधिकारीगण और अधिक उत्साह से शिक्षा के प्रसार के कार्य को सम्पन्न कर सकेंगे।

मैं आप के आयोजन की सफलता की कामना करता हूं।

ह०/- बलवन्त राय तायल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्जा एवं सिंचाई मंत्री के विशेष सहायक
भारत
नई दिल्ली
Special Assistant
To The Minister for Energy & Irrigation, India
New Delhi
एम० ई०-4(1)/80
फरवरी 6, 1980

प्रिय शास्त्री जी,

नमस्कार। आपका 2 फरवरी का पत्र ऊर्जा तथा सिंचाई मंत्री श्री ए. बो. ए. गनी खान चौधरी साहब के नाम प्राप्त हुआ। मंत्री महोदय आजकल दौरे पर हैं।

स्मारिका की सफलता हेतु शुभकामनाओं सहित,

आपका,
ह०/- ओमप्रकाश भाटिया
प्रथम निजी सहायक

अनुभाग अधिकारी
कृषि मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-११० ००१
S.O. To Minister of Agriculture
Government of India
New Delhi-110 001
दिनांक 20 फरवरी, 1980

प्रिय महोदय,

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ६८वें वार्षिक महोत्सव एवं प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए माननीय कृषि मंत्री जी का शुभ कामना सन्देश भेजने का मुझे निदेश हुआ हैं।

भवदीय,
ह०/- ओम प्रकाश
अनुभाग अधिकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VICE-CHANCELLOR
Kurukshetra University
Kurukshetra (Haryana)
५ मार्च, १६८०

मुझे यह जानकर अतीव हर्ष हुआ कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र ६८वें वार्षिक महोत्सव के अवसर पर स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

गुरुकुल सारे देशवासियों के लिए गौरवास्पद है क्योंकि यहां पर हजारों विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा दी जाती है। गुरुकुल भारत की प्राचीन संस्कृति में अपना अलग महत्व रखते हैं। आज का विद्यार्थी प्राचीन संस्कृति को त्याग कर पश्चिमी सभ्यता की तरफ आकर्षित हो रहा है। गुरुकुल के शिक्षक भारतीय संस्कृति की सार्थकता एवं उपयोगिता का ज्ञान देकर विद्यार्थियों का सही मार्ग दर्शन कर सकते हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करने वाले युवकों से यह आशा की जाती है कि वह अपने जीवन में कर्मयोग के उपदेश को धारण करेंगे और परिश्रम से अपने देश का नाम ऊंचा करेंगे।

मैं गुरुकुल के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को इस अवसर पर अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं।

ह०/- विकास मिश्र

VICE-CHANCELLOR
Professor R. C. Paul
Punjab University
Chandigarh-160 014

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आगामी अप्रैल मास में 'विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र' ने अपना ६८वां वार्षिक महोत्सव अपनी विगत गरिमा के अनुरूप मनाने का निश्चय किया है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति भारतीय संस्कृति तथा उसके जीवन मूल्यों को सम्पूर्णता में प्रस्तुत करने का एक भगीरथ उपक्रम है। आधुनिक जीवन में व्याप्त भौतिक व्यामोहों का समाधान इसी नैतिकता प्रधान शिक्षा पद्धति के द्वारा संभव है, ऐसा मेरा विश्वास है।

आशा है, प्रस्तावित महोत्सव तथा उस अवसर पर प्रकाशनार्थ 'स्मारिका' भारतीय चिन्ताधारा की महिमाओं के अनुरूप समायोजित होंगे।

सफलता के लिये मंगलकामनाओं सहित,

ह०/- राम चन्द पाल
कुलपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्री,
जेल एवं दुग्ध विकास विभाग, हरियाणा
चण्डीगढ़

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि शीघ्र ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ६८वां वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति हमारे देश की सबसे पुरानी शिक्षा पणाली है। गुरुकुल में पुस्तक ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। शिक्षा में समाजवाद का असली रूप गुरुकुल शिक्षा पद्धति के द्वारा ही लाया जा सकता है तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही समाजवाद को सफल बना सकती है। गुरुकुल में खान-पान, रहन-सहन और शिक्षा सभी विद्यार्थियों को बिना किसी भेद भाव के दी जाती है। गुरुकुल के खुले और सुखद वातावरण में जो शिक्षा बच्चों को दी जाती है वह उन के जीवन में बहुत सहायक होती है।

मैं आशा करता हूं कि वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रकाशित की जा रही स्मारिका के द्वारा लोगों को गुरुकुल शिक्षा पद्धति से परिचित करवाया जाएगा।

मैं महोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

ह०/- शिव राम वर्मा

वाणिज्य, नागरिक पूर्ति तथा
सहकारिता मंत्री
नई दिल्ली
दिनांक २०-३-८०

यह जान कर प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र अपना ६८वां वार्षिक महोत्सव मना रहा है। निःशुल्क शिक्षण देने के साथ-साथ छात्रों के शारीरिक और नैतिक विकास में इस संस्थान का सराहनीय योगदान रहा है।

मैं गुरुकुल की प्रगति के लिए एवं वार्षिक महोत्सव की सफलता के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं भेजता हूं।

ह०/- प्रणव मुखर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतपूर्व कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार
दिनांक : ४-२-८०

श्री आचार्य जी, नमस्ते।

यह जानकर हर्ष हुआ कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ६८वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर आप एक स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र का सारे गुरुकुल जगत् मे अपना विशेष स्थान हैं। कुरुक्षेत्र के ऐतिहासिक क्षेत्र मे अवस्थित होने के कारण जहाँ इस गुरुकुल को एक विशिष्ट गौरव प्राप्त हैं वहाँ यह गुरुकुल अपनी सुन्दर प्रबन्ध व्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था के कारण भी अपना विशेष स्थान रखता हैं। यहाँ का नियन्त्रण और शिक्षा तथा छात्रों की देख-भाल की व्यवस्था सदा ही सराहनीय और अनुकरणीय रही है। यहाँ अध्ययन करने वाले छात्रों की बौद्धिक शारीरिक और चारित्रिक श्रेष्ठता की ओर यहाँ के आचार्य, शिक्षकों और प्रबन्धकों का सदा ही विशेष ध्यान रहा हैं। यहां की शिक्षा प्राप्त करके गये छात्रों ने विभिन्न क्षेत्रों मे कार्य किया हैं और सफलता प्राप्त की है। यह एक ऐसी अच्छी शिक्षा-संस्था हैं, जहाँ प्रत्येक माता-पिता को अपने बालकों को पढ़ने के लिए भेज कर लाभ उठाना चाहिये। मैं इस उत्तम संस्था की दिन-दूनी और रात चौगुनी उन्नति चाहता हूं और इसे निरन्तर उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते देखना चाहता हूं और स्मारिका एवं उत्सव की सफलता चाहता हूं।

ह०/- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति
यज्ञ कुटीर ज्वालापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान

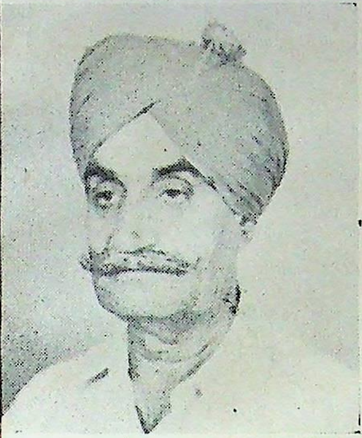

चौ० शिवराम जी वर्मा
मन्त्री हरियाणा (झिंझाड़ी)

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की प्रबन्धक-समिति

उपप्रधान

ला० रामानन्द जी सिंगला
रोशन महल पानीपत

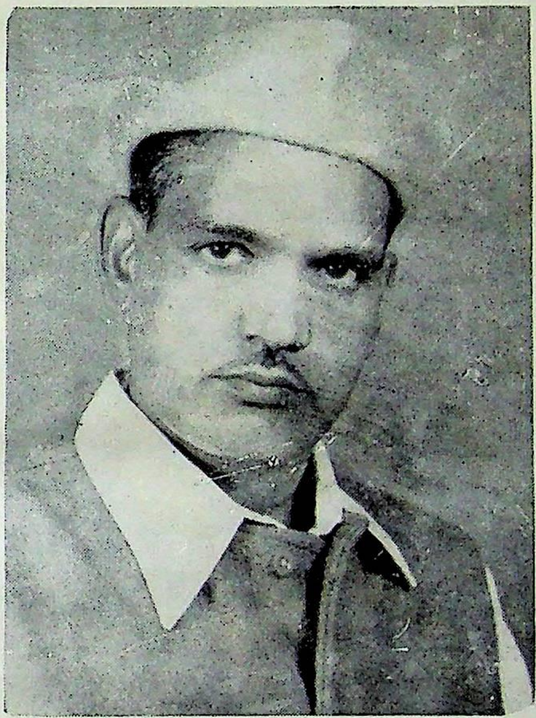

सदस्य पदेन
श्री हरिदत्त जी शास्त्री,
आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

ला० साधु राम जी आर्य, प्रधान आर्य समाज, लाडवा-मुख्याधिष्ठाता, सेठ रूलिया राम सर्राफ, आर्य समाज, थानेसर-कोषाध्यक्ष, चौ० अनन्त राम पूर्व एम० एल० ए०, फार्म मिर्जापुर-सदस्य, सरदार सरदारा सिंह, सरदारा मार्केट, थानेसर-सदस्य, वैद्य राम लाल, यमुना नगर (अम्बाला)-सदस्य, श्री महेश्वर शास्त्री, सींक (करनाल)-सदस्य, चौ० बृज लाल जी, लोहरी मण्डी कैथल-सदस्य, सेठ राम मूर्ति जी, कैथल-सदस्य, कंवर राम पाल जी मन्त्री हरियाणा (उपलाना कुरुक्षेत्र)-सदस्य, श्री केदार नाथ जी सिहल, सेवा निवृत्त एस० डी० ओ० थानेसर-सदस्य, श्री चन्द्रमणी एडवोकेट, जि० कचहरी कुरुक्षेत्र-सदस्य, श्री रामगोपाल एडवोकेट, पानीपत-सदस्य, श्री जयदेव जी, आयुर्वेदालंकार, लक्ष्मी मैडिकल हाल, अम्बाला छावनी-सदस्य, चौ० अमर सिंह, ग्राम मथाना, जि० कुरुक्षेत्र-सदस्य, चौ० राम सिंह, ग्रा० उमरी, जि० कुरुक्षेत्र-सदस्य, ला० जगत प्रसाद ठेकेदार, आर्य समाज, लाडवा-सदस्य, श्री बाबू राम वकील (आय-बिक्री कर) कैथल-सदस्य, श्री रूलिया राम वकील. करनाल-सदस्य, श्री भगवान सिंह, उपमण्डल शिक्षा अधिकारी कार्यालय थानेसर-सदस्य, महाशय भरत सिंह वानप्रस्थी दयानन्द मठ, रोहतक-सदस्य, श्री जगत सिंह शास्त्री आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल, पानीपत-सदस्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपायुक्त कुरुक्षेत्र से जिला स्तरी
खुली प्रतियोगिता (कुश्ती) में विज
चैम्पियनशिप की शील्ड लेते हुए गुरुकु
के व्यायाम शिक्षक श्री राम मेहर जी

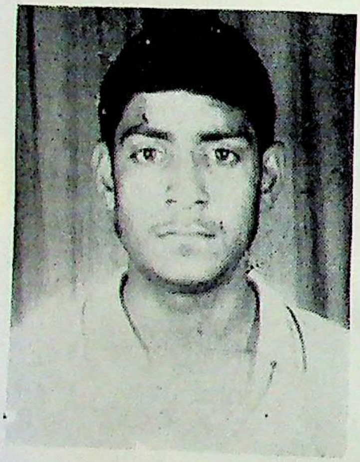

←
कबड्डी दल के अध्यक्ष योगेन्द्र सिंह

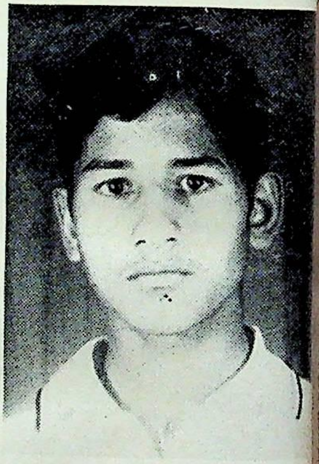

→
कबड्डी दल के उपाध्यक्ष हवा सिंह

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के मेधावी छात्र

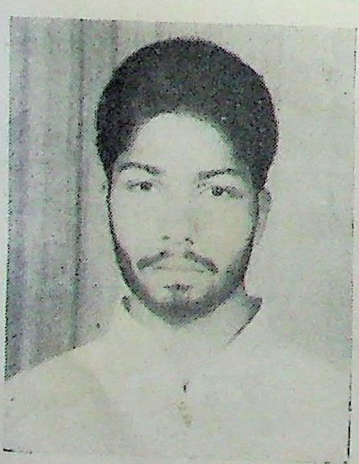

ब्र० विजयेन्द्र सिंह

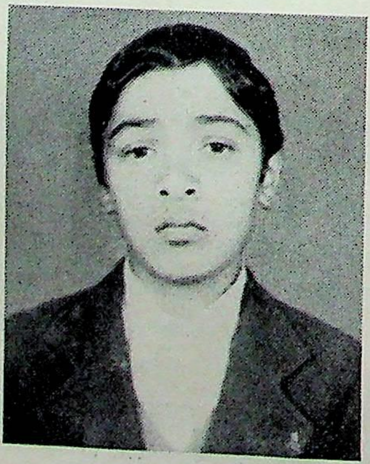

ब्र० सत्यवान सिंह

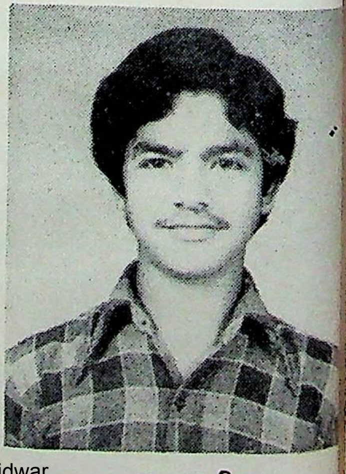

ब्र० इन्द्रजित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द सरस्वती : शिक्षा दर्शन

ए० के० शर्मा

□

आज से लगभग एक शती पूर्व इस देश में अज्ञान का महा अन्धकार फैला हुआ था। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक दृष्टि से भारत का वह इतिहास कालिमा पूर्ण इतिहास है। मानवता मिट रही थी। मानव पशु से हीन हो चुका था। विचारहीनता ने आचारहीनता को जन्म दिया और भारत धर्म के मार्ग से हटकर सम्प्रदायों का अखाड़ा बन गया था। मानव जाति अभ्युदय के मार्ग को छोड़कर अज्ञान के अन्धकार में भटक रही थी। ये अन्धविश्वासों व कुरीतियों के जाल में जकड़ी हुई थी तथा विवेक बुद्धि को खो चुकी थी। सार्वभौम, सत्य एवं वैदिक सिद्धान्तों को भुलाकर ऊलजलूल एवं लचर विचारों को धर्म मान रही थी। निष्कर्मण्यता व कायरता को अंगीकार कर के पराजित मनोवृत्ति को अपना चुकी थी। अपनी पावन संस्कृति की रक्षा तो क्या माताओं, बहनों, पुत्रियों व पत्नियों ही नहीं अपने सर्वस्व की रक्षा में असमर्थ बन चुकी थी। लाखों पुत्रियों को पैदा होते ही गले में अँगूठा दबाकर मार दिया जाता था। अनाथ बच्चे विधर्मियों के चँगुल में जा फंसते थे। ऐसे समय में काठियावाड़ में मूल शंकर के रूप में महातेजस्वी, ज्ञान के सूर्य, वेद विद्या के भण्डार, दृढ़ प्रतिज्ञ, प्रभु-विश्वासी महर्षि दयानन्द जी ज्योति के रूप में उदित हुए।

दयानन्द जी की सूक्ष्म व पैनी दृष्टि ने भारत की अन्तरात्मा में झांका और अनुभव किया कि जब तक ज्ञान का प्रकाश मेरे भारत को नहीं मिलेगा, भारत सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, मानसिक व बौद्धिक दासता से मुक्त न हो सकेगा। अज्ञान को मानव का मूल शत्रु मान कर उन्होंने आर्य समाज के आठवें नियम में स्पष्ट घोषणा की कि "अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिए"। साथ ही महर्षि जी ने आर्य शब्द की बहुत ही अनुपम तथा अपने में पूर्ण व्याख्या की है—वेद का पढ़ना पढ़ाना, संसार का उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य बताया है। इसका अर्थ है एक आर्य का जीवन परोपकार, पवित्र, आचार, त्याग, न्याय, सच्चाई, धर्म व देश भक्ति से पूर्ण होना चाहिए।

१९वीं ई० शताब्दी में जब अंग्रेजी सभ्यता अपने पाँव भारत में दृढ़तापूर्वक जमा रही थी और भारतीय समाज मरणोन्मुख साँस ले रहा था, तब ब्रह्मसमाज और प्रार्थना समाज के रूप में मृतप्रायः समाज को गंगा जली छिड़क कर जीवित करने का असफल प्रयास किया जा रहा था। १८५७ की महान क्रांति के पश्चात जब समस्त राष्ट्र अंग्रेजी, अत्याचार और दमन का शिकार हो रहा था तब एक नई चेतना, नये प्राण, नई आशा तथा नया विश्वास जनता के मानस तल पर तैरता दिखाई दिया। इस महान आशा के सन्देश को देने वाले उसी ऋषियों की परम्परा में से एक थे स्वामी दयानन्द। इन्होंने न केवल देश के पुनर्निर्माण में योगदान दिया वरन् भारत के समक्ष सत्य, प्रेम, शान्ति और अहिंसा के सन्देश के साथ राष्ट्रभाषा व राष्ट्रप्रेम के क्षेत्र में दृढ़ आदर्शवादी विचार प्रस्तुत किए।

दूरदर्शी दयानन्द जी परम पूज्य प्रातः स्मरणीय गुरु विरजानन्द जी की आज्ञा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन करने के लिये क्षेत्र में उतरे और सुधार के लिये उन्होंने यत्र-तत्र नगरों में घूम-घूम कर अवतारवाद, मूर्तिपूजा, अनेक देवी देवताओं का पूजन श्राद्ध आदि विविध भ्रमजाल तथा मतमतान्तरों के प्रसार को रोकने के लिये व्याख्यान देना प्रारम्भ किया। पौराणिक पाखण्डियों तथा वेद विरुद्ध मतों के अनुयायी एवं प्रचारक पण्डितों को ललकारा, उनसे शास्त्रार्थ किए। उन्होंने वेद के प्रमाणों, प्रबल तर्कों और युक्तियों से सिद्ध कर दिखाया कि सभी वेद विरुद्ध सम्प्रदाय तथा मत एवं प्रचलित रीति रिवाज पाखण्ड हैं और मनुष्यों को अज्ञान के गढ़े में धकेलने वाले हैं।

किन्तु जो मकान गलत ढंग से बनाया जा चुका है, उसमें तोड़-फोड़ कर के अपनी इच्छानुसार आप कितना परिवर्तन ला सकते हैं ? पूर्ण वृक्ष के तने और टहनियों को आप कितना मोड़ लेंगे ? ठीक उसी प्रकार व्यक्ति के मन, मस्तिष्क, विचारों, धारणाओं को बदलना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होता है।

अतः महर्षि जी ने जहाँ सुधार कार्य में अपनी शक्ति लगाई, वहाँ निर्माण का कार्य भी हमें दिया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर विषय के पश्चात दूसरे समुल्लास में जीवन, निर्माण की चर्चा चलाई :—"सुयोग्य माता-पिता भावी सन्तान के निर्माण की पहली सीढ़ी है। जिस प्रकार अच्छे मकान के लिये हम अच्छी ईंट, बढ़िया लकड़ी व अन्य सामग्री और कुशल राज का प्रबन्ध करते हैं। इसी प्रकार श्रेष्ठ सन्तान बनाने के लिये भी तैय्यारी की आवश्यकता है।"

स्वामी दयानन्द कोरे समाज-सुधारक एवं निर्माण कार्य तथा धार्मिक पुनर्जागरण के एक प्रवर्तक ही नहीं बल्कि राष्ट्रवादी एवं एक राजनैतिक आदर्शवादी भी थे। उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में राजतंत्र और शासन के सिद्धांतों पर विचार किया है। उनके मतानुसार केवल वही लोग शासन करने योग्य हैं—जिनके अन्दर क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण हों।" जिन्होंने न केवल देश के पुनर्निर्माण में योगदान दिया वरन् भारत के सत्य, प्रेम, शान्ति और अहिंसा के सन्देश के साथ राष्ट्रभाषा, राष्ट्र-प्रेम और शिक्षा के क्षेत्र में दृढ़ आदर्शवादी विचार हमारे सामने प्रस्तुत किए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमारे सामने एक विशिष्ट शिक्षा दर्शन प्रस्तुत किया। वह प्रकृतिवाद तथा आदर्शवाद के उन्नत विचारों पर आधारित पश्चिमी-चकाचौंध में भटकने वाले युवकों को प्राचीन आदर्शोन्मुख, मार्ग दिखाने में सफल सिद्ध हुआ। स्वामी जी ने भारतीय शिक्षा की डूबती हुई नौका को मंझधार से पार किया और आदर्शवाद और प्रकृति के माध्यम से भारत में शिक्षा की पुनर्रचना के लिये उपदेश दिया। स्वामी दयानन्द जी को प्रकृति में विश्वास करने वाला महर्षि कहा जा सकता है। उन्होंने बालक की शिक्षा को गाँव की और नगरों की बस्तियों से दूर प्रकृति की गोद में आयोजित करने को कहा।

स्वामी दयानन्द जी का शिक्षा दर्शन आदर्शवाद की सबल भूमिका पर आधारित है। इसका आधार उपनिषद है। स्वामी जी माता-पिता को बालक का प्रथम शिक्षक कहते हुए वर्णन करते हैं कि बालक की शिक्षा तभी आरम्भ हो जाती है जब वह गर्भ में होता है और माता का चरित्र पुत्र के चरित्र पर गर्भ अवस्था में ही प्रभाव डालता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी जी का मत है कि बालक को शिक्षा सर्वप्रथम घर पर माता-पिता के द्वारा ही दी जानी चाहिए। उनका मत है कि जैसे ही बालक पाँच वर्ष की आयु में प्रविष्ट हो उसे संस्कृत और अन्य भाषाओं का शब्द ज्ञान कराना चाहिए। माता-पिता अपने बच्चों को यथासम्भव ऊँचे ढग से शिक्षा दें, उनको सत्य मार्ग की ओर आकृष्ट करें। संक्षिप्त में अपनी समस्त शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शक्ति का प्रयोग बच्चों को सुशिक्षित एवं सभ्य बनाने में करें। बालक को ८ वर्ष की आयु में चरित्रवान् एवं गुणी अध्यापकों के स्कूल या गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहिए।

अध्यापक को चाहिए कि वह बालक के मन और मस्तिष्क में यह विश्वास पैदा करे कि सत्य और धर्म का ज्ञान तभी हो सकता है जब विद्यार्थी मोहमाया और शारीरिक सुखों और विलासप्रियता को पूर्ण रूप से त्याग कर रहे। अध्यापक का यह कर्त्तव्य है कि जाति और वंश, वर्ग और श्रेणी, अमीर और गरीब के बंधन से दूर होकर विद्यार्थियों को सच्चे धर्म के सिद्धान्त से अवगत कराये।

स्वामी जी विद्यार्थी को शारीरिक और मानसिक रूप से कठोर तथा परिश्रमी एवं संयम का पालन करने वाला बनाना चाहते थे ताकि वह भविष्य में मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में विचलित न हो सके और आदर्शों से भटक न जाएं।

स्वामी दयानन्द जी ने स्त्री शिक्षा के पक्ष में अनेक स्थानों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने १९वीं शताब्दी में स्त्रियों की शिक्षा की बात कही। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया क्योंकि लड़कियों की शिक्षा के द्वारा ही कम से कम आगे आने वाली पीढ़ी को अज्ञान रूपी अन्धकार के गहरे गर्त में गिरने से बचाया जा सकता है।

स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा १९वीं शताब्दी में ही घोषित कर दिया था। उस समय ही उनका कहना था कि हिन्दी ही सम्पूर्ण राष्ट्र की जन भाषा के रूप में विकसित हो सकती है। शिक्षा केन्द्रों के पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा और धर्मशिक्षा को अनिवार्य स्थान मिलना चाहिए। स्वामी दयानन्द जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस बात का नारा लगाया था कि स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दयानन्द जी ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक क्रान्तियाँ पैदा कर दीं। बल्कि ऐसा कहना अनुचित न होगा कि महर्षि के योगदान ने देश और जाति की रक्षा के लिये हर क्षेत्र में पूर्ण रूप से हमारा पथ-प्रदर्शन किया। इसके साथ-साथ महर्षि ने राष्ट्र-सुधार, संस्कृति, सभ्यता तथा साहित्य व भाषा की रक्षा करके, भारतीय लोगों को जो जागरूकता प्रदान की है वह भारत के इतिहास के पन्नों में सदा स्वर्ण अक्षरों में अमर रहेगी।

—डी० ए० वी० कॉलेज, नन्योला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या वेद व्यवहार्य हैं ?

आचार्य विष्णुमित्र, विद्यामार्तण्ड उपकुलपति, गुरुकुल खानपुरकलाँ

□

वेद जीवन पुस्तक है। उसकी शिक्षायें व्यवहार्य हैं । सम्प्रदायवादियों जो भिन्न-भिन्न समय में हुए हैं, ने अपने मन्तव्य या सिद्धान्त को चालू करने के लिये वेद के मन्त्रों के अर्थ को अपने मन्तव्य के अनुकूल बनाने के लिये उनका मन चाहा अर्थ किया। कुछेक विद्वानों ने तो उन मन्त्रों का, चमचे से आहुति देते समय यही मन्त्र प्रयुक्त होता है, यह विवाह के लिये ही है, यह केश काटने के लिये है, इस का प्रयोग वनगमन के लिये है, यह राज्याभिषेक के समय ही प्रयुक्त होता है। ऐसा लिख कर वेद के अर्थों का अनर्थ कर डाला। इससे वेद पढ़ने की इच्छा वाले व्यक्तियों में अश्रद्धा का संचार हुआ। वेद के पढ़ने पढ़ाने की परम्परा समाप्त हो गई। ऐसे विद्वानों के द्वारा वेदों का बड़ा अहित हुआ है। पढ़ने वाले सोचने लगे कि वेद में व्यवहार के योग्य कोई बात है ही नहीं तो इसके पढ़ने से क्या लाभ है ? क्यों इसके पढ़ने में समय व्यर्थ नष्ट किया जावे।

भक्त लोगों के पूछने पर उन पण्डितंमन्य विद्वानों ने कहना प्रारम्भ किया कि वेदों को तो भस्मासुर उठाकर ले गया और वे असली वेद अब नहीं रहे। इस प्रकार उलटी-सुलटी बातें कहके अपने भक्तों को भ्रम में डालते रहे। स्वामी शंकर जिनको अपने समय का महाविद्वान् माना जाता था। अपने ग्रन्थों में उन्होंने कहीं भी वेद मन्त्रों का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने उपनिषदों को ही वेद कह कर लोगों की मति में भ्रम उत्पन्न किया। इससे भी वेद के विषय में अरुचि बढ़ती रही। ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी भी विद्वान् ने वेद के वास्तविक रूप का प्रतिपादन नहीं किया।

केवल वेद मन्त्रों के उच्चारण से पाप दूर नहीं होता है। वेद में प्रतिपादित आदेशों तथा शिक्षाओं के अनुकूल चलने में ही कल्याण होता है। वेद की शिक्षा सूत्र रूप में मानवों को उपदेश देती है। वेद के मन्त्रों को विषयवार एक स्थान पर इकट्ठे करके स्वाध्याय करने से वेदों में जो मनुष्योपयोगी शिक्षायें हैं, व्यवहार हैं उनका ज्ञान होता है। प्रत्येक बात को कोई वेद से निकालना चाहे तो यह संभव नहीं है। वेद में यज्ञोपवीत पहनना चाहिये यह शिक्षा तो मिल सकती है परन्तु वह सूतका हो, रेशम का हो, इतना लम्बा हो इसका ज्ञान वेद का विषय नहीं है। इस विषय को ब्राह्मण ग्रन्थों ने बढ़ाया है। वेद में यह कहीं विधान नहीं है कि अमुक काम करते समय अमुक मन्त्र पढ़ो, परन्तु यह काम ब्राह्मण-ग्रन्थों का है। वेद में जीवनोपयोगी मन्त्र हैं, मनुष्य का व्यवहार कैसा हो, माता, पिता, समाज, राष्ट्र के साथ उसका किस प्रकार से व्यवहार हो ये सब शिक्षाएं मूल रूप से प्राप्त होती हैं। वेद का सम्बन्ध जीवन से है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है कि वह देर तक जीवित रहे। स्त्री, पुत्र, धन की इच्छा भी उसकी बनी ही रहती है। खाने, पीने, वस्त्र आदि का भी वह अभिलाषी होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे यश की चाह भी बनी ही रहती है। विद्या, विज्ञान के लिये भी वह लालायित रहता है। न्याय पाने की अभिलाषा, जन्म मरण से छूट कर मोक्ष प्राप्ति भी वह चाहता है। समाज में अपना स्थान ऊंचा बनाने की अभिलाषा वाला वह बना रहता है। प्रायः पूर्वोक्त प्रतिपादित इच्छाओं की पूर्ति के लिये वह सारा जीवन लगा देता है।

वेदों में इन विषयों पर या इनसे मिलते जुलते विषयों पर स्थान स्थान पर वर्णन हैं। उनके धारण करने से मानव के आचरण और व्यवहार में पवित्रता आती है। ऐसा मनुष्य जिसने इस प्रकार की वैदिक शिक्षाओं का अनुगमन किया है, संसार में सफल मनुष्य माना जाता है—

अब आप वेदमन्त्रों की व्यावहारिक शिक्षा का ज्ञान कीजिये। जो शिक्षा वेद मन्त्रों में निहित है और जो मानव को सुमार्ग पर ले जाती है।

स्तुता मयावरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।

आयुः प्राणं प्रजां पशुँ कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्म लोकम्। अथर्व०

गायत्री मन्त्र की मैं इसलिये स्तुति करता हूं, क्योंकि उसके पाठ करने से लम्बी आयु, सन्तान, पशु, यश, धन, आत्मिक शक्ति प्राप्त होती है। उसी के कारण मोक्ष की उपलब्धि होती है। जीवेम शरदः शतम्। श्रृणुयाम शरदः शतम्। भूयश्च शरदः शतात्। इसमें लम्बे जीवन की प्रार्थना है। साथ में सौ वर्ष से अधिक काल तक भी स्वस्थ रहकर जीते रहें। इस प्रकार की शिक्षा से दीर्घ आयु प्राप्त करने के साधन और व्यवहार भी यहां कथित हैं। इसी प्रकार—

प्रियो देवानां भूयासम्। प्रियः प्रजानां भूयासम्।

प्रियः पशूनां भूयासम्। प्रियः समाननां भूयासम्॥ अथर्व०

मुझसे विद्वन्मण्डल, समग्र प्रजा प्रेम करे। मुझे उपयोगी पशु प्राप्त हों। इस प्रकार की शिक्षा से इनको अपना बनाने के लिये क्या क्या व्यवहार करने होंगे उसकी ओर मानव मात्र का ध्यान जाता है। मनुष्य की इच्छा होती है कि उसके यश का प्रसार सर्वत्र हो। उसकी प्राप्ति के लिये वह प्रयत्नशील होता है। इसी विषय को बतलाते हुए कहा है—'यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन् तेज आहितम्। एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं च नियच्छतु। तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनातु मा। अथर्व० जिस प्रकार सूर्य अपने तेज के कारण अन्धकार को नष्ट कर प्रकाश फैलाता है इसी प्रकार मानव भी अपने सुविचारों से संसार को प्रकाशित करे।

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु। यजु०

जो मेधाबुद्धि विद्वानों को, ज्ञानियों को प्राप्त है। वह प्रत्येक मानव में हो तभी विश्व का कल्याण होता है और सर्वत्र सुख का संचार होता है।

गृहस्थाश्रम की उपयोगी तथा व्यावहारिक शिक्षा का कथन भी वेदों में स्थान स्थान पर किया है—

इहैव स्तं मा वियोष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।

क्रीठन्तौ पुत्रै र्नप्तृभि र्मोदमानौ स्वे गृहे। ऋग्०

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।

संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ। ऋग०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनृणा अस्मिण्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम ।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथ्ने अनृणा आ क्षियेम । अथर्व०
यथे मां वाचं कल्याणी मा वदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।। यजु०

किसी से विरोध न करो, पूर्ण आयु प्राप्त करो, पुत्र, पौत्रों के साथ रहते हुए आनन्दित रहो । पति पत्नी एक दूसरे की विचारधारा को समझ कर चलें । उनके हृदय परस्पर प्रेम के कारण मिले रहें । प्रभु की व्यापकता के समान प्रेम के कारण एक दूसरे में व्यापते रहें । परिवार लोक, समाज लोक और राष्ट्र लोक में हम ऋणी न रहें । अपने व्यवहार से-किसी पर भार डालने वाले न बन कर सहायक बन कर रहें । वेद की वाणी ईश्वर की वाणी है । ईश्वर सारे संसार का पिता, रक्षक है । वह मानव मात्र के लिये है । ऊंच नीच के भाव रखना निन्दित कर्म है । भ्रातृत्व का प्रसार हो ।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवति संभनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ।। अथर्व०
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षम् मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्पञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।। अथर्व०
पुनम्नु मा देवजनाः पुनम्नु मनसा धियः ।
पुनम्नु विश्वा भूतानि जातवदेः पुनीहि मा ।। यजु०
सभानी प्रपा सहवोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युगज्मि ।
सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः ।
हते इहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु०
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकपातुम् ।
सुपर्ण यातुमुत गृध्रयातुं हृजदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र । ऋग्०
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । यजु०

पुत्र पिता के शुभ कर्म, शुभ आचार, शुभ व्यवहार का अनुकरण करें । पुत्र ऐसा कर्म करे जिससे माता उस पर प्रसन्न रहे । स्त्री तथा पति परस्पर मधुर और सत्य वाणी का परस्पर प्रयोग कर गृहस्थ की गाड़ी का भली प्रकार वहन करें ।

स्वार्थ में, लोभ में फंसकर भाई भाई से तथा बहन बहन से द्वेष न करें । सब भाई बहन एक दूसरे का आदर करें, उत्तम कर्म करें तथा उत्तम वाणी का प्रयोग करें । सब विद्वानों के समीप जाकर अपनी बुद्धि को पवित्र करें । परिवार में, समाज में सुख से रहने के लिये ऊंच नीच के भाव को समाप्त करें । सब को उत्तम भोजन मिले । ऐसा आचरण या व्यवहार न हो कि एक भूखा हो दूसरे के पास धन या अन्न के भण्डार भरे पड़े हों । सब हृदय से एक दूसरे का कल्याण करते हुए एक दूसरे के मन को, हृदय को जीतें और अपने वश में करें । हम सब मानव मित्रता का व्यवहार करें । किसी को भी अपना शत्रु न मानें । उल्लू जैसा अन्धकारमय और निन्दित मानव का जीवन न हो । भेड़ चाल की तरह न चलकर बुद्धि से काम लें । कुत्ते की तरह अपने भाइयों से और मित्रों से तो द्वेष न करें तथा अन्यों की चापलूसी न करें । कामी न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनें लोभ और अहङ्कार से दूर रहे। मानव मात्र एक दूसरे की निन्दा के श्रवण की इच्छा न करे। दूसरों के गुणों का ग्रहण करें, दोषदर्शी न बनें। हमारे नेत्र दूसरों को प्रेम और सौहार्द्र भावना से अवलोकन करें।

इसी प्रकार अन्य अनगिनत शिक्षाएं हैं। मन्त्र न लिखकर संक्षिप्त रूप में लिखी उन बातों का अवलोकन करें। वेदों में मानव जीवन को उपयोगी तथा व्यावहारिक बनाने के लिये जो शिक्षाएं दी हैं—

जुआरी की स्त्री दुःख पाती है अतः जुआ खेलना निन्दित व्यवहार या कर्म है। प्रातःकाल उठकर प्रतिदिन जीवन का कार्यक्रम बनाना चाहिये। जीवन में श्रद्धा का संचार करो। पति पत्नी का साथ जीवनपर्यन्त है। उत्तम जीवन बनाने के लिये प्रत्येक बालक को आचार्य के समीप जाकर उत्तम शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। उत्तम आचार्य ही उत्तम ब्रह्मचारी बना सकता है। संसार में उत्तम जन उत्पन्न करने के लिये आचार्य को सदा प्रयत्नशील रहना चाहिये। जब पृथ्वी और आकाश में आकर्षण होता है और कम्पन होता है तब कहीं न कहीं या तो नवीन द्वीप उत्पन्न होता है या कोई द्वीप नष्ट हो जाता है। प्रत्येक प्रकार के अन्न यज्ञ से उत्पन्न होते हैं। संसार में सभी एक से विद्वान् नहीं होते हैं। हल के द्वारा भूमि को जोत कर अन्न उत्पन्न किया जाता है। पशु धन से दूध तथा कृषि की जावे। उत्तम व्यापार से देश को समृद्ध किया जावे। रोगी होने पर उत्तम उत्तम औषधियां दी जावें। गाय आदि से दूध दही लिया जावे उससे मानवी सृष्टि का पालन पोषण होता है। अङ्क गणित तथा ज्योतिष के ज्ञान का होना आवश्यक है। वृष्टि कराने के लिये उपयोगी सामान इकट्ठा किया जावे। इस का ज्ञान तथा इनका व्यवहार या प्रयोग कैसे किया जावे यह सब वेदों में प्रतिपादित किया गया है।

उत्तम व्यवहार की शिक्षा के विषय में वेद कहता है—

उच्छ्वञ्चस्व नियम वर्धमातः। निकेतुना विश्वमत्रिणं दह।
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। कृधी न ऊर्ध्वाञ्चिरथाय जीवसे।
उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। जिर्वि विदथ मावदासि।
विश्वदानीं सुमनसः स्याम। पश्हैमनु सूर्यमुच्चरन्तम्।
जातो जायते सुदिनत्वे अन्हाम्। अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
वैश्वदेवीं वर्चसे आरभहवम्। उद्विंस्तमानान्त रिक्षं पृण।
पाप्मा हतो न सोमः। ऊर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम्।
वाचस्पतिः वाचं न स्वदतु। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किञ्च जगत्यां जगत्।
कुर्वन्नैव कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।
यद्वदामि मधुमद् तद् वदामि। अग्ने शर्धमहते सौभगाय।

पद वृद्धिको प्राप्त कर। बड़े स्थान को प्राप्त कर परन्तु जीवन में नम्रता से रह कर व्यवहार कर। नम्रता से ही मानव उन्नत होता है कठोरता से नहीं। मानवता रूपी ज्ञान से दानवता रूपी अज्ञान को दूर करो।

विचारक बन कर काम करो। संसार में दैवी वृत्तियों को उत्पन्न करो। जीवन में सफलता के लिये उन्नत जीवन बनाओ। हे पुरुष! तू नीचे की ओर निकृष्ट कर्म की ओर गमन न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा ऊंचा लक्ष्य बना कर आगे बढ़। संसार में जीत की अभिलाषा करके धर्मानुकूल व्यवहार करो। इस संसार में जिसको मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त है वही सदा प्रसन्न रहता है। जिस प्रकार उदय होता हुआ सूर्य शोभा प्राप्त करता है इसी प्रकार ऊंचे विचारों से उन्नत हुए पुरुष की शोभा बढ़ती है। जन्म उसी मनुष्य का सफल है जो कुदिनों को सुदिन बना सके। दुष्कर्मों से कुदिन तथा सुकृत्यों से सुदिन बनते हैं। संसार में सहनशील ही आगे बढ़ सकता है। सदा यह चिन्तन करे कि अच्छे मनुष्य समाज में उसकी गिनती हो सके। यदि संसार को, विश्व को, देश को, राष्ट्र को अच्छा बनाना चाहते हो तो स्वयं अच्छे बनकर संसार को उत्तम बना कर रहो। तुम्हारी विचारधारा उन्नत तथा समृद्ध हो। संसार से इतना प्रेम करो कि सारा ही संसार तुम्हारा बन जावे। पापाचार को हटाकर धर्माचार में प्रवृत्त हो। जिस किसी उत्तम काम को प्रारम्भ करो। वह आगे ही बढ़ता रहे। पीछे न हटो। मानव को जीवन इसीलिये प्राप्त हुआ है कि वह शुभ कर्म करता रहे।

जिसका जीवन स्वयं का उत्तम है वही दूसरों के जीवन को उत्तम बना सकता है। दान वही करता है जिसके पास धन सम्पत्ति हो अतः जीवन को उत्तम बनाने के लिये अपने जीवन को उन्नत करो। भगवान ने केवल मानव को ही व्यक्त वाणी दी है उसको मधुरता तथा सत्य से पूर्ण करके ही बोलो। जीवन में निश्चय करो कि तुम स्वयं भी श्रेष्ठ बनो तथा अन्य लोगों को भी श्रेष्ठ बना सको। यह विशाल संसार सर्वशक्तिमान् प्रभु से रचित है और उसी का है। उसने संसार के लिये इसे रचा है उसका अपना कोई स्वार्थ नहीं है। इसी प्रकार तुम भी संसार में त्याग-भावना से काम करके प्रसन्न रहो। सदा यह निश्चय करो कि काम करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। जो मनुष्य काम नहीं करता उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है। जिस देश के मनुष्य कर्मशील होते हैं वह देश सदा आगे बढ़ता रहता है। निकम्मे मनुष्य देश के शत्रु होते हैं। जब बोलो तब मीठा ही बोलो। कटु शब्द का प्रयोग करने वाला संसार में विष का प्रसार करता है इत्यादि।

ये बहुत संक्षेप में समुद्र के जल की बूंद के समान वेद की शिक्षा का, व्यवहार करने का उपाय बतलाया गया है। यदि सारे वेदों को आद्योपान्त पढ़ कर तदनुसार आचरण, व्यवहार किया जावे तो इस संसार में कोई भी दुःख न रहे। यह सारा विश्व स्वर्ग का स्थान हो जावे।

आज सारे विश्व ने वेद की शिक्षा, वेद की शिक्षा के अनुसार व्यवहार करना छोड़ दिया है। अतः सब ओर अशान्ति, भय, असन्तोष, आपत्ति, दुःख छाया हुआ है। जो संसार प्रभु ने मनुष्य को सुखी बनाने के लिये, उसके कर्मफल को भुगताने के लिये बनाया था। उसे लोगों ने अपनी भूल से नरक बना दिया है। ऐसे व्यक्ति फिर कहते हैं कि संसार में कुछ नहीं रहा। यह संसार दुःखों का घर है।

ऐसे लोगों से कोई पूछे कि प्रभु का बनाया हुआ यह संसार क्या दुःखमय हो सकता है? मैं कहता हूं कभी नहीं। इसे मानव ने स्वयं दूषित किया है। अतः आओ इस संसार को वेद की शिक्षा, वैदिक आचार, विचार, व्यवहार की ओर लावें जिससे सर्वत्र सुख की वर्षा हो।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

स्वाधीनता-संग्राम के परिप्रेक्ष्य में :-

गुरूकुल शिक्षा संस्थाएं

लेॱ :—श्री पंॱ सत्यप्रिय जी शास्त्री एम. ए. साहित्याचार्य
प्राचार्य :—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा)

□

भारत में अंग्रेज़ी राज की जड़ें सहस्राब्दियों तक दृढ़ मूल करने के कुटिल उद्देश्य से १८३६ में लार्ड मैकाले नामक एक अंग्रेज़ ने अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति प्रचलित करने की योजना तत्कालीन सरकार को प्रस्तुत की थी, उसके अपने शब्दों में जिसका उद्देश्य 'भारत में एक ऐसा वर्ग उत्पन्न करना है जोकि हाडमांस व रुधिर से भारतीय होते हुए भी आचार-विचार, रहन-सहन तथा दिल दिमाग से अंग्रेज हो[1]। युगद्रष्टा ऋषि दयानन्द सरस्वती ने इस घाती योजना को भांपकर ही अपने साहित्य तथा भाषणों के द्वारा भारत के भावी कल्याण के हेतु प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को जोरदार शब्दों में पुनः संचालित करने का प्रतिपादन किया, जिसको साकार रूप देने में उनके मानसपुत्र उनके बलिदान के सत्रह वर्ष पश्चात् सफल हुए। 'भारत में अंग्रेज़ी राज्य ने यदि लार्ड क्लाइव और मैकाले को जन्म दिया तो उनके मुकाबले में आर्य समाज ने ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द को जन्म दिया। लार्ड मैकाले द्वारा जो मायाजाल इस देश में फैलाया गया था उसको छिन्न भिन्न करने का प्रयत्न स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आरम्भ करके किया। गुरुकुल कांगड़ी ही शायद पहला शिक्षणालय था जो अंग्रेज़ी सरकार द्वारा संचालित शिक्षा पद्धति और नियन्त्रण से सर्वथा पृथक् रहकर मातृभाषा द्वारा बालकों को राष्ट्रीय शिक्षा देता था[2]। पंजाब पुलिस की रिपोर्टों में यह दर्ज है कि सन् १८९९ ईॱ में जब लाला मुंशीराम अमृतसर के पंडित रामभजदत्त के साथ गुजरात सियालकोट, और गुजरांवाला का दौरा करते हुए (गुरुकुल की स्थापना के लिये) धनसंग्रह कर रहे थे, तब उन्होंने सरकार की निन्दा शरारत भरे शब्दों में अन्य बातों के साथ यह कहते हुए की थी कि सिपाही कितने मूर्ख हैं जो सतरह-सतरह अठारह-अठारह रुपया पर भरती होकर अपना शिर कटवाते हैं, गुरुकुल में शिक्षित होने के बाद ऐसे आदमी सरकार को नहीं मिलेंगे[3]। यह थी राष्ट्रीयता की मूलभावना जो उस समय उक्त संस्था की स्थापना में प्रमुख कार्य कर रही थी, इसी कारण यह संस्था उस युग की सर्व प्रथम राष्ट्रीय संस्था के रूप में प्रकट हुई, इसके पश्चात् तो न केवल आर्य समाज की ही ओर से बल्कि इसकी देखादेखी अन्य विचार धारावाले समुदायों की ओर से भी राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की बाढ़ सी आ गयी थी, आर्य समाज की इस आरम्भिक राष्ट्रीय शिक्षा संस्था की निम्नलिखित विशेषतायें थी।

१. लार्ड मैकाले का पत्नी के नाम पत्र—राष्ट्रवादी दयानन्द से सत्यदेव विद्यालंकार पृष्ठ ६३,
२. पृॱ १३३—३. पूर्वोक्त पुस्तक पृष्ठ ९५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. अध्यापकों में एक भी अंग्रेज अध्यापक नहीं था, २. किसी भी सरकारी विश्वविद्यालय की परीक्षायें न दिलाकर अपनी ही परीक्षायें होती थी, ३. किसी भी सरकारी विश्वविद्यालय के निर्धारित पाठ्यक्रम की पुस्तकें अपने पाठ्यक्रम में न रखकर अपनी पाठ्य पुस्तकें तैयार कर अपने ही प्रैस में छापते थे, ४. इतिहास, भूगोल, विज्ञान, अर्थ शास्त्रादि समस्त आधुनिक विषय मातृभाषा हिन्दी में ही पढ़ाये जाते थे, ५, सरकार या विश्वविद्यालय से अनुदान के रूप में एक फूटी कौड़ी भी न ली जाती थी, ६. उपाधिवितरण, पुरस्कारवितरण एवं समारोहों की अध्यक्षता के लिये कभी किसी सरकारी अधिकारी को नहीं बुलाया जाता था। ७. अपने उत्सवों के प्रबन्ध के लिये पुलिस या स्वयं सेवक के रूप में सरकार से कभी सहयोग न लेकर स्वयं ही सारा प्रबन्ध किया जाता था, ८. वहां के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सदा विशुद्ध खादी के ही वस्त्र पहनते थे, ९. गुरुकुल संसार की नज़रों से दूर एकान्त बीहड़ जंगलों में था, १०. वहां छात्रों को तैरना, घुड़सवारी, लाठी, भाला, निशानेबाजी तथा युद्धविद्या का अभ्यास कराया जाता था। उक्त सभी कारणों से यह संस्था एक लम्बे अरसे तक विदेशी सरकार की आंखों का कांटा बनी रही। सरकारी गुप्तचरों के चक्कर लगभग प्रतिदिन लगते, उनकी डायरियों में गुरुकुल का नाम काली सूची में सर्वोपरि था। एक गुप्तचर ने अपनी डायरी में लिखा कि 'गुरुकुल के उत्सव पर लगभग एक लाख जनसमुदाय जुटता है, धन की अपील होने पर स्त्रियां अपने जेवर तक उतार कर दे देतीं हैं। गुरुकुल में पढ़े इन संन्यासियों (स्नातकों) का राजनीति से क्या सम्बन्ध होगा यह विचारणीय है।' उसी प्रसंग में आचार्य रामदेव जी द्वारा लिखित एक रिपोर्ट की भूमिका का वर्णन करते हुए लिखा था कि यहां दी जाने वाली शिक्षा सर्वांश में राष्ट्रीय है, गुरुकुल में इतिहास इस ढंग से पढाया जाता है कि उससे ब्रह्मचारियों में देशभक्ति की भावना उद्दीप्त होती है, उनमें उपदेश और आचरण दोनों से देश के लिये उत्कट प्रेम पैदा किया जाता है[1]' हिन्दी के विख्यात उपन्यास लेखक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी स्व० यशपाल जी जो इस संस्था के छात्र रहे हैं, अपने संस्मरणों में लिखते हैं 'प्रथम विश्वयुद्ध के समय एक सायंकाल को भोजन के बाद हम भ्रमण कर रहे थे, विश्वयुद्ध विषयक चर्चा छिड़ने पर मैंने अपने एक साथी के सामने अंग्रेजों की पराजय तथा जर्मनों की विजय की कामना प्रकट की, इतने में पीछे से आचार्य रामदेव जी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखकर मुझे दुबारा अपना विचार प्रकट करने को कहा, मेरे कह चुकने पर बोले कि जर्मन लोग तो इनसे भी अधिक कठोर हैं, अतः वे तो अधिक दमन करेंगें, उनके अत्याचार करने पर क्रान्ति होगी, मेरे ऐसा कहने पर आचार्य जी कहने लगे कि औरंगजेब तथा नादिरशाह के अत्याचारों से तो क्रान्ति हुई नहीं, अतः दमन से क्रान्ति का उत्पन्न होना आवश्यक नहीं, अतः तुम अभी और अध्ययन करो, आगे लेखक लिखता है कि आचार्य जी ने समझाया, परन्तु अंग्रेज-विरोधी भावना के लिये मुझे धमकाया नहीं, उस काल में इस प्रकार की बातचीत यदि लाहौर की किसी सरकारी शिक्षासंस्था में कोई विद्यार्थी करता तो परिणाम काफी सख्त हो सकता था, आगे आप लिखते हैं कि इस कम उम्र में हम विदेशी शासन के विरुद्ध किस प्रकार की राजनैतिक बातें किया करते थे, यह इससे स्पष्ट है[2]। इसी प्रसंग में आपने लिखा कि वहां इतिहास राष्ट्रीय

---

१. राष्ट्रवादी दयानन्द ले० सत्यदेवविद्यालंकार पृष्ठ ९६

२. सिंहावलोकन भाग १ पृष्ठ ४३-४४, ९६ :—राष्ट्रवादी दयानन्द पृष्ठ ९७, २ :—आर्यसमाज का इतिहास भाग २ पृष्ठ २७, ३ :— मेरे पिता से इन्द्र विद्यावाचस्पति पृष्ठ १३१, ४ : - आर्य-प्रतिनिधि सभा यू० पी० का इतिहास पृष्ठ १२८=मेरे पिता पृष्ठ १३४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिकोण से पढ़ाया जाता था, जिससे अंग्रेजी राज्य विरोधी भावना हमें मिलती थी, कलकत्ते के ब्लैक होल की घटना को वहां अंग्रेजों के कूटनीतिक षड्यन्त्र के रूप में माना जाता था, बंगाल के सेठ उत्तमचन्द के साथ धोखे, नन्द कुमार को फांसी, चेतराम के साथ अन्याय एवं वारेन हेस्टिंग्ज के अत्याचारों को सही-सही बताने का साहस गुरुकुल में किया जाता था, एक गुप्तचर ने अपनी डायरी में लिखा था 'गुरुकुल की दीवारों पर ऐसे चित्र लगे हैं जिनमें अंग्रेजी राज्य से पहले के भारत की अवस्था और अंग्रेजों के कलकत्ते में आने के दिनों की अवस्था दिखाई गई है। १८५७ के विद्रोह के दिनों की घटनाओं के चित्र भी लगाये गये हैं। बिजनौर के जिला मैजिस्ट्रेट मि. एफ. फोर्ड ने जौन आफ आर्क का वह बड़ा चित्र भी गुरुकुल में लगा हुआ देखा था। जिसमें वह अंग्रेजों के विरुद्ध सेना का संचालन कर रहे हैं, गुरुकुल को सरकार विद्रोहियों का विश्वस्त अड्डा तथा शस्त्रास्त्रों का भण्डार मानती थी। इसी सन्देह में एक बार बिजनौर के कलक्टर ने पुलिस के दलबल के साथ गुरुकुल का घेरा डालकर तलाशी लेने का उपक्रम भी किया था। इस संस्था में समय-समय पर देशभक्त क्रान्तिकारी लोग आकर विश्राम किया करते थे, जहां से वे भावी योजनायें बनाया करते थे। भारत आने से पूर्व गांधी जी के आश्रम के छात्र इसी संस्था में कई मास तक रहे थे। इस संस्था के छात्र जब एक बार सरस्वती यात्रा पर धर्मशाला गये हुए थे तब भ्रमणकाल में दो अंग्रजों ने उनके सामने अपने घोड़े अड़ाकर कहा कि हमें सलाम करो, छात्रों ने बड़ीं ही निर्भीकता से उत्तर दिया कि हम क्यों करें, तब वे कोरी धमकी देते हुए चलते बने। ३. जब १९१९ में घायल पंजाब को सान्त्वना देने को स्वा० श्रद्धानन्द जी ने पंजाब सेवा समिति बनाई तो इस संस्था के छात्रों का एक जत्था सेवा के लिये वहां गया था। १९३० के सत्याग्रह में इस संस्था के छात्र तथा आचार्य रामदेव जी जेलों के अन्दर गये। इसी के साथ लगती संस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर जिसके आचार्य स्व० पंडित नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ अपनी देशभक्ति के लिये भारतविख्यात रहे हैं, प्रत्येक आन्दोलन में अग्रणी रहे हैं। १९४२ की क्रान्ति में तो यहां के अनेक छात्र एवं अध्यापक भूमिगत होकर कार्य करते थे। १९४६ में यहां आजाद हिन्द सेना का एक अधिकारी आया था जिसका जोरदार अभिनन्दन किया गया था, तथा छात्रों के सामने उसने अपनी देशभक्ति पूर्ण कहानी प्रस्तुत की थी। इस संस्था का एक छात्र आगे चलकर बड़ा प्रसिद्ध क्रान्तिकारी बना, जिसको फांसी का दण्ड दिया गया था। गुरुकुल की इसी कड़ी में श्री अलगुराय शास्त्री तथा पंडित शिवदयाल जी द्वारा स्थापित गुरुकुल डौरली है, इसके आचार्य लेखराम जी जेल की यातनाओं के कारण ही दम तोड़ गये थे। सभी आन्दोलनों में उसके कार्यकर्त्ता भाग लेते रहे। १९४२ में तो इसके सारे ही कार्यकर्त्ताओं को विद्रोही कहकर जेल में डाल दिया था तथा गुरुकुल पर पुलिस की घेराबन्दी करदी थी क्योंकि यह अनेक देशभक्त क्रान्तिकारियों के शिर छिपाने का विश्वस्त अड्डा था। अतः इसे अवैध घोषित कर दिया गया था। ४. इसी पुनीत परम्परा में गुरुकुल घरौण्डा (हरियाणा) का नाम भी प्रमुख है, इसके संस्थापक श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती स्वयं ही एक प्रखर स्वाधीनता सेनानी रहे हैं। जिन्होंने १९२१ तथा ३१ के आन्दोलनों में जेलयात्रायें करते हुए अपार कष्ट भुगते हैं, जेलों में इनको देश की आजादी के लिये मलमूत्र के टोकरे तक ढोने पड़े हैं। एक बार तो इनको देशभक्ति के अपराध में अंग्रेज ड्राईवर ने रेलगाड़ी से घनघोर जंगल में ही गान्धी की गाड़ी में ही बैठो' कहकर उतार दिया था, क्योंकि ये गान्धी की जय बोल रहे थे। १९४२ के आन्दोलन में पूज्य स्वामी जी ने अपने युवा छात्रों के साथ समीपस्थ रेलवेलाइन उखाड़ने का साहसिक प्रयास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। इस विद्रोह से क्रुद्ध हो करनाल के तत्कालीन जिलाधीश ने संस्था को अवैध करार देकर जब्त करने का प्रोग्राम बनाया था। परन्तु हितैषी सज्जनों के द्वारा उक्त कार्य से होने वाले अनिष्टकारक परिणामों की आशंका व्यक्त करने पर मजबूरन उनको यह प्रोग्राम स्थागित करना पड़ा। इन्हीं देशभक्त आर्य संस्थाओं में गुरुकुल गुजरानवाला (अब पाकिस्तान में) का कार्य भी गौरवपूर्ण है। १९१९ में पंजाब में जब मार्शल ला के समय विद्रोह हुआ तब इसके छात्रों ने समीपस्थ रेलवेलाइन पर पत्थरों का ढेर लगाकर बाधा खड़ी करदी थी। तब यहां के छात्रों एवं कर्मचारियों को निर्दयी पुलिस ने हण्टरों से पीटना, तपती लुओं में घसीटना आदि भयंकर यातनाएं दी थी। इसी प्रकार गुरुकुल रावलपिण्डी जिसके आचार्य स्व० स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती थे, ने अपने गुरुकुल में समय-समय पर विभिन्न देशभक्तों को न केवल आश्रम दिया प्रत्युत उनको सब प्रकार का सहयोग भी दिया। प्रसिद्ध देश भक्त आर्य विद्वान स्व० पंडित जगदीशचन्द जी शास्त्री दर्शनाचार्य को फरारी की हालत में एक लम्बे समय तक आर्थिक सहयोग दिया तथा उनके परिवार का सदा ही ध्यान रखा, इनके अनेक देशभक्तों के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध थे जो कि यदाकदा इनके पास आते रहते थे। इसी प्रकार १९४२ की क्रान्ति के समय गुरुकुल झज्जर (रोहतक) का पुलिस ने देशभक्तों का केन्द्र एवं शस्त्रास्त्रों का भण्डार होने के सम्बन्ध में कई मास तक घेरा डाले रखा। इसके आचार्य श्री भगवान् देव जी (वर्तमान स्वामी ओमानन्द सरस्वती) वारण्ट जारी होने के कारण एक लम्बे अरसे तक भूमिगत होकर कार्य करते रहे थे, हमारी इन्हीं संस्थाओं में गुरुकुल घटकेश्वर (हैदराबाद) का अपना निराला ही स्थान है। वहां दक्षिणभारत के ही नहीं प्रत्युत देशभक्त के कान्तिकारी अपने घर के समान ही शरण पाते थे। वहां की जनता को निजाम तथा रजाकारों के साम्प्रदायिकतापूर्ण गुलामी के पंजे से मुक्त करने में इस संस्था का एक गौरवपूर्ण स्थान है, इस कारण निजाम इसको न केवल सशंक नजरों से ही देखता था बल्कि उसके लिये यह एक शिर दर्द पहेली थी। हमारी इन्हीं संस्थाओं में दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय लाहौर तो स्वाधीनता संग्राम का एक अध्याय ही है, जब १९३० के आन्दोलन में इसके आचार्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी को पंजाब की जत्थाबन्दी का काम सौंपा गया तो उस चतुर मस्तिष्क ने यह काम इतने सुगुप्त ढंग से किया कि सरकारी गुप्तचरविभाग झुंझला उठा, विद्यालय की एक-एक चीज की तलाशी ली गई। परन्तु स्वामी जी ने सारा ही पत्रव्यवहार एवं रिकार्ड उससे पूर्व ही सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया था। आखिर उन्होंने स्वामी जी को गिरफ्तार करने में ही अपनी बहादुरी समझी, उस आन्दोलन में इसके छात्रों के कई जत्थों ने भाग लिया था। इस प्रसंग में हम अलीगढ़ के वैदिक आश्रम को कैसे भुला सकते हैं, जो कि 'शनैः शनैः राजद्रोहियों का अड्डा हो गया। १९०७ या १९०८ में कई पुरुष जेल भेज दिये गये, छात्रावास के विद्यार्थियों को सरकारी स्कूल में स्थान न मिला। अंग्रेज हैडमास्टर ने बहुत ही सख्ती शुरू की, आश्रम के प्रवन्ध को आघात पहुंचा[1]। आर्य समाज की ये शिक्षा संस्थाएं देशभक्त क्रान्तिकारियों के लिये कितनी विश्वस्त थीं पाठक निम्न घटना से ही अनुमान कर सकते हैं। प्रसिद्ध देशभक्त कान्तिकारी वीरवर भगतसिंह के एक सक्रिय सहयोगी तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री हंसराज वायरलैस अपनी फरारी की हालत में एक बार श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल में पहुंचे, रात्रि विताने के बाद जब प्रातः आप वहां से चलने लगे तब वहां के अधिकारियों ने आपसे कहां कि आपका परिचय क्या है? तब आपने केवलमात्र इतनी ही कहा कि आप इतना ही समझ

१. जीवन चन्द्र ले० गंगाप्रसादोपाध्याय पृष्ठ ६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिये कि कोई देशभक्त क्रान्तिकारी फरार अवस्था में घूम रहा है। उनके यह कहने पर कि कोई फरार व्यक्ति अपने सम्बन्ध में इतनी स्पष्टता से नहीं कह सकता। आपने कहा कि मैं आर्य समाज की उस देशभक्त संस्था में खड़ा हूं जहां कि यदि मैं अपना पूर्ण परिचय भी दूँ तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी ओर से न केवल किसी विपत्ति की असम्भावना है बल्कि आती हुई किसी प्रकार की विपत्ति से सब प्रकार की सुरक्षा होने की पूर्ण सम्भावना एवं विश्वास है ऐसा कहकर आपने अपना पूर्ण परिचय दिया, यह लेखक को उक्त संस्था के एक कर्मचारी ने बहुत समय पूर्व स्वयं ही बताया था।

हमारी इन संस्थाओं में आगरा का विख्यात मुसाफिर महाविद्यालय अपना अनूठा ही स्थान रखता है। वहां का सारा ही वातावरण राष्ट्रीय भावों से ओतप्रोत था, इसी विद्यालय का एक छात्र अभिलाषचन्द्र जो कि प्रसिद्ध क्रान्तिकारी काकोरी केस के अमरहूतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल के अभिन्न सखा रोशनसिंह जो कि स्वयं आर्य समाजी थे का भाई था, ने इधर-उधर से प्राप्त जानकारी के आधार पर बारूदादि विस्फोटक पदार्थ एकत्रित कर बम का निर्माण किया तथा उसी विद्यालय की सीमा में उसने उसका परीक्षण भी कर डाला, जिसके परिणामस्वरूप गुप्तचर विभाग कई मास तक उक्त संस्था का घेरा, डाले पड़ा रहा और सबकी सब प्रकार से तलाशी ली गई, यह गांधी युग से पहले रासबिहारी युग की बात है, इसी विद्यालय के अध्यापक श्री प० महेश प्रसाद जी मौलवी आलिमफाजिल प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर जेल यात्रायें करते रहे। अन्त में १९२१ के आन्दोलन में इसके प्रत्येक घटक के सर्वात्मना भाग लेने पर यह संस्था सदा-सदा के लिये ही बन्द हो गई थी।

पाठकगण हमने इस लेख में संक्षेप में गुरुकुल तथा तत्समपद्धति पर आधारित शिक्षा संस्थाओं के द्वारा भारतीय स्वाधीनता संग्राम में किये गये महत्त्वपूर्ण योगदान का संक्षेप में उल्लेख किया है, यह सम्पूर्ण वृत्तान्त तो अपने आप में एक विस्तृतग्रन्थ की अपेक्षा रखता है, इसी से पाठकगण सम्पूर्ण आर्य जगत के द्वारा किये तद्विषयक प्रयास, एवं योगदान का अनुमान कर सकते हैं, परन्तु हमें दुःख आज के उन तथाकथित इतिहासकारों पर है जो कि पूर्वाग्रह, पक्षपात, एवं विद्वेष के वशीभूत होकर इन गौरवपूर्ण कार्यों का मूल्यांकन तथा अपने ग्रन्थों में वर्णन करने से कतराते हैं। परमात्मा उनको साहस, सद्विवेक तथा सत्यग्रहण का आत्मिक बल दे।

⊙

कौन मित्र अरे मैत्री कैसी,
यह एक बड़ी छलना है।
सच्चा साथी इस जग में सच,
अति दुर्लभ ही मिलना है।।
—वी० पी० 'कुलवन्त'

⊙

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

क्यों ? और कैसे ?

एल० आर० सैनी

पुस्तकालयाध्यक्ष डी० ए० वी० कालिज, नन्योला (अम्बाला)

□

आज के युग का मानव ऐसे कगार पर खड़ा है कि उसे अपना जीवनोपार्जन करने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उसके सामने कहीं बीमारी का प्रकोप है तो कहीं महायुद्ध का बिगुल बजने जा रहा है। कहीं, भ्रष्टाचार, चोर बाजारी और झूठ है तो कहीं विदेशी आक्रमण हो रहे हैं। कहीं राजनीतिक हलचल है, तो कहीं गृह युद्ध है। इन सब बातों का कोई तो कारण होगा ही ?

उत्तर मिलता है कि आज का मानव चरित्रहीन हो चुका है। और यह हीनता आर्य रूपी तत्त्वों की कमी की द्योतक है। मनुष्य अपनी अज्ञानता के कारण सत्य को सत्य और झूठ को झूठ पहचानने में धोखा खा जाता है। वह अपने रास्ते से पथ भ्रष्ट हो चुका है। इसका कारण उसमें उन सद्गुणों का अभाव है जो एक आर्य में होने चाहिएं। आर्य शब्द का शाब्दिक अर्थ है श्रेष्ठ। और एक श्रेष्ठ व्यक्ति बनने के लिये आर्यत्व के सभी तत्त्व युक्त होना आवश्यक हैं। एक आर्य का दुर्गुणों से दूर का भी सम्बन्ध नहीं होता। दुनिया के अनेक विकारों ने मानव को पशु बनाकर रख दिया है। जिस प्रकार एक पशु मनन नहीं करता अर्थात् ज्यादा सोचता नहीं ठीक उसी प्रकार आजकल कोई भी मनुष्य अनुचित कार्य करने से पहले मनन नहीं करता अर्थात उसमें दूरदर्शिता नहीं। उसे विनम्र होकर मनन करना चाहिए। वेद के अनुसार

'मनुर्भव'। तू मनन करने वाला मनुष्य बन।

वेद के अनुसार ही—

"उद्यांन ते पुरुष न अवयान्।'

इसके अनुसार हे मानस तू यहां पुरुषार्थ करने के लिए उत्पन्न हुआ है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में भगवान ने कहा है कि मनुष्य के लिये मैंने चारों दिशायें खुली छोड़ी हुई हैं। एक आर्य का पार्थिव भोगों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। एक आर्य अपनी मर्यादाओं का पालन करता है। उसमें त्याग की भावना कूट-कूट कर भरी हुई होती है। उसे स्वादिष्ट भोजन, चमकीले वस्त्र और धन की लालसा किसी भी कीमत पर अपने पथ से भ्रष्ट नहीं कर सकती। उसके दिल में विश्व-व्यापी प्रेम होता है। एक आर्य सदा यही चाहता है कि पहले राष्ट्र तथा फिर विश्व एक आर्य के रूप में चमके जिससे संसार की सभी बुराइयों को समूल उखाड़ दिया जाये। वह सदा असत्य को छोड़कर सत्य को धारण करने के पक्ष में रहता है। दूसरों के प्रति उसके मन में प्रेम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहानुभूति होती है। और उसके कल्याण के लिए सदा तत्पर रहता है। उसके मन में जीओ और जीने दो की भावना सुलग रही होती है। वह दूसरे मनुष्यों के दिल में भी उपरोक्त भावना को प्रज्वलित करना चाहता है।

आर्य वही है जिसका अपनी ज्ञान इन्द्रियों और कर्म इन्द्रियों पर पूरी तरह से आधिपत्य हो। उसका यह काबू ठीक उसी प्रकार से होता है जिस प्रकार ईश्वर का विश्व भर पर। वेद के उपदेश ही उसके अनुगामी होते हैं। वही मनुष्य आर्य कहलाने का हक रखता है जो सत्यवादी हो, दूरदर्शी हो और अपने आप पर संयम रखता हुआ उन्नति के पथ पर चलता हुआ दूसरों को भी उसी पथ पर चलने के लिए प्रेरित करता हैं। यही लक्षण एक आर्य के द्योतक हैं। और इन्हीं सद्गुणों के प्रसार से हम विश्व को भी आर्य बना सकते हैं। विश्व को आर्य बनाकर ही हम महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कर सकते हैं—कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

⊙

मेरी भावना

श्री रामनाथ सहगल
मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।

चिरकाल से मेरे मन में कई एक विचार उत्पन्न हो रहे थे, परन्तु उनकी पूर्ति के लिए मैं विवश था। एक दम मन में आता था कि आर्यवर्त को किस प्रकार बदल दूँ। किस प्रकार इस वर्तमान उथल-पुथल को परिवर्तित कर सकूँ। अभी तक मैं अपने मन की भावनाओं को कार्यान्वित रूप में नहीं ला सकता। यह एक लालसा है जो मैं मन ही मन में पाले बैठा हूं। मैं नवयुवक हूं और यह चाहता हूं कि आर्य समाज की रूढ़िवादी भावनाओं को बदल कर तत्कालीन वातावरण में लाकर एक ऐसा युग बना सकूँ जिस में फिर से राम राज्य का स्वप्न साकार हो सके। यह तभी सम्भव है जब कि हम आर्य एक होकर महर्षि दयानन्द की शिक्षा को अपनाएं और उनको अपने अन्दर ढालने का भरसक प्रयास करें अन्यथा हम नवयुवकों की भावनाएं अन्दर ही अन्दर जल भुन कर रह जायेंगी।

मेरी यह मनोकामना है कि आर्य युवकों को आर्य समाज के कार्यक्षेत्र में काम करने के लिए अधिक से अधिक अवसर दिये जाएं। उन पर विश्वास करते हुए उनको कर्त्तव्य सौंपे जाएं। और उनके कन्धों पर उत्तरदायित्व डाला जाए। जितना कार्य वे ठीक करें उसके लिए उन्हें बड़ी मिठास से प्रेम पूर्वक समझा दिया जाये। आर्य समाज को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए और अपनी युवा शक्ति को अच्छे-अच्छे कार्य करने में संजोना चाहिए। इससे न केवल समाज को लाभ होगा बल्कि युवकों में अनुशासन प्रियता भी बढ़ेगी।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धामूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द

प्रा० भद्रसेन साधु आश्रम, होशियारपुर

□

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन इस बात का जीता जागता उदाहरण है, कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चय करके किसी उद्देश्य के लिए जुटजाए, तो वह अवश्य सफल होता है, आर्य समाज के इतिहास में मुंशीराम (श्रद्धानन्द) जी की सर्वप्रथम चर्चा तव आती है जब महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी प्रचार यात्रा करते हुए बरेली (उ० प्र०) पधारे। महर्षि की सभाओं की देखभाल का काम सरकार की ओर से मुंशीराम जी के पिता श्री नानक चन्द जी को सौंपा गया था। उनके पिता एक पुलिस अधिकारी के रूप में उन दिनों बरेली में कार्य करते थे। वे प्रसंगवश महर्षि के विचार सुन कर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने पुत्र को महर्षि का परिचय दिया और उनके विचार सुनने के लिए प्रेरित किया। युवक मुंशीराम एक साधु के मुख से तर्कपूर्ण, प्रगतिशील विचार सुन कर बहुत आश्चर्य चकित हुआ और ईश्वर की सत्ता के सम्बन्ध में महर्षि से कुछ प्रश्न भी पूछे।

मुंशीराम जी ने वकील बन कर अपनी जन्मभूमि तलवन के निकट जालन्धर में कार्य आरम्भ किया। सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय और उनकी पत्नी शिवदेवी की श्रद्धा तथा लगन ने मुंशीराम के जीवन में परिवर्तन ला दिया। उन्होंने हर प्रकार के व्यसन को छोड़ कर अपने जीवन को हर प्रकार से पवित्र बनाना प्रारम्भ कर दिया। यहां तक की झूठे मुकद्दमे बिल्कुल लेने बन्द कर दिए, चाहे इस से कमाई कम हो। एक बार उनके मुंशी ने एक मुकद्दमा उन की पूर्व स्वीकृति के बिना न्यायालय में प्रस्तुत किया, मुंशीराम जी ने उस व्यक्ति को पहचानते ही न्यायाधीश के सामने ही अभियोग प्रस्तुत करने का निषेध कर दिया। चन्द्रमा की कलाओं की तरह समाज सुधार और लोकोपकार के कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया और तब एक दिन पूर्णमासी के चन्द्रवत् अग्रणी के रूप में सर्वत्र दिखाई दिए।

ईसाइयों के स्कूल में पढ़ने वाली अपनी पुत्री के मुख से 'ईसा तेरा कृष्ण कन्हैया' सदृश बोल और ईसाई स्कूल की भारतीय संस्कृति विरोधी गतिविधियों को देख कर कन्या विद्यालय बनाने का निश्चय किया। जब कि उन दिनों कन्याओं को पढ़ाना तो दूर इस सम्बन्ध में सोचना और बात करना पाप माना जाता था, तब श्री देवराज जी के साथ मिल कर कन्या विद्यालय का सूत्रपात किया। जो आज जालन्धर में कन्या महाविद्यालय के नाम से वटवृक्ष के रूप में अमर है। इसके लिए केवल अपनों का विरोध ही नहीं बहिष्कार भी सहर्ष सहा।

निर्मूल, अन्यायपूर्ण, घृणामिश्र जात-पात के रोग को दूर करने के लिए केवल मौखिक प्रचार ही नहीं किया। जिन दिनों ऐसा करना तो दूर अपितु बात करना भी एक साहसिक पग माना जाता था, तब अपनी पुत्री का तथाकथित जाति से बाहर विवाह रचाकर एक क्रियात्मक रूप प्रस्तुत किया। अपने हर व्यवहार में जात-पात की निर्मूल भावना को कहीं भी स्थान नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी श्रद्धा और क्रियाशीलता से सामाजिक कार्यों में सक्रिय भाग लेते हुए जल्दी ही विशाल पंजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने और पूर्ण निष्ठा से इस का कार्य किया। महर्षि की भावना के अनुरूप गुरुकुल के सम्बन्ध में सभा की कार्यकारिणी में जब विचार आया, तो महात्मा मुंशीराम जी ने इस असम्भव समझी जाने वाली योजना को मूर्त्तरूप देने के लिए प्रतिज्ञा की। जब तक निश्चित धनराशि एकत्रित नहीं हो गई, तब तक घर में प्रवेश नहीं किया। संसार के सामने एक आश्चर्य के समान गुरुकुल की स्थापना की और सर्वप्रथम अपने दोनों पुत्रों को वहां प्रविष्ट किया। यह भारत का प्रथम महाविद्यालय था जहां हर विषय उच्चस्तर में हिन्दी माध्यम से पढ़ाना प्रारम्भ किया गया। यदा-कदा लोगों द्वारा स्नातकों में अपने पुत्रों की व्यवस्थित जीविका विषयक उठाई जाने वाली शंकाओं के निवारण और अपनी दान की अपीलों को प्रथम स्वय चरितार्थ करने के लिए अपनी जालन्धर की कोठी तथा प्रैस आदि भी दान में दे दिए।

गुरुकुल कांगड़ी का इतिहास इस का साक्षी है कि एक सच्चे आचार्य की तरह उन्होंने विद्यार्थियों के चरित्र, बुद्धि और विद्या का विकास कर (आचारं ग्राहयति, आचिनोति अर्थान् आचिनोति बुद्धिमिति वा निरुक्त १, २) भारत को योग्य स्नातक दिए। अपने अन्तेःवासियों को केवल आचार्य का स्नेह ही नहीं अपितु माता-पिता जैसा प्यार भी दिया। (तं मन्यते पितरं मातरं च तस्मै न द्रुदृयते निरुक्त १, ६)। बाद में उन जैसे सच्चे आचार्य न मिलने के कारण भी गुरुकुल योजना पूर्ण सफल न हो सकी। अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रीयता और भारतीयता का पाठ पढ़ा कर सच्चे नागरिक बनाया, अंग्रेज सरकार ने इस दृष्टि से कई बार गुरुकुल की जांच की। गुरुकुल जीवन को समाजवाद का एक सच्चा रूप दिया और उसे क्रियात्मक सिद्ध कर दिखाया। अपने विद्यार्थियों से परिश्रम करा कर अफ्रीका के आन्दोलन के लिए गान्धी जी के पास धन भेजा, जिस से गान्धी जी बहुत प्रभावित हुए। भारत लौटने पर वे गुरुकुल कांगड़ी आए, वहां की जीवन पद्धति से प्रभावित होकर उसके आधार पर अपने आश्रम की स्थापना की। महात्मा मुंशीराम जी ने ही तब बापू गांधी को महात्मा गान्धी की उपाधि से विभूषित किया।

महात्मा मुंशीराम जी श्रद्धा की साक्षात् मूर्ति थे। महर्षि के विचार को स्वीकार करने के वाद उस का अपने जीवन में पूर्ण रूप से हर पग पर तथा हर क्षेत्र में पालन किया। कहां वकालत और कहां स्वाध्याय के बल पर अपने शास्त्रों का गहरा अध्ययन और ज्ञान। उन के 'धर्मोपदेश' जहां जीवन के साकार रूप थे वहां उन की स्वाध्याय प्राप्त योग्यता को भी स्पष्ट करते हैं। स्वामी जी ने विविध भाषाओं में छोटी-बड़ी ४२ के लगभग पुस्तकें लिखी हैं। हर सत्य को अपना कर अपने को सर्वथा श्रद्धा की मूर्ति के रूप में चरितार्थ किया, तभी तो उन का संन्यासाश्रम का 'श्रद्धानन्द' नाम सर्वथा सत्य सिद्ध होता है।

जब १९१९ में भारतीय स्वाधीनता संग्राम की जलियां वाला बाग वाली अमर घटना घटी और अंग्रेजों के क्रूर दमन चक्र से सब त्रस्त थे। तब उस महान् वीर ने अमृतसर में ही कांग्रेस का सफल अधिवेशन करके स्वाधीनता संग्राम की ज्योति को और भी अधिक प्रज्वलित किया। भारतीय कांग्रेस के इतिहास में प्रथम बार स्वागताध्यक्ष के रूप में अपना भाषण हिन्दी भाषा में देकर जहां जनता के दिल की बात को जनता की भाषा में रखकर इस आन्दोलन को सारी जनता का आन्दोलन बनाया, वहाँ हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में उस का सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान दिया। इतना ही नहीं अपितु घाटा सह कर भी उर्दू के अपने पत्र 'सद् धर्म प्रचारक' को हिन्दी माध्यम में बदल दिया।

१९१९ मार्च के अन्तिम दिनों भारत के अन्य स्थानों की तरह दिल्ली में जो अभूतपूर्व जलूस निकाला उस में नेतृत्व के साथ गोरों के सिपाहियों की संगीनों के सामने छाती तान कर अपनी निर्भीकता, वास्तविक नेतृत्व के साथ अपने राष्ट्रीय रूप को भी प्रस्तुत किया। जामा मस्जिद में उन दिनों दिया गया उन का भाषण उन के गौरव को आज भी उजागर करता है। 'गुरु के बाग' के आन्दोलन में भाग लेकर अपनी निष्पक्षता और अन्याय के प्रति टक्कर लेने की अदम्य भावना को चरितार्थ किया। एकबार डाकू ने गुरुकुल को लूटने की पहले ही चेतावनी दे दी, पर वह निर्भीक संन्यासी अकेला ही उस समय गुरुकुल की परिक्रमा करता रहा।

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में पग-पग पर देखते है कि उन्होंने महर्षि की भावनाओं को मूर्तरूप देने तथा गुरु के गुणों का अनुकरण करने में एक शिष्य के रूप में श्रद्धा का सत्य अर्थ चरितार्थ किया। उनका महान् बलिदान इस का प्रमाण है कि संकीर्णता की भावनाएँ क्या-क्या परिणाम उपस्थित करती हैं क्योंकि 'स्वार्थी दोष न पश्यति'। कहां तो दिल्ली के उस जलूस में बिना भेदभाव के मुसलमानों ने भाग लिया। जामामस्जिद में उन का श्रद्धा से प्रवचन सुना। और कहां २३ दिसम्बर १९२६ को हत्या का षड्यन्त्र।

श्रद्धामूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी का सारा जीवन श्रद्धा का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है। हर व्यक्ति के लिए महान् बनने की प्रेरणा का स्रोत है। हम उन से प्रेरणा प्राप्त कर के ही उन के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत कर सकते हैं।

⊙

चाह

सुरेन्द्र सलूजा, ६१६/७, दयानन्द मार्ग, पानीपत–१३२ १०३

मधु प्रेम शशि दो मदिर उछाह
उर्मिल रोम - रोम गाये
भर 'स्व' सौरभ प्राण लाये
सागर संगीत सरसाये
रहस्य रास मृदु छाये यौवन।
आओ 'प्रिय' मानस सर राह
मिटे विरह तमस्विनरोष
पायें सरस महक व्याकोष

रहें सदा सुषुप्ति में होश
शुभ विभामय हो जीवन मधुवन।
नित् नव सतोरी दो नव चाह
विकल पद्मिनी उजास प्रिय
सुशीतल शिव जीवन जीये
परम पावन का हास लिए
अरुणिम् मधुरिम् हो मेरा मरण।

⊙

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी दयानन्द और आर्य समाज

श्री दरबारी लाल उप-प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

जब किसी अधः पतित देश में किसी सहृदय बलशाली आत्मा का आविर्भाव होता है तो वह स्वभाव से ही अपने देश-सुधार और उद्धार के महाव्रत का व्रती बन जाता है। इसका प्रमाण हमें संसार के धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक सुधारों से मिलता है। भगवान बुद्ध, शंकर, यीशु मसीह प्रभृति लोगों के जीवन चरित्र हमारी इस कल्पना के साक्षी हैं।

इस प्रकार के सुधारकों के सामने दो प्रकार की जनता होती है : (१) नमनशील, ग्रहणशील अथवा परिवर्तनशील, (२) हठी, दुराग्रही और स्वार्थी। पहली श्रेणी के लोगों में कुछ तो नितान्त विचारहीन मूर्ख धनिकों, मुखियों और पुरोहित मण्डल के पीछे चलने वाले होते हैं जो अपने आचार-विचार, व्यवहार के गुण-दोषों को न समझते हैं न समझने की कभी चेष्टा ही करते हैं और समझाने पर भी बहुत देर में समझते हैं। इनका सीधा जवाब होता है 'कंकर स्नानं, सोहम स्नानं'। अब कंकर का संकल्प शुद्ध और पवित्र है या नहीं, इस बात की अनुगामियों को चिन्ता नहीं। कुछ लोग इस श्रेणी में भी समझदार होते हैं, प्राचीन प्रथाओं का अनुकरण करते हुए भी इनमें बात को सुनने, समझने और विचार करने की इच्छा और शक्ति होती है। ये न तो नितान्त विचारशील होते हैं, न दुराग्रही।

दूसरी दुराग्रही श्रेणी वालों के हम दो विभाग करते हैं। पहले तो वह जो अपनी भूलों को समझते हुए भी वैयक्तिक स्वार्थों के कारण सत्य कहने के लिए तैयार नहीं होते। दूसरे लोग अत्यन्त दुराग्रही वे होते हैं जो नई बातों से ऐसे भड़कते हैं जैसे रंगीन चीथड़ों से बैल। इनको कितना ही साफ रास्ता, पक्की सड़क, परिमार्जित भूमि क्यों न मिले, ये यथासाध्य अपनी पुरानी कीचड़ भरी काँटोयुक्त गंदी पगडंडी को न छोड़ेंगे, क्योंकि रूढ़िप्रियता ने उनके अन्तःकरण की सूक्ष्म विवेकशक्ति को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

भारत की गिरी हुई आर्य जाति से १९ वीं शताब्दी के दूसरे चरण के आरम्भ में महर्षि दयानन्द का सामना हुआ। उस समय स्वामी जी को हिन्दू जाति ने किस दृष्टि से देखा और उसकी चिकित्सा में स्वामी जी को कितना कष्ट हुआ, इसका अनुमान करना उन लोगों के लिए बड़ी बात नहीं है जो इतिहास को जानते हैं और गम्भीरता से उसका मनन करते हैं। पहली श्रेणी के विचारशील परिवर्तनशीलों से ही सदा सुधार का आरम्भ होता है और उन्हीं से इस देशभक्त सुधारक के काम का श्रीगणेश हुआ। इस श्रेणी ने अपनी भूलों को समझा और भविष्य में स्वामी जी के अभियान को पूरा करने का बीड़ा उठाया। बाल-विवाह के निषेध, विधवा विवाह की छूट और शुद्धि के तत्वों का भारत में प्रचार करने का परम पवित्र काम आर्य समाज के जिम्मे आया। इसने धर्मान्तरित और जरूरतमंद हिन्दू बालकों और बालिकाओं के लिए पाठशालाएं, अनाथालय और विधवा आश्रम खोले। अपना संगठन करके हिन्दू भाइयों के सामने संगठित होकर रहने का प्रत्यक्ष उदाहरण रखा। इससे विचार-शक्तिहीन जनता को समय-समय पर वास्तविकता के ज्ञान के साथ आर्य समाज के प्रशंसक होने का अवसर आया। यही कारण है कि समाज की उत्तरोत्तर सब प्रकार की उन्नति में और वृद्धि होती गई और होती जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन दुराग्रही समुदाय के भाइयों ने हर प्रकार से सामाजिक और धार्मिक सुधारों के काम में बाधाएं डाली। तो भी सुख की बात है कि हमारे विद्वान पौराणिक पुरोहितों और उनके हठी अनुगामियों की भी आखें समय ने खोल दीं। हम देखते हैं कि स्वामी दयानन्द के सदुपदेशों को यदि सब लोग यथासमय मान लेते, तो जो बुरे दिन आज हम देख रहे हैं, वे न देखने पड़ते। जिन भाइयों ने शुद्धि का विरोध धर्म के नाम पर किया था वे ही आज उसी को हिन्दू सभ्यता की रक्षा के नाम पर जीवन-मरण का प्रश्न समझ कर उसका समर्थन कर रहे हैं।

इस संसार में बहुत से लोग कानों के भरोसे जीते हैं, लेकिन बुद्धिमान लोग अपनी आंखों का विश्वास अधिक करते हैं, और यदि आँखों की भूल हो तो उसे विवेकशक्ति से पूरा करते हैं, अथवा करने को तैयार रहते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द ने १०५ वर्ष पहले भारत की भावी दशा को देखा और उसके सुधार का उपाय सोच कर हमें बताया। जब अनिष्ट का दुष्परिणाम हमारी आंखों के सामने आया तब हमें कुछ होश हुआ। अब भी यदि सब हिन्दू (आर्य) स्वामी दयानन्द के जीवन का, उनके उपदेश का शुद्ध बुद्धि से मनन करें, तो बहुत कुछ अपना बचाव कर सकते हैं।

क्या भारत का हिन्दू पुरोहित मण्डल सारी बातों को देख कर भी न देखने का बहाना करता रहेगा और हमारे धर्म याजक गण भी इसी तरह की अधर्म नीति का अवलम्बन करते चले जाएंगे ? मुझे तो आशा है कि बहुत जल्दी हिन्दू सभ्यता की रक्षा के लिए हमारे भाई आर्य समाज की सेवा को अपनाएंगे, उसका हाथ बटाएंगे और संसार को दिखा देंगे कि आपस में थोड़े बहुत सिद्धान्त-सम्बन्धी मतभेदों के होते हुए भी सभी ओंकार उपासक एक हैं। महर्षि का स्वप्न एक दिन पूरा होकर रहेगा। सचाई की आकर्षण शक्ति इतनी जबरदस्त है जिसका कोई प्रतिकार नहीं कर सकता। भारत से एक दिन वे बुराइयां दूर हो जाएंगी, जिन्हें हम दूर करना चाहते थे। लेकिन समय रहते हम यदि उन्हें दूर करने के बदले उनका विरोध करके बिलम्ब करेंगे, तो उसके लिए हमको ही पछताना होगा। ऐसा न हो, हमारी आगे आने वाली सन्तान हमें बुरे शब्दों में याद करे, केवल इसलिए कि हमने एक सर्वश्रेष्ठ सुधारक की शिक्षाओं की अवहेलना की।

दूसरी श्रेणी के दुराग्रही, हठी और स्वार्थ–परायण लोगों में से दुराग्रह और हठ तो अब जाता रहा, पर इसकी जगह सन्देह ने ले ली। इसलिए स्वामी जी के उद्देश्य की सिद्धि की आशा और सुदृढ़ हो गई है। हां स्वार्थ ऐसी चीज है, जो जल्दी ही मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ती, इसलिए मनुष्य को सावधान रहना चाहिए।

कुछ लोग धर्म के रहस्यों को न जानते हुए भी एक सम्प्रदाय को खुश करने के अभिप्राय से धर्म के शिक्षक बन जाते हैं और धर्म ग्रन्थों के बिना पढ़े ही पण्डित बन कर प्रलाप करने लगते हैं। ऐसे लोगों की दुर्नीति से हम तभी बच सकते हैं, जब परम पदारूढ़ महर्षि स्वामी दयानन्द की तरह अपने लिए अपनी बाहरी और भीतरी आंखों को काम में लावें। आर्य समाज अन्य धर्मों की भाँति अन्धविश्वास नहीं सिखाता और न किसी एक व्यक्ति का अन्धा अनुयायी होना सिखाता है। यह पुकार कर कहता है—

'सत्य को ग्रहण करने और असत्य के परित्याग के लिए सदा तत्पर रहो।'

All the religions say believe in God. But the new religion says believe in yourself.

—विवेकानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112746

गुरुकुल शिक्षा

डॉ० निगम शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

⊙

एतरेय ब्राह्मण में कहा है (५-३-१) कि 'वाग् वे समुद्रानवै वाक् क्षयिते।' वाणी ही समान मुद्रा-युक्त समुद्र है जो कभी क्षीण नहीं होती। उस वाग्-ब्रह्म को प्राप्त करने का व्रत भी ब्रह्म कहलाता है। व्रत पूर्वक जो वाग्-ब्रह्म को धारण करता है, वही ब्रह्मचारी है। 'अयंत इध्म आत्मा' अग्नि की उपासना में निरत समिधा (इन्धन) जब अग्नि में सर्वात्मा को समर्पित हो जाती है तब उसमें से कलंक रूपी धुआं निकल जाता है। अब उसमें इन्धनाभिमान नहीं रहता है। और वह अग्नि का रूप धारण कर लेती है। ब्रह्मचारी भी कुशल-पथ पर अवतरित होकर जब अग्नि स्वरूप गुरु का सन्निधान कर लेता है। तब उसमें से अपना अभिमान कलंक निकल जाता है। वह स्वतः अग्नि रूप गुरु के आसन की परम्परा का संरक्षक और भविष्य का प्रेरक-तत्त्व बन जाता है।

अंगिश के व्याख्याकार ऋषियों का यही कथन है :— 'अंगिशः कस्माद् अगारा भवति' अंगिश वह है जो अंगारा है जिसमें से कलंक का धुआं नहीं उठता और न जिस पर आलस की राख ही जमी है। हमारे आदि ऋषि पूर्वजों ने उस परम्परा की रक्षा गुरुकुल-शिक्षा के माध्यम से की है।

गुरुकुल शिक्षा का परम प्रयोजन यही है कि छात्र अपने त्रिविध ताप से दूर हट कर साक्षात्कार द्वारा ब्रह्मानन्द की प्राप्ति करे। आध्यात्मिक लाभ के समान अन्य लाभ नहीं है। लेकिन अभ्युदय तो चाहिए ही पर मानवता को कुचल कर नहीं। यदि कहीं मानव को सफलता नहीं मिलती तो उसे अपने कर्त्तव्य में, कर्म में अथवा साधन में त्रुटि परम्परा की जिज्ञासा करनी चाहिए। सब से बड़ा भार मानव को मानव बनकर रहने में है। सफलता तो मिल ही जाती है। प्रशंसनीय सफलता वह है जिसे क्रोध-मोह-लोभ आदि से ऊपर उठकर मानव प्राप्त करता है। काम-क्रोध-लोभ आदि मानव के उच्छृंखल शत्रु हैं। इससे भावना दूषित होती है। और दूषित मानव ही व्यक्तित्व के उच्च शिखर से धराशायी हो जाता है।

हमारे ऋषियों की तीन प्रकार की शृंखला थी। एक वे ऋषि थे जो कि आश्रम में नियताहार विहार के साथ ज्ञान-विज्ञान में तप करते हुए सर्वांगीण उन्नति की शिक्षा-व्यवस्था करते थे। वसिष्ठ, विश्वामित्र, जाबालि, कामदेव आदि इसी कोटि के गुरुकुल व्यवस्था में पूज्याचार्य थे। जिनके आश्रम में रहकर छात्र अभ्युदय के साथ ही ब्रह्मानन्द को प्राप्त करते थे। ब्रह्म का निराकरण सबसे अधिक खेद और दुःख का कारण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय स्वतन्त्रता विहान में ऋषियों ने पुनः वह शैक्षणिक आनन्द देना चाहा। योगी अरविन्द ने योग को केन्द्र मानकर, गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने ललित कलाओं को जीवित मानकर, महामना मालवीय जी ने इतिहास संस्कृति को अनुध्यानित करके अपने शैक्षणिक संस्थान बनाए। उन्हीं दिनों या उनसे कुछ-कुछ दिन पहले ऋषि दयानन्द के अनुदेशों में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिमगिरि के उपहार में मन्दाकिनी के पावन तट पर ब्रह्मचर्य को और वेद-निष्ठा को मूलरूप में प्रतिष्ठित कर के गुरुकुल की नींव डाली।

मानस कलिका का विकास देने के लिए अरविन्द आश्रम योग प्रक्रिया की ओर उन्मुख था। गुरुदेव का शान्ति निकेतन ललित कलाओं पर अधिक आधारित था। मालवीय जी का प्रयास भारत की ऐतिहासिक प्रखरता में निखर रहा था।

उन दिनों गुरुकुल त्याग, तपस्या, साधना तथा वैदुष्य की अपरिमित ज्योति से ज्योतित था। बड़े-बड़े नेता, गुरु, आचार्य, सिद्ध तथा क्रान्ति के अग्रदूत गुरुकुल को शरण स्थान मानकर अपने को पावन और प्रसन्न करते थे। दक्षिण अफ्रीका में गान्धी जी का आन्दोलन चल रहा था। यहां के छात्रों ने शहर के बांध पर मजदूरी करके १५००) रु० गांधी जी को भेज दिये। गांधी जी ने बड़ी सराहना की और गुरुकुल कांगड़ी पर लेख भी लिखे। और वक्तव्य भी दिये जिन्हें विश्व के समाचार पत्रों ने अच्छी टिप्पणी के साथ छाप कर गुरुकुल कांगड़ी को विश्वविश्रुत स्थान दिया। गान्धी जी ने भारत में आकर गुरुकुल में दौरा किया। जहां उन्हें महातमा गांधी के नाम से पुकारा गया। यह 'महात्मा' नाम आगे चलकर उनके नाम के साथ सदा के लिये जुड़ गया।

प्रवासी भारतीय गुरुकुल के स्नातकों ने अपना जीवन आर्यसमाज के लिए दान किया है। अमीचन्द जी को फिजी में अब भी बड़े आदर से स्मरण किया जाता हैं। पंडित सत्यपाल जी ने अफ्रीका में कार्य किया है। इसी प्रकार साहित्य में स्नातकों का योगदान पूर्ण है। पंडित जयचन्द्र जी, चन्द्रगुप्त जी, क्षितीश जी उच्च कोटि के ववता के रूप में जाने जाते हैं।

गुरुकुल प्रणाली की विशेषता के रूप में प्रभात वेला में निरालस्य होकर नित्य क्रियाओं से निवृत होकर, शारीरिक व्यायाम, अध्ययन, चिन्तन नियतसाहार विहार आदि हैं। इसकी प्रत्येक कक्षा के लिये एक अध्यापक तथा एक अधिष्ठाता की व्यवस्था है। अध्यापक कक्षा को समयानुसार पढ़ाते हैं। तथा शिष्यों पर शेष समय में अधिष्ठाता जी का निरीक्षण रहता है। आश्रम व्यवस्था में आश्रमाध्यक्ष छात्रों के मध्य ही सदा रहते हैं।

स्वातन्त्रय प्रहरी के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने छात्रों को विद्वान तथा निर्भय बनाने में अपना अपूर्व योगदान दिया। उस समय लार्ड हार्डिंग तथा चेम्सफोर्ड और प्रधान मन्त्री सरीखे व्यक्ति गुरुकुल को देखने आते थे। एक बार तो प्रधान मन्त्री ने प्रभावित होकर यह कहा था कि ''यदि ईसा मसीह को एक बार फिर देखना हैं तो मैं कहूंगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का दर्शन करें।'

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रारम्भ में गुरुकुल के पुत्रों के नाम एक सन्देश दिया था कि भारत माता के लिये धन और तन की ही नहीं अपितु मन के समर्पण की आवश्यकता है। उसके लिये ब्रह्मचर्य रूपी पूर्णता की आवश्यकता है। क्या तुमने उस तप का अनुष्ठान किया है। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं तो आज ही शुद्ध हृदय पूर्वक आरम्भ कर दें। तुम्हारे पुराने आचार्य को माता की सेवा में बलि देने के लिये तपस्वी पुत्रों की आवश्यकता है। क्या कोई आगे बढ़ेगा ? जगत्-पिता तुम पर तेज की वर्षा करें।

आचार्यों का छात्रों के लिये इससे बढ़कर क्या आदेश या अनुज्ञा हो सकती है। माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्या' वेद के इस प्रेरणा और कल्याणदायी वचन को ही हृदय में रखकर 'बन्देमातरम' का उद्गान उद्घोषित हुआ। जिन्होंने भूमि की वन्दना की है वे पृथ्वी को केवल मिट्टी नहीं मानते थे। उन्होंने इस मृतिका में जन्मभिमाननी शक्ति को देखा है। इसी हेतु, इस चिन्मयी देवता के अभिनन्दन में कोटि-कोटि प्राण व्याकुल हो उठे।

तपस्या, त्याग, कर्त्तव्य भावना और सेवा केवल छात्र के ही नाम अंकित नहीं होनी चाहिए। कुल में रहने वाले प्रत्येक कुलवासी में यह कर्त्तव्य भावना होनी चाहिए। श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण में वह मूल प्रेरणा होनी चाहिए। जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य तथा आचार का आधार बन जाए।

हर सेवक से शिक्षा लेने मे प्रवीण महात्मा गान्धी के अभिनन्दन में सर्वप्रथम गुरुकुल में कहा गया था—"मातृभूमि के वस्त्र फटे हुए हैं, कृशता घेर रही है, शरीर कांटों से छिदा हुआ है, रुधिर बह रहा है, ऐसे समय में वह आपकी ओर स्नेह और आशा से देख रही है। आप ही दूसरी जातियों में उसका मुख उज्जवल करने वाले हैं। आप स्वाधीनता के दिव्य मंत्र में दीक्षित है। जातीयता की नौका के कर्णधार हैं। देश भक्तों के सर्वस्व हैं, और इस कुल के पूज्य अतिथि हैं।"

आज गुरुकुल आत्मा प्रत्येक भारतीय के लिये वही मार्मिक अभिनन्दन पुनः प्रस्तुत कर रही है। यह भारतीय देखें कि आज से पैंसठ वर्ष पूर्व महात्मा गान्धी के अभिनन्दन में जो कुछ यहां गुरुकुल में कहा गया था उसकी उपादेयता क्या आज भी उतनी ही नहीं है ? इस शुभ सन्देश को साकार करने के लिये हमें एक बार पुनः-पुनः पीछे की ओर देखना होगा। और भारतीय संस्कृति की देदीप्यमान रेखा में प्रकाशित गुरुकुल को जीवनदान की दीक्षा देनी होगी।

शिक्षा को अध्यात्म से दूर नहीं रखा जा सकता। अध्यात्म के निखरने के बाद ही मानव के ब्राह्यकरण तथा अन्तःकरण में शुचिता आती है। शुचिता का अर्थ केवल पावनता ही नहीं है अपितु शुचिता और पावनता का यह भी अर्थ है कि मानव राग द्वेष से विवर्षित रहे। संसार के सारे कलह राग-द्वेष के कारण ही उद्भूत होते हैं। बड़े-बड़े युद्ध जातीय कलह, गृह कलह के मूल में यही राग या द्वेष कारण बनता है। जिससे सौन्दर्य; सजावट का विनाश, विध्वंस हो वही कलह है।

देश के विश्वविद्यालयों में गुरु शिष्य सम्बन्धित समस्यायें उठ खड़ी होती हैं। उनके समाधान के लिये गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। जो छात्र पढ़ना नहीं चाहते उनको यांत्रिक शिक्षा से युक्त कर के उधर व्याप्त कर देना चाहिए जिससे कि वे कुछ ऐच्छिक काम सीख कर आत्म निर्भर बनें। जो छात्र प्रतिभा सम्पन्न हैं तथा गवेषण कार्य से आत्मोत्थान की ओर उन्मुख हैं। उनको उनकी प्रतिभा तथा रुचि के अनुरूप विद्या विनय सम्पन्न

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-महिमा

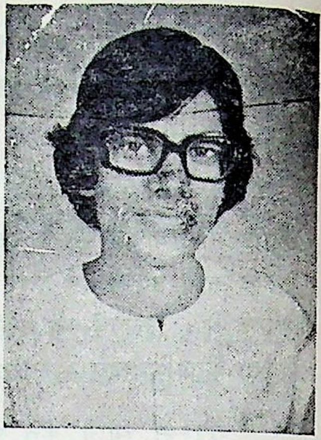

प्रो० रामनिवास 'मानव',
पूर्व-परीक्षा, प्रशिक्षण-केन्द्र, अम्बाला शहर।

लिखते हुए यह बात मुझ को
हैं हो रहा अति हर्ष।

मरा नहीं है, जीवित अब भी
है वृद्ध भारत वर्ष।

देख रहा प्रत्यक्ष यहाँ पर
ऋषि-आत्मोत्कर्ष मैं।

धरा पर रहकर भी कर रहा
पावन स्वर्ग-स्पर्श मैं।

धन्य हैं अधिवासी यहाँ के,
ईर्ष्या-योग्य सौभाग्य।

विभव-भोग से चिर बढ़कर हैं
इनका विमल वैराग्य।

होता सदा जहाँ प्राणों का
उद्वेलित सिन्धु शान्त।

पुण्य भूमि है धन्य-धन्य यह,
तप-भू यह एकान्त।

(पृष्ठ २३ का शेष)

बनाने में सहयोग मिलना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय शान्ति केन्द्र बनकर शिक्षा और छात्र का अभिभावक बने और उनके उन्नयन में अपनी अनुशासित, कोमल पर दृढ़ भूमिका का निर्वाह करें। इसके लिये शिक्षा एक प्रेरणा स्रोत बन सकती है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये गुरुकुल शिक्षा ही सर्वोतम उपाय है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

इस भारत में उच्च भावनाओं से प्रेरित बहुत से गुरुकुल बालकों तथा कन्याओं की प्रगति में योगदान कर रहे हैं। अच्छा होता कि संविधान, पाठ्यक्रम, प्रेरक संस्था अनुशासन आदि की दृष्टि से सभी गुरुकुल सहसम्बद्ध होकर कार्य करते। इससे विश्वविद्यालय स्तर पर सभी छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन होता तथा लौकिक अभ्युदय में भी उसकी प्रगति का योगदान होता। हम कोई प्रभुता प्राप्त परिषद् द्वारा पिछले और आज के सन्दर्भ में कार्य और प्रभाव का मूल्यांकन तो कर सकते हैं। और भविष्य के लिये एक सुन्दर दिशा देकर भावी गुरुकुलों के लिए निर्देशक तत्त्व निर्धारित कर सकते हैं। इससे गुरुकुलों में नवचेतना और चमक में प्रखरता आ सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द के सन्देश को प्रसारित करने में गुरुकुलों का योगदान

ऋषिराम, एम० ए० लाडवा

⊙

महर्षि दयानन्द ने भारतीय संस्कृति के पुनः जागरण के लिए सराहनीय कार्य किया। उसके आगे महर्षि के सन्देश को फैलाने के लिए गुरुकुलों का योगदान भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। गुरुकुलों में उस शिक्षा पद्धति को लागू किया गया जिसके अनुसार हम प्राचीन भारत की एक झलक देख सकते हैं। जो कार्य गुरुकुलों ने किया उसका परिणाम आज हमारे समक्ष है। कितने ही देशों में गुरुकुलों के स्नातक पहुंच चुके हैं जो कि आर्य समाज की ओर से धर्म प्रचार में लगे हुए हैं। कितने ही देशों में आर्य समाज की स्थापना हो चुकी है। अनेक विद्यार्थी विदेशों से गुरुकुलों में विद्या अध्ययन करने के लिए आते हैं।

महर्षि दयानन्द की यह तीव्र इच्छा थी कि जाति प्रथा देश से समाप्त हो और वर्ण व्यवस्था लागू हो। सचमुच गुरुकुलों ने इस बात को अपनाया। प्रवेश के समय इस प्रकार की किसी शर्त को नहीं रखा जिससे जातिवाद फैले। इस बात का प्रभाव दूसरी संस्थाओं पर भी पड़ा उन्होंने भी इस प्रकार की शर्तों को तोड़ दिया। सबको एक समान सुविधाएं दी जाने लगी। पाश्चात्य सभ्यता के कुप्रभाव के कारण देश विषय वासना की चक्की में पिस रहा था। शारीरिक उन्नति की ओर कोई ध्यान नहीं था उस समय गुरुकुलों में प्रातः सांय व्यायाम करने का आवश्यक नियम बनाया गया। व्यायाम प्रदर्शन होने लगे जिसके कारण दूसरे नौजवानों में ऐसी भावना जागृत हुई और बुराईयों की ओर से उनका ध्यान हटा।

गुरुकुल के स्नातकों ने आर्य समाज के प्रचारार्थ जो साहित्य लिखा वो भी विस्मरणीय नहीं है। संस्कृत भाषा जो कि अंग्रेजी भाषा के मुकाबले में दब चुकी थी उसको पुनः जीवित करने में गुरुकुलों ने पूरा बल लगा दिया। सचमुच गुरुकुलों ने उस दुरबीन का काम दिया जिसके द्वारा हम भारतीय संस्कृति को झांकने में समर्थ हुए। महर्षि ने चाहा था कि बाह्य रूप से देश का वातावरण शुद्ध हो, वायु मण्डल शुद्ध हो उन्होंने एक बार अपने स्वप्न की चर्चा की और कहा कि "मैं चारों तरह एक अग्नि देखता हूं।" उस अग्नि का साक्षात्कार उनकी मृत्यु के पश्चात् आज हमारे सामने आया। यह सब किस कारण ऐसा हुआ। गुरुकुलों में नित्य प्रति यज्ञ होते रहे। गुरुकुलों के स्नातक पुरोहितों के रूप में नियुक्त हुए। यज्ञ से होने वाले लाभों पर भाषण देते रहे जिससे समाज के लोगों के अन्दर यज्ञ करने की भावना जागृत हुई।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

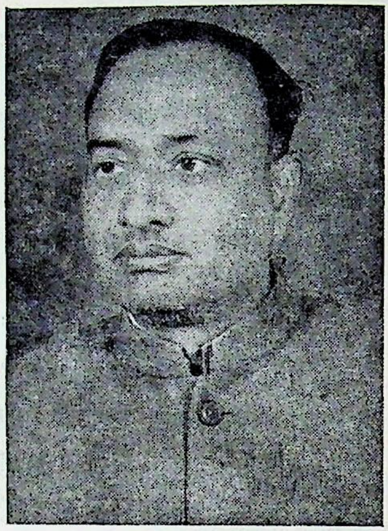

भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व और गुरुकुल

□

डॉ० छविनाथ त्रिपाठी, रीडर
हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

डा0 छविनाथ त्रिपाठी प्राचीन संस्कृत के आचार्यों की परम्परा में आने वाले आधुनिक आचार्य हैं। आप वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित हैं। ज्योतिष, उपनिषद्, दर्शन, व्याकरण में आपकी अत्यन्त सूक्ष्म पैठ हैं। इसके साथ-साथ डॉ0 त्रिपाठी हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान भी हैं। डॉ0 त्रिपाठी का सांस्कृतिक वेश मुझे प्राचीन आर्य पुरुष की कल्पना के अनुरूप लगता हैं। अतः मैंने बड़े आग्रह से उनसे लेख लिया। भारतीय संस्कृति के प्रेमी डॉ0 त्रिपाठी के लेख की गरिमा को समझेंगे।

—सम्पादक

भारतीय संस्कृति अनादि काल से चली आती हुई उस आध्यात्मिक चेतना की एक सरिता है जो अपनी निरन्तरता में अखण्ड और अनवरुद्ध है। अनेक प्राचीन संस्कृतियाँ या तो खण्डित और छिन्न-भिन्न हो गयी अन्यथा सर्वथा विलुप्त हो गयीं। भारतीय संस्कृति ही एक ऐसी जीवन्त संस्कृति है, जो काल के अनेक थपेड़ों को झेलकर भी विश्वशान्ति का सन्देश देने में सक्षम बनी हुई है। इस जीवन्तता के पीछे उसकी वह आध्यात्म भावना है जो मानव जाति के प्रारम्भ से आरम्भ हुई और इसकी समाप्ति तक चलती रहेगी। इसलिए भारतीय संस्कृति को आध्यात्म प्रधान कहा जाता है।

भारत एक विशाल देश है जिसमें विविध वर्णों के लोग रहते हैं। उनके खान-पान, वेश-भूषा, रीति-रिवाज और भाषा में अनेक भेद उपलब्ध हो जाते हैं। ये भेद ऊपरी और सभ्यता मूलक हैं। किन्तु चेतना की अन्तःसरिता काश्मीर से कन्या कुमारी तक और द्वारिका से पुरी तक सभी को एक समान आप्लावित करती रही है निश्चय ही भारतीय संस्कृति को समझने के लिए आध्यात्मिक चेतना के कुछ विशिष्ट गुणों को ही आधार बनाना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन, कला तथा ज्ञान-विज्ञान के चैतन्यमूलक विकास में ही सांस्कृतिक विकास के स्तर दिखाई पड़ते हैं। यदि इन क्षेत्रों का क्रमिक अवलोकन किया जाये तो उन सूत्रों को पकड़ा जा सकता है।

हमारी दर्शन परम्परा ने विचार स्वातन्त्र्य को जन्म दिया और चिन्तन प्रवाह को उन्मुक्त रखने के लिए तर्क वितर्क या वाद द्वार सत्य के अन्वेषण की ओर प्रवृत रही। यहाँ चार्वाक जैसे चिन्तक भी रहे जिन्होंने भौतिक स्थूल आकार को ही सत्य माना। कपिल मुनि रहे जिन्होंने भौतिक द्रव्यों के विश्लेषण द्वारा सृष्टि का रहस्य ढूंढने का प्रयत्न किया और बादरायण व्यास जैसे चिन्तक भी रहे जिन्होंने मानव शरीर में विद्यमान सूक्ष्मतम ईश्वर के चैतन्य स्वरूप 'आत्मानं विद्धि' पर बल दिया। कालान्तर में क्षणवादी बौद्ध चिन्तक भी आये। अतिवादी अहिंसक जैन चिन्तकों ने भी अपनी विचार सरिता प्रवाहित की। यह क्रम वैदिक युग से लेकर स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द और अरविन्द तक अखण्ड रूप में विद्यमान है। स्वयं वैदिक ऋचायें भी परम आध्यात्मिक सत्ता के अन्वेषण में जड़ से ऊपर उठकर सूक्ष्म चेतना की ओर अग्रसर होने का सकेत करती हैं। 'अन्न ही ब्रह्म है', 'प्राण ही ब्रह्म है', 'मन ही ब्रह्म है' :— ये वैदिक तथ्य चिन्तन के विविध सोपानों को स्पष्ट करते हैं। दर्शन की इस बहु आयामी चिन्तन परम्परा ने भारतीय संस्कृति को कुछ विशिष्ट तत्त्व प्रदान किए। चिन्तन की स्वतन्त्रता, विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, दूसरों के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनने की धारणा, उनके प्रति सहनशील बनने की आचरण-प्रक्रिया देकर भारतीय संस्कृति एक ऐसी उदार संस्कृति के रूप में अभिव्यक्त हुई, जिसके समान उदारता विश्व की किसी अन्य संस्कृति में नहीं मिलती।

चिन्तन के क्षेत्र में ही अनेकान्तवादी दृष्टि का विकास हुआ, जिसने पूर्ण सत्य की उपलब्धि के लिए एकांगी और समन्वयशील दोनों ही पद्धतियों को प्रश्रय दिया। समन्वयशीलता ने एकांगी दृष्टिकोण को भी कटु, कठोर और रूढ़ नहीं रहने दिया। इस समन्वयशीलता का ही यह परिणाम हुआ कि बाहर से आने वाली अनेक दार्शनिक या चिन्तन सम्बन्धी विचार-धरायें सहायक नदियों की भाँति इस भारतीय संस्कृति के महा प्रवाह में विलीन हो गयी। आत्मसात् करने की क्षमता और समन्वय की इस विशिष्ट प्रवृत्ति के कारण भारतीय संस्कृति उत्तरोत्तर प्रबल होती गयी। जो लोग भारतीय संस्कृति को मिश्रित संस्कृति का नाम देते हैं वे सम्भवतः मुख्य और सहायक नदियों के संगम के उपरान्त बहने वाले अग्रिम प्रवाह को समझ ही नहीं पाते। यवन, हूण, शक, यूची, मुसलमान और इसाई संस्कृतियों के अनेक तत्त्व या चिन्तन सरिता आकर भारतीय संस्कृति को और अधिक वेग युक्त बनाने में योग देने वाली तो सिद्ध हुई किन्तु भारतीय संस्कृति की मूल चेतना को उनके उद्दाम प्रवाह को अपने प्रवाह में समेट लेने में समर्थ नहीं हुई।

जिस सभ्यता और आचरण की प्रक्रिया ने इस देश को सर्वाधिक आन्दोलेत करने का प्रयास किया वह अंग्रेजों के आगमन के बाद योरूप की भौतिक सभ्यता और जड़वादी वैज्ञानिक संस्कृति थी, किन्तु भारतीय संस्कृति के मानवतावादी तत्त्व जड़ आन्दोलनों से विक्षुब्ध होकर भी उन्हें आत्मसात् करने में लगे हुये हैं। आत्मसात करने की इस प्रक्रिया को विश्व के व्यापक धरातल पर देखना होगा। राष्ट्रीय सीमाओं से आबद्ध चिन्तन के स्तर को पंचशील के सिद्धातों के अनुसार सह अस्तित्त्व में परिणत करने का कार्य हमारी संस्कृति के मूलभूत तत्त्वों को आधार बनाकर ही किया जा रहा है। इसके मूल में 'सर्वे ते सुखिनः सन्तु' की वैदिक धारणा ही कार्य कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आणविक युग की भौतिक विनाश क्षमता से त्रस्त विश्व को आध्यात्म की ओर प्रेरित कर विश्व-शान्ति का महत्त्वपूर्ण कार्य करने का भार भी आज भारतीय संस्कृति को ही उठाना है, क्योंकि उसमें ही वे गुण विद्यमान हैं जो विश्व को मानवता की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

स्वतन्त्रता, भौतिक विभेदों के बावजूद आध्यात्मिकता या मानवमात्र की समता, सत्यान्वेषण के लिए विचार स्वातन्त्र्या, अनेकान्तवादी दृष्टि, समन्वयशीलता, सहिष्णुता, आचरण की पवित्रता के अतिरिक्त प्रेम, करुणा, क्षमाशीलता, संयम, धैर्य, अक्रोध, अहिंसा और 'तेन त्यक्तेन भुँजींथा' जैसे मानवता के उदात्ततम गुणों से सम्पन्न भारतीय संस्कृति आज वह सब कुछ देने में समर्थ है जिसकी विश्व आकांक्षा करता है या जो उसका लक्ष्य है। चिन्तन के अतिरिक्त, कला और साहित्य के क्षेत्र में जिन उदात्ततम गुणों की प्रतिष्ठा होती है, वे सांस्कृतिक चेतना के उक्त गुणों से ही अनुप्राणित होते हैं।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक इस प्रकार की सुगठित की गयी है कि किताबी ज्ञान के अतिरिक्त मानवता के उक्त गुणों को जागृत करने में समर्थ नहीं हो पाती। भारतीय संस्कृति से तो उनका परिचय नाम मात्र को भी नहीं होता। पाणिनि, कपिल और कणाद का तो वे नाम भी नहीं जानते। परीक्षा पास करने के लिए इसकी आवश्यकता भी नहीं है। साल भर की पढ़ाई का परीक्षण तीन घण्टे में सम्पन्न हो जाता है। नकल, छुरेबाजी और अन्य अनेक प्रकार के हेर-फेर द्वारा परीक्षा उत्तीर्ण कर लेना ही आज के विद्यार्थी का लक्ष्य है। ज्ञान को किस सीमा तक वह आत्मसात कर सका है या आचरण में उतार सका है यह परीक्षण का विषय ही नहीं बन पाता। वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की न तो जिज्ञासा तुष्टि कर सकती है और न ही वे साधन या सुविधाएं प्रदान कर सकती है, जो ज्ञान विशेष की उपलब्धि के लिए अपेक्षित हैं। सच तो यह है कि वह जीवन यापन की सुगम सम्भावनायें भी नहीं दे पाती। देश से प्रतिभाओं का पलायन तो एक आंशिक अभिव्यक्ति मात्र है। अनेक प्रतिभाएं तो इस शिक्षा-प्रणाली के रथ के पहियों के नीचे पिसकर रह जाती हैं। गुरुकुलों की स्थापना का उद्देश्य एक ओर जहाँ अंग्रेजो द्वारा प्रचालित वर्तमान शिक्षा प्रणाली की त्रुटियों को दूर करना था, वहां शिक्षार्थियों को अत्यन्त प्राचीन काल से चली आती हुई सांस्कृतिक चेतना के प्रवाह से जोड़ना भी था। अपनी ही परम्परा, संस्कृति और चिन्तन वैभव से कट कर एक रंक विश्व को क्या दान कर सकता है। जब हम इस पृथ्वी पर मानवता के उच्चतम गुणों से सम्पन्न सच्चे मानव के अवतरण की कल्पना करते हैं तो क्या इस वर्तमान जड़ शिक्षण प्रणाली से किसी शिक्षार्थी में चेतना का वह धरातल बना सकते हैं जिसमें उस सुसंस्कृत मानव का दर्शन हो सके। अनुशासन का अभाव, अध्ययन के प्रति अरुचि, ब्रह्मचर्यावस्था में ही फैशन-लिप्सा और उच्छृंखलता से ग्रस्त शिक्षार्थी की चेतना क्या सही दिशा की ओर मुड़ सकेगी ? ये प्रश्न हैं जिनका उत्तर गुरुकुलों को देना चाहिए या देने के लिए ही जिनकी स्थापना की गयी थी। सच्चाई तो यह है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को इतना विस्तृत और व्यापक आकार तथा क्षेत्र ग्रहण कर लेना चाहिये था जितनी हमारी भारतीय संस्कृति व्यापक है। लेकिन परिणाम इसके सर्वथा विपरीत हुआ है गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालस उसके वर्तमान व्यवस्थापकों, अध्यापकों और छात्रों के द्वारा मानव चेतना के किस स्तर पर कार्य कर रहा है, इसे स्वयं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के व्यवस्थापकों को ही विचार करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य जो छोटे-मोटे गुरुकुल चल रहे हैं उनमें भी दैनिक चर्चा के कर्मकाण्डों की एक व्यवस्था तो दिखाई पड़ती है किन्तु सांस्कृतिक चेतना के उत्थान का जो भार उन पर डाला गया था उसमें वे किस सींमा तक सफल हो सके हैं—यह भी एक विचारणीय प्रश्न बन गया है। भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदर्शों से अनुप्राणित एवं स्थापित हमारे ये गुरुकुल यदि शिक्षार्थी की चेतना के विकास और भारतीय संस्कृति के संरक्षण सम्बन्धी कार्यों का एक उत्तम परिणाम नहीं प्रदर्शित कर सके तो इसका दोष किसे दिया जाये ? आदर्श तो सदोष नहीं होते। सदोष तो उन आदर्शों को अवतरित करने की प्रक्रिया होती है। जिससे सुखद अवतरण नहीं हो पाता। मुझे विश्वास है कि भारत के सभी गुरुकुलों के आचार्य एवं व्यवस्थापकगण इस शिक्षा प्रणाली के पुनरुत्थान के लिए एक बार पुनः प्रयास करेंगे। क्योंकि यही एक मात्र ऐसी शिक्षाप्रणाली है जो हमें अपने आतीत से जोड़कर और वर्तमान में सांस्कृतिक प्रदायों का उत्तराधिकारी बनाकर भाविष्य में भारत ही नहीं विश्व का भी कल्याण कर सकेगी।

⊙

(पृष्ठ २५ का शेष)

भारतीय संस्कृति में गौ का क्या महत्त्व है ? इस के बारे में हम बिल्कुल अनभिज्ञ हो चुके थे। महर्षि दयानन्द ने इस वेद के आदेश को लोगों के कानों तक पहुंचाया कि "गौ विश्व-स्यमातर" अर्थात् गाय विश्व की माता है। इससे हमें अनेकों लाभ हैं। हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए। लेकिन इस बात को व्यवहारिक रूप दिया तो गुरुकुलों ने। प्रत्येक गुरुकुल मे कुछ न कुछ गउएं अवश्य रखी जाती है। ब्रह्मचर्य से शरीर बलवान बनता है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण तो गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने दिया।

गुरुकुल में विद्यार्थी के अन्दर देश प्रेम और अध्यात्मिकता को कूट-कूट कर भर दिया जाता है। लेकिन सामाजिक वातावरण कुछ दूषित होने के कारण गुरुकुलों का कार्य ढीला पड़ गया है। क्योंकि गुरुकुलों में जो विद्यार्थी भेजे जाते हैं दूषित वातावरण से निकल कर जाते हैं। इस बात की पूर्णतः आशा की जा सकती कि हमारे गुरुकुलों का सुधार होगा और फिर उन से हमारे राष्ट्र का सुधार होगा धर्म का प्रचार होगा। देश उन्नति के शिखर पर पहुंचेगा। ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करता हुआ अन्त में मैं ही कहूंगा कि :—

"देख लेना आर्यों का राज जब यहां आऐगा।
राष्ट्रपति भवन पर ओ३म् ध्वज लहरायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी श्रद्धानन्द की बगीची के माली : आचार्य हरिदत्त शास्त्री

भगवती प्रसाद कौशिक
(संवाददाता एवं पत्रकार)

□

भारतीय संस्कृति अपनी आध्यात्मिक गरिमा के लिए विश्वविख्यात रही है। यह कहने मैं मुझे तनिक भी हिचकिचाहट नहीं कि इस पुरातन भारतीय गौरव का आधुनिक युग में संरक्षण एवं पल्लवन आर्यसमाज और उसके कार्यकर्त्ताओं तथा संस्थाओं ने किया है। आर्यसमाज एक सांस्कृतिक आन्दोलन था जिसने सारे देश में ही नहीं एक बार तो सारे विश्व में तहलका मचा दिया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित इस आन्दोलन को बल देने वाले आर्यवीरों में अमर शहीद स्वानी श्रद्धानन्द का नाम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने आर्यसमाज को, उसके

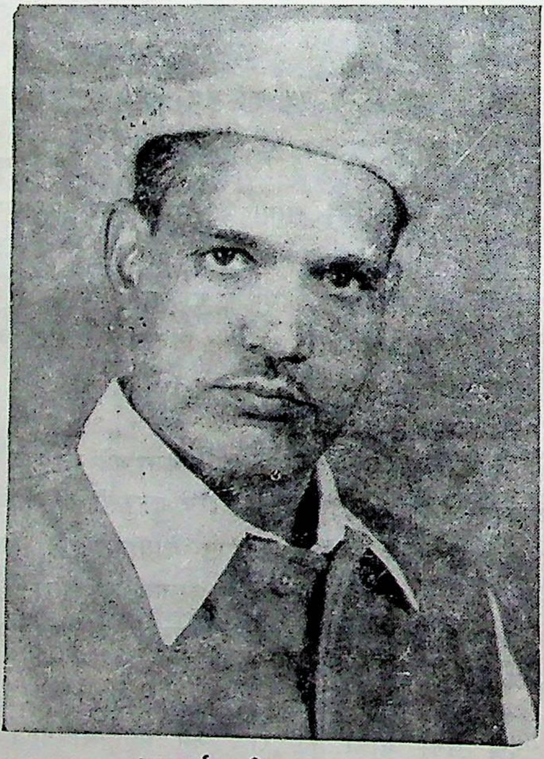

(आचार्य हरिदत्त शास्त्री)

सिद्धान्तों को न केवल बल प्रदान किया, बल्कि ऐसी जीवन-शक्ति प्रदान की, जिसे पाकर आर्य समाज धन्य हो गया और धन्य हो गया यह देश। वह संजीवनी शक्ति थी भारतीय संस्कृति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहरी गुरुकुलों की स्थापना करना। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की महान् कल्पना स्वामी श्रद्धानन्द के मस्तिष्क की देन थी जिसे उन्होंने कार्यान्वित किया, साकार किया। सर्वप्रथम स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जिसे देखकर जाने वाले अंग्रेज दांतों तले अंगुली दबाये बिना न रह सके। उसी शृंखला में स्वामी जी ने आज में ६८ वर्ष पूर्व धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में विद्या-विहार गुरुकुल की स्थापना की जो आजकल एक अनुभवी आचार्य हरिदत्त शास्त्री के निर्देशन में उन्नति कर रहा है।

एक लम्बी अवधि को पार करता हुआ यह गुरुकुल कुरुक्षेत्र कुछ आर्थिक समस्याओं से आ घिरा था और मैनेजिंग कमेटी इसे दो चार वर्ष के लिए बन्द करने को सोच रही थी कि तभी आचार्य हरिदत्त शास्त्री ने अपनी कर्मठता का परिचय दिया और उस चुनौती को स्वीकारा। सचमुच आर्यसमाज के क्षेत्र में आजकल कुछ नवयुवक तत्परता के साथ व्यस्त हैं जिनमें श्री राम नाथ सहगल, आचार्य सत्यप्रिय, राजेन्द्र जिज्ञासु तथा सुदर्शन देव जी का नाम भी हरियाणा के सन्दर्भ में लिया जा सकता है। आचार्य हरिदत्त भी एक ऐसे ही कर्मठ युवा कार्यकर्त्ता हैं इनके निर्देशन में गुरुकुल चहुंमुखी उन्नति कर रहा है। जब गुरुकुल का कार्यभार इन्होंने संभाला तो गुरुकुल हजारों के घाटे में चल रहा था। विद्यार्थी संख्या घट गई थी। शिक्षा प्रणाली एकान्त स्थिलता की ओर थी लेकिन हरिदत्त जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अत्यन्त उदार बनाया। विद्यार्थियों की संख्या में दुगनी वृद्धि की तथा हजारों लाखों के नये कार्य वे गुरुकुल के आधुनिकीकरण की दिशा में कर चुके हैं। अर्थसंग्रह में अत्यंत निपुण आचार्य हरिदत्त जी ने अपने विद्यार्थियों को जिला एवं प्रान्तीय स्तर पर शिक्षैतर प्रतियोगिताओं में भेजा और वे सफल हुए। आचार्य हरिदत्त जी सम्प्रति इस योजना में लगे हैं कि गुरुकुल को स्नातक-स्तर तक और स्नातकोत्तर स्तर तक बढ़ाया जा सके। सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द की बगीची के एक सफल माली के रूप में हरिदत्त जी को याद किया जाएगा। श्रद्धानन्द जी का सपना साकार करने में वे सफल होगें क्योंकि मैंने उनमें बड़ी कर्मठता पायी है। श्रद्धानन्द जी द्वारा लगायी बगीची के वे एक सफल माली हैं।

⊙

इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रान्त भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुंचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं॥

—'प्रसाद'

क्या कहूं आज जो नहीं कहीं, दुख ही जीवन की कथा रही।

—'निराला'

'जीवन में केवल भावना से ही काम नहीं चलता,
यथार्थ का दूसरा नाम ही जिन्दगी हैं।'

संकलन कर्त्री :—कविता सिन्धु

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा पद्धति में परिवर्तन ही राष्ट्र को उन्नत कर सकता है

ले० शिवकुमार शास्त्री काव्य-व्याकरणतीर्थ
पूर्व संसदसदस्य (लोक-सभा)

⊙

देश को स्वाधीन हुए ३४ वर्ष हो गये। प्रारम्भ से अब तक के सभी राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और शिक्षा मंत्री एक स्वर से यह कहते आ रहे हैं कि शिक्षा का प्रचलित स्वरूप अंग्रेज़ ने अपना शासन चलाने के लिए देश में लागू किया था। क्योंकि इस ढर्रे में थोड़े बहुत भाषा ज्ञान के अतिरिक्त-शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य का 'सर्वांगीण विकास' (Harmonious Development) का सर्वथा अभाव है। किन्तु आश्चर्य है कि अपना अपना कार्यकाल सभी इन भाषणों में समाप्त करते रहे हैं। इस ढांचे में क्या परिवर्तन किये जावें ? कि यह राष्ट्र निर्माण में सहायक हो—यह किसी ने न गम्भीरता से सोचा, न किया।

देश में जो इस समय अस्थिरता, निराशा और उच्छृंखलता का वातावरण है, उसके लिए उत्तरदायी शिक्षा का वर्तमान स्वरूप ही है। आज अधिकांश चौंतीस पैंतीस वर्ष के युवक, गुरु, माता-पिता और राष्ट्र के प्रति उनका कुछ कर्त्तव्य है इससे सर्वथा शून्य हैं। ये बैनकैल के ऊंट हैं, जिधर मुंह उठ जाये उधर ही चल देते हैं।

शिक्षाणालयों में न गुरुओं के मन में ये बलवले हैं कि हम एक नया राष्ट्र बना रहे हैं। इनमें कुछ उच्चस्तरीय संस्कार बद्धमूल करने चाहिएं ताकि ये अपने देश को सुख और शान्ति का धाम बना सकें। न पढ़ने वाले बच्चों में ही ऊंची उड़ाने और महत्त्वाकांक्षाएं हैं। एक विचित्र सी परिस्थिति से देश गुजर रहा है।

इस परिस्थिति की गम्भीरता की अनुभूति भी शिक्षा जगत् में हो ऐसा भी आभास नहीं होता। निश्चय ही इस देश में परिवर्तन के लिए एक तीव्र आन्दोलन की आवश्यकता है।

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा-धातु का अर्थ आचार्य पाणिनि ने विद्या का उपादान किया है। विद्या शब्द भी, उसकी गरिमा, लौकिक और पारलौकिक समस्त कार्यक्षेत्र की विशालता को ध्यान में रखकर चार धातुविद ज्ञाने, विदविचारणे, विद सत्तायाम् और विदॢ लाभे से निष्पन्न किया है। इसका सार यह निकला कि सम्पूर्ण जीवन यात्रा को सफलतापूर्वक पार करने की योग्यता प्रदान करने वाले प्रयत्न का नाम शिक्षा है। दूसरे शब्दों में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की योग्यता और क्षमता प्रदान करना शिक्षा का उद्देश्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम के विचारकों ने भी शिक्षा के विषय में सुन्दर विचार प्रकट किये हैं। स्पैन्सर ने लिखा है—

The knowledge which fits a man to discharge his duties as a good citizen is of great importance.

जान रस्किन ने कहा

"Information, says John Ruskin, is not education. But it is only formation which is real Education. But these days even information has changed into deformation."

अर्थात् किसी वस्तु की जानकारी शिक्षा नहीं है। चरित्र निर्माण ही सच्ची शिक्षा है। आजकल तो यह जानकारी शिष्टाचार में परिणत हो गयी है।

एक अन्य विचारक ने कहा :—

"The harmonious development of brain, heart and hand (body) is the real aim of education."

अर्थात् मानव का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हैं।

इस योग्यता के उपार्जन की प्रक्रिया

शारीरिक उन्नति के साधन-व्यायाम, आसन, प्राणायाम और ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक संयम का रूपोमय जीवन है।

आत्मिक उन्नति के साधन-यम नियमादि का निष्ठापूर्वक पालन हैं।

लौकिक उन्नति के लिए—शिल्प, व्यवसाय और वाणिज्यादि हैं।

इनमें से दो की पूर्ति अर्थात् शारीरिक और आत्मिक उन्नति की सिद्धि के लिए यदि तपस्वी आचार्य और उपाध्याय मिल जावें तो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सर्वोत्तम है।

होना यह चाहिए कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को राष्ट्र निर्माण का आधार मान कर इस पर ऐहिक उन्नति के विज्ञान और शिल्प के प्रासाद खड़े किये जावें। क्योंकि मानव के बिना मानव बने तो ये विज्ञान के आविष्कार विनाश की ओर ही ले जावेंगे, जैसा कि इस समय हो रहा है।

अतः भारत की सरकार को चाहिए कि चुने हुए शिक्षा शास्त्रियों को पौरस्त्य और पाश्चात्य पद्धतियों के मिश्रण से इस प्रकार का पाठ्यक्रम और जीवन-चर्या निर्माण का दायित्व सौंपे जिसे अपना कर देश इस गतिरोध और मानसिक यन्त्रणा की दलदल से निकल कर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

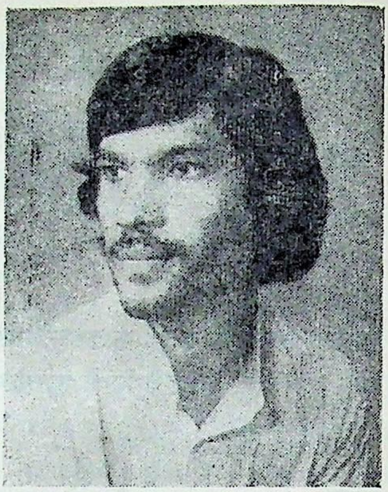

बदलते सन्दर्भों में गुरुकुलों का रूप

कैसा ? और क्यों ?

'पढ़ते हजारों शिष्य हैं पर फीस ली जाती नहीं।
'वह उच्च शिक्षा तुच्छ धन पर बेच दी जाती नहीं।।'

गुरुकुलों की चर्चा करते हुए, राष्ट्रकवि श्री मैथिली शरण गुप्त जी की ये पंक्तियाँ मेरे मानस में घुमड़ने लगती हैं और यह घुमड़न एक प्रश्न बन जाती है जिसका उत्तर मैं तलाशने को बाध्य हो जाता हूं।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्वामी श्रद्धानन्द जी की देन थी, ऐसा सर्वविदित है किन्तु मेरा मन कहता है प्राचीनकाल में भी ये संस्थान थे जहाँ आज से भी सुन्दर ढंग से अध्ययन-अध्यापन हुआ करता था। उन्हें ही हम विद्यापीठ, आश्रम, साधना-भूमि और गुरुकुलों की अभिख्या से जानते थे। आखिर गुरुकुल शब्द का मूलभूत अर्थ क्या है इसे इतना प्रिय शब्द क्यों माना गया और क्यों इसका सर्वाधिक प्रचलन हुआ। अस्तु प्रस्तुत शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है—"गुरुणाँ कुलम्" यानी गुरुओं का कुल। गुरुकुल में गुरु ही मूलभूत केन्द्र या इकाई होता है। उसके चारों ओर कुछ न कुछ प्राप्त करने की इच्छा वाले शिष्यों का एक झुण्ड होता है। आम तौर पर देखा गया है कि गुरुकुलों का साधारण माहौल एक परिवार के समान होता है। यहाँ पर जाति-पाति को बिलकुल महत्त्व नहीं दिया जाता। गुरुकुलों में आज भी प्राचीन भारतीय गुरुकुल परम्परा के आदर्श की रक्षा की जा रही है। आज भी इन संस्थाओं में अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, ऊंचे-नीचे, बली-निर्बल सभी को एक दृष्टि से देखा जाता है। सभी गुरुकुल के ब्रह्मचारी अपने आपको एक कुल के सदस्य के रूप में देखते हैं। यहाँ रहने वाले सभी ब्रह्मचर्य का व्रत रखते हैं। सभी में आस्तिकता पायी जाती है। वेदों एवं वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन में संलग्न ये ब्रह्मचारी अपनी संस्कृति के सच्चे प्रहरी होते हैं। महर्षि दयानन्द की मूलभूत धारणाओं के अनुरूप जो वैदिक सिद्धान्त स्थिर हुए या किए गये वे ही सिद्धान्त गुरुकुल की शिक्षा पद्धति रूपी मणिमाल के 'सुमेरु' हैं। आधुनिक वैज्ञानिक युग में या इस असन्तोष, सन्त्रास, घुटन एवं यान्त्रिकता के युग में जब अनुशासन हीनता बढ़ रही है वहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां गुरुकुलों में अनुशासन प्रियता देखने को मिलती है। आज के विद्यार्थी पढ़ने में बिल्कुल रुचि नहीं लेते। वे तोड़-फोड़, अनुशासनहीनता, अवज्ञा, गुरुओं का अपमान करना ही अपनी उपलब्धि समझते हैं। वास्तविकता यह है कि वे पढ़ते हैं गुनते नहीं। आज की यह शिक्षा प्रणाली मैकाले के मस्तिष्क की उपज थी। भारतीय परिवेश, भारतीय पर्यावरण में यह ज्यों की त्यों यहाँ फिट नहीं की जा सकती। इसमें भारतीय संस्कृति की गरिमा भी साथ रखी जानी चाहिए थी। क्योंकि आज की यह मैकाले प्रदत्त शिक्षा प्रणाली ऐसी है:—"It teaches but not educates. It trains but not enlightens. It qualifies, but not humanises, It can produce brilliant subordinates not the rulers of mankind." और इसीलिए आज की शिक्षा पद्धति असन्तोष, निराश, सन्त्रास, घुटन और अनास्था तथा नास्तिकता को जन्म दे रही है। हमारे देश के विद्वान आधुनिक ऋषियों ने इस शिक्षा प्रणाली का विरोध किया था।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह आधुनिक शिक्षा पद्धति व्यक्ति की लौकिक उन्नति करने में भले ही समर्थ हो किन्तु लौकिक एव पारलौकिक दोनों ही उन्नति करने में समर्थ नहीं है।

अतः आज के यान्त्रिक एवं वैज्ञानिक युग में भी हमे गुरुकुलों की ओर ताकना पड़ता है। आध्यात्मिक उन्नति गुरुकुलों में ही सम्भव है। आज के विद्यालय और विश्वविद्यालय आज की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान नहीं कर पा रहे हैं। समाज दिन प्रतिदिन चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार के भंयकर जंजाल में फंसता जा रहा है। ऐसे युग में शिक्षाविद् भी आज गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता पर विचार करने को बाध्य हो गये हैं। एक बार तो गांधी जी ने भी यही आशा जाहिर की थी—'भविष्य में स्वतन्त्र भारत के निर्माण का कार्य गुरुकुल शिक्षा पद्धति के अनुकरण पर निर्भर करता है।'

ऊपर मैंने वर्तमान विश्व की समस्याओं के झरोखे से वर्तमान शिक्षा प्रणाली से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की तुलना करके यही पाया है कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली ही आज एक मात्र आशा का सितारा रह गयी है। क्योंकि आज की शिक्षा पद्धति न केवल निष्प्रयोजन है प्रत्युत असन्तोषदात्री भी है। वही शिक्षा, जिसे व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपनाता था, ग्रहण करता था, आज उसके लिये सिर दर्द बन गयी है। ऐसे समय में, मेरे विचार से प्राचीन कालीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति एक ऐतिहासिक भूमिका निभा सकती है। किन्तु उस प्रणाली को ज्यों का त्यों आधुनिक युग में ग्रहण किया जाना असम्भव नहीं तो मुश्किल अवश्य है। समय के साथ-साथ सन्दर्भ भी परिवर्तित हो गये हैं। आदमी बदल गया है, इतिहास बदल गया है। आवश्यकताएं बदल गयी हैं, पर्यावरण बदल गया है, आस्थायें बदल गयी हैं, विश्वास बदल गये हैं। लोगों के विचार बदल गये हैं। समाज और राजनीति बदल गयी है। ऐसी बदली हुई स्थिति में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को ज्यों की त्यों ग्रहण करना न केवल अयुक्तिसंगत है बल्कि दुराग्रही दृष्टिकोण भी।

मैं अपनी दृष्टि के अनुसार आज के परिवेश का अध्ययन करके जिस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं वह यही है कि वर्तमान बदले सन्दर्भों में गुरुकुलों को भी अपना ढाँचा परिवर्तित करना चाहिए। कट्टर मान्यताओं में समय और सन्दर्भों के अनुसार परिवर्तन करना चाहिए। लेकिन सावधान !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन का मैं उसी हद तक पक्षपाती हूं जहाँ तक उचित है। यह न हो कि परिवर्तन करते-करते हम मूलभूत सिद्धान्तों से ही हाथ धो बैठें और मूल को नष्ट कर दें। यह नहीं कि गुरुकुलों में परिवर्तन आया ही नहीं है। आया है, गुरुकुल काँगड़ी यूनिवर्सिटी और उसके अधीन विद्यालय, महाविद्यालय स्तरीय गुरुकुल पूर्णतः परिवर्तित पद्धति के प्रतिनिधि प्रशिक्षण केन्द्र ही तो हैं। इन प्रशिक्षण केन्द्रों में आज का युग कुछ नवीन परिवर्तन की माँग कर रहा है। यह युग की माँग है और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने हमेशा युग की माँगों को पूरा किया है। आज के युग में भी वे इस चुनौती को स्वीकार करके युगानुरूप पर्यावरण प्रस्तुत कर रहे हैं। और करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

आवश्यकता है कि आज गुरुकुल अपनी शिक्षा दृष्टि में उदारता पूर्वक परिवर्तन कर ले। अंग्रेजी या वैज्ञानिक ज्ञान को ग्रहण करने के लिए नये पीठों की स्थापना करे। पाश्चात्य संस्कृति के तत्त्वों को ग्रहण करने के लिए अपने दरवाजे स्वच्छन्दता पूर्वक खोल दे। पाश्चात्य संस्कृति की अच्छी बातों को मलेच्छ संस्कृति की बातें कहकर न ठुकरा देवे क्योंकि गुरुकुलों का सिद्धान्त है :—"यानि अस्माकं सुचरितानि तानि तयोपास्यानि नो इतराणि।" अर्थात्—जो अच्छी बातें हैं उन्हें ग्रहण करो शेष को नहीं।

आधुनिक परिवेश के अनुरूप जनरल नॉलेज की शिक्षा भी गुरुकुलीय विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए। कम्पीटिशन की तैयारी भी गुरुकुलों में हो। गुरुकुल का विद्यार्थी अन्य स्कूलों या कोचिंग सैन्टर्स में शिक्षित विद्यार्थी से किसी भी दृष्टि से हीन नहीं होना चाहिए। उसे वे सब सुविधाएं गुरुकुल में प्रदान की जानी चाहिए जो पब्लिक और कान्वेन्ट स्कूलों में मिलती हैं। हमारा गुरुकुल का विद्यार्थी किसी भी प्रकार के कॉम्पलैक्स (इन्फीरियारिटी या सुपीरियारिटी) से रहित होना चाहिए। इसके लिए विद्यार्थी को उचित माहौल मिलना चाहिए। वह पौरस्त्य एवं पाश्चात्य दर्शनों, सिद्धान्तों, मान्यताओं, धारणाओं का ज्ञाता बने यही दिशा गुरुकुलों में अपनायी जानी चाहिए।

ऊपर मैंने नवीन दृष्टि के आलोक में गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं उसके रूप के सम्बन्ध में कुछ विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए हैं। ये विचार एवं सुझाव, हो सकता है पुरातनपंथी या आग्रही व्यक्तियों को न भायें फिर भी मैं आश्वस्त हूं कि गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया तो ये विचार स्वीकार्य ही लगेंगे। फिर भी यही कामना है :—

'सन्त परीक्ष्य अन्यतरत भजन्ते ।
मूढ़ परप्रत्ययनेय बुद्धिः ॥'

वाचस्पति 'कुलवन्त'
महासचिव
प्रगतिशील हरियाणा साहित्यकार संघ,
ए-६, टैगोर भवन, विश्वविद्यालय परिसर,
कुरुक्षेत्र १३२ ११९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारत के विद्यापीठ बनाम गुरुकुल

भीमसिंह वेदालंकार प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
संस्कृत विभाग, जनता महाविद्यालय, कौल (कुरुक्षेत्र)

भारतवर्ष प्राचीनकाल से ही शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। यहीं से सर्वाङ्गीण शिक्षा को प्राप्त करके स्नातक बने हुए नवयुवक यत्र तत्र सर्वत्र देश में अथवा विदेश में अपने अनुपम ज्ञान पुञ्ज के आलोक से अपनी सच्चरित्र प्रवित्र अमृतमयी जन्मभूमि भारत माता के अजस्र पुण्य यश को आलोकित करते हैं। इस •पावन मनभावन अमर यश की अविरल पुण्यधारा के निरन्तर प्रवाहित होने में इन प्राचीन विद्यापीठों या गुरुकुलों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यद्यपि ये विद्यापीठ आधुनिक काल के विशालकाय तथा नानाविध बाह्य सज्जाओं से सुसज्जित कालेजों या विश्वविद्यालयों के समान सुसंगठित और व्यवस्थित न थे तथा न ही एक निश्चित दिशा की शिक्षा को देने के दुराग्रह से युक्त थे, अपितु विशुद्ध ज्ञानोपार्जन करना ही इनका लक्ष्य रहा। इसके लिये यहां मानवमात्र की एकता के आधार पर शिक्षा दी जाती थी जो मानवीय गुणों के साथ-साथ प्रत्येक छात्र-छात्रा में कर्मठता तथा जीविकोपार्जन की क्षमता को पैदा करती थी। शिक्षा के विषय में इन विद्यापीठों का यह मन्तव्य था कि जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिये तैयार करे, जो हमें धरती और धन का गुलाम बनाये, जो हमें भोगविलास में डुबोये, जो हमें दूसरों का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाये, वह शिक्षा नहीं, भ्रष्टता है। इन विद्यापीठों में जगत्प्रसिद्ध (दिसा पामुख=दिशा प्रामुख्य) विद्वान् रहते थे। ये आचार्य किसी केन्द्रीय नियन्त्रण से नियन्त्रित नहीं थे। इसी प्रकार ये शिक्षक किसी कालेज से सम्बद्ध अथवा वेतन भोगी शिक्षक भी नहीं थे। अपितु ये मनीषी विद्वान् सर्वतन्त्र स्वतन्त्रमना थे। न यहां का पाठ्यक्रम तथा शिक्षा का काल ही निश्चित था। इसी प्रकार न यहां परीक्षाओं की परिपाटी थी तथा न ही इनके बदले कोई उपाधि आदि दी जाती थी, इसके अतिरिक्त इन तात्कालिक विद्यापीठों में विनेय शिष्यों के लिये विलक्षण विचक्षण गुरुओं के कुल में रहते हुए इनके चरणारिविन्दों में बैठकर ही शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य था। आजकल की तरह पत्राचार-पाठ्यक्रम (Correspondence Course) आदि प्रवृत्तियां नहीं थी।

तक्षशिला

इस परम्परा में सर्वप्रथम तक्षशिला का नाम आता है जो कि पुरातन भारत का प्राचीनतम तथा सर्वाधिक बहुचर्चित ज्ञानकेन्द्र था। रामायण में भरत के द्वारा इसकी स्थापना का निर्देश

•एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ मनुस्मृति, २.२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया है। महाभारत में जनमेजय के नागयज्ञ के इसी स्थान पर होने का वर्णन है (१.३.२०) यद्यपि रामायण और महाभारत में तक्षशिला के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र होने का कोई सकेत नहीं मिलता तथापि ७वीं शती ईसवी पूर्व तक इसने गरिमापूर्ण ज्ञानपीठ होने की इतनी ख्याति अवश्य प्राप्त कर ली थी कि राजगृह और मिथिला आदि स्थानों से विद्यार्थी यहाँ विद्याध्ययन के लिये आते थे। वैसे यह प्रदेश शत्रुओं द्वारा अनेकशः आक्रान्त किया गया, इसलिये तक्षशिला को काफी अपूरणीय क्षति उठानी पड़ी। तक्षशिला शिक्षा केन्द्र में सभी तरह के गरीब अमीर विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थे। इनमें निर्धन छात्र दिन भर गुरु का काम करके एक प्रकार से अपनी फीस की क्षतिपूर्ति करते हुए रात्रि को पढ़ते थे। यहां विद्यार्थी की रुचि तथा इच्छा के अनुसार ही इनको विषय पढ़ाये जाते थे। किसी पर जोर जबरदस्ती कोई विषय नहीं लादा जाता था। इसी प्रकार यहां शिक्षा का कोई काल भी निश्चित नहीं था। इसीलिये तथागत भगवान् बुद्ध के चिकित्सक जीवक को विद्याध्ययन करते हुए जब यहां सात वर्ष व्यतीत हो गये तो वह राजगृह लौट आया था। यद्यपि गुरुजी ने तब तक उसकी द्रव्य गुण की परीक्षा नहीं ली थी। साहित्यिक शिक्षा के साथ-साथ तक्षशिला में अन्य जीवनोपयोगी कलाओं की भी शिक्षा दी जाती थी अर्थात् तीनों वेदों तथा अठारह कलाओं की शिक्षा का यहां समुचित प्रबन्ध था। शिल्पों में वैद्यक तथा धनुर्विद्या प्रधान थे। तथागत बुद्ध के शिष्य जीवक ने यहीं से शिक्षा प्राप्त करने के बाद पेट और सिर के जो आप्रेशन किये हैं उन्हें आजकल के बहुत कम डाक्टर कर सकते हैं। इसी प्रकार धनुर्विद्या के प्रसङ्ग में भी इसका बहुत नाम था। कोसलराज प्रसेनजित् यहाँ के शिष्य थे। शब्दशास्त्र विशारद महामुनि पाणिनि भी अटक के पास शलातुर के निवासी थे•। वे भी सम्भवतः यहीं के विद्यार्थी तथा बाद में गुरु रहे होंगे। सुना जाता है कि राजनीति शुक्राचार्य चाणक्य भी यहीं के आचार्य थे।

नालन्दा

प्राचीनकाल का द्वितीय बड़ा प्रसिद्ध विश्वविद्यालय नालन्दा था जोकि पटना के दक्षिण पश्चिम में ४० मील की दूरी पर आधुनिक बड़गांव है। गुप्त राजाओं के वरद उदार कर कमलों से पांचवीं शती ईसवीं के मध्य इसका अभ्युदय हुआ। हिन्दू होते हुए भी इन राजाओं ने इसके विकास को पूरा-पूरा संरक्षण दिया। शक्रादित्य (संभवतः कुमार गुप्त प्रथम, ४१४—४५४ ई०) ने एक विहार की स्थापना के रूप में इसकी आधार शिला रखी थी। कई शतियों तक यह बौद्ध विहार नालन्दा का केन्द्रीय देवालय रहा। उसके बाद तथागत गुप्त, नरसिंह बालदित्य (४६८—४७२ ई०) ने एक तथा वज्र नामक शासक ने यहां दो और बौद्ध विहारों का निर्माण कराया। किन्तु किसी भी वस्तु के उत्कर्षोपकर्ष सदा साथ चला करते हैं, शायद इसीलिये छठी शती में बौद्ध धर्म के घोर विरोधी हूण राजा मिहिरकुल तथा बंगाल के राजा शशाङ्क के हाथों से इसे काफी क्षति उठानी पड़ी। ह्वेनसांग की जीवनीलेखक के अनुसार सातवीं शती में यहां के भिक्षुओं की संख्या दस हजार थी किन्तु ७५९ में आने वाले इत्सिंग के अनुसार उन दिनों यहां ३ हजार से अधिक भिक्षुक निवास करते थे। इससे लगता हैं कि यहां भिक्षुओं की साधारण संख्या ५ हजार के लगभग

•प्रस्तुत प्रसङ्ग में पाणिनीय अष्टाध्यायी का निम्न सूत्र द्रष्टव्य है—
तुदी शलातुरवर्मती कूच वाराड्ढक् छण् ढञ् यकः —पा.४.३,१९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। नालन्दा की खुदाई में भिक्षुओं के कमरे तथा बड़ी-बड़ी भट्टियाँ भी मिली हैं। सबमें सोने के लिए एक या दो पत्थर की शय्याएं, दीपक तथा पुस्तकों को रखने के लिये ताक भी हैं। सातवीं शती के पूर्वार्द्ध में नालन्दा विद्यापीठ में धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, प्रभाकरमित्र, जिनमित्र, जिनचन्द्र तथा शीलभद्र जैसे प्रसिद्ध विद्वान बौद्ध आचार्य थे। इसलिये उन दिनों नालन्दा की इतनी गरिमा प्रथित थी कि कोरिया, चीन, तिब्बत तथा मध्य एशिया जैसे सुदूरवर्ती स्थानों से भी सैकड़ों छात्र यहां पढ़ने आते थे। किन्तु यहाँ हरेक के लिये प्रवेश पाना सरल न था। पहले उसे अपनी परीक्षा देनी होती थी। नालन्दा में ही धर्मगंज नामक एक विशालकाय पुस्तकालय भी था। चीनी यात्री यहां पुस्तकों की प्रतिलिपि करने भी आते थे। यही कारण है कि आज भारत में कुछ ऐसे दुष्प्राप्य ग्रन्थ रत्न भी हैं जो केवल उद्धरण रूप में ही विभिन्न ग्रन्थों में उद्धृत किये गये हैं। अपने पुस्तकाकार में वे आज हमारे समक्ष नहीं है। अतः इन विभिन्न भाषाओं में हुए अनुवादों की सहायता से ही अब उन दुष्प्राप्य ग्रन्थों का संपादन संभव है जो कि विद्वानों द्वारा किया जा रहा है तथा किया गया है। सुना जाता है कि चीनी यात्री इत्सिंग पांच लाख श्लोकों के चार सौ संस्कृत ग्रन्थों की नकल यहां से अपने साथ चीन ले गया था। महायान बौद्ध धर्म का केन्द्र होने से नालन्दा में वैसे तो प्राधान्येन बौद्ध धर्म तथा दर्शन ही विशेष रूप से पढ़ाया जाता था किन्तु इसके साथ साथ वहां वेद, न्यायविद्या शब्दविद्या आयुर्वेद तथा अथर्ववेद आदि भी पढ़ाये जाते थे।

आठवीं शती में नालन्दा विश्वविद्यालय ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर ली थी। यहां के आचार्यों ने विदेशों में भी बौद्धधर्म का प्रचार करते हुए नालन्दा के महान शिक्षा केन्द्र होने की धूम मचा दी थी।

वलभी

सातवीं शती में वलभी भी नालन्दा के समान एक विश्वविख्यात विद्यापीठ रहा है। आजकल यह काठियावाड़ में कला के नाम से जाना जाता है। इत्सिंग के कथनानुसार मनुष्य उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के लिए वलभी या नालन्दा में कुछ वर्ष अवश्य रहा करते थे। जिस प्रकार आजकल 'फारेनरिटर्न' का विशेष महत्त्व माना जाता है ठीक यही स्थिति कभी वलभी की भी थी। किसी की विद्वत्ता की प्रामाणिकता के लिये उसका वलभी में रहना ही पर्याप्त समझा जाता था। यह एक ऐसा विश्वविख्यात ज्ञानपीठ था जहां समस्त भारतवर्ष के अखिल मनीषी विद्वान् एकत्र बैठकर विभिन्न वादविवाद ग्रस्त विषयों पर ऊहापोह किया करते थे। वलभी के पण्डित जिस पर मान्यता की मोहर लगा देते थे वह प्रखर बुद्धिमत्ता के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध हो जाता था। सरलता से संस्कृत व्याकरण सिखाने के लिये रचित भट्टिकाव्य या रावणवध महाकाव्य के यशस्वी लेखक महाकवि भट्टि ने भी इसी वलभी शिक्षा केन्द्र से विद्या प्राप्त करके इसे सार्वदिक प्रसिद्ध कर दिया।•

•महाकवि भट्टि का निम्न श्लोक प्रकृत प्रसंग में ध्यातव्य है—
काव्यमिदं विहितं मया वलभ्यां श्रीधरसेन नरेन्द्र पालितायाम्।
कीर्तिरतो भवान्नृपस्य तस्य क्षेमकरः क्षितिपो यतः प्रजानाम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रम-शिला

विक्रमशिला भी चार शती तक भारत का एक महान् शिक्षा केन्द्र होने के कारण प्रकाण्ड विद्वान पैदा करता रहा है। इसकी आधारशिला पालवंशी राजा धर्मपाल ने ८वीं शती में रखी थी। अद्यत्वे यह भागलपुर से पूर्व में २४ मील दूर पथरघाट कहलाता है। तिब्बती विद्यार्थियों के साथ इसका घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। इसीलिये यहां इन तिब्बती विद्यार्थियों के लिये एक खास धर्मशाला बनाई गई है। इसके अतिरिक्त यहां के आचार्य तिब्बत में जाकर संस्कृत के अच्छे-अच्छे ग्रन्थों का तिब्बती में अनुवाद करते रहे हैं। यही कारण है कि कुछ ग्रन्थ जो हमारे भारतवर्ष में दुर्भाग्यवश केवल उद्धरण रूपेण उद्धृत किये गये हैं, पूरे प्रकाशित नहीं मिलते, वे इस तिब्बत भाषा में इन आचार्यों द्वारा अनुदित होने के कारण अपने अविकल रूप में मिलते हैं। यह विद्यापीठ अन्य सब शिक्षाकेन्द्रों की अपेक्षा अधिक सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित था। शिक्षा के पर्यवसान में यहां बंगाल के शासकों द्वारा छात्रों को उपाधियां भी वितरित की जाती थीं। १२०३ ई० में मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी की सेना ने इसे कोई दुर्ग या किला समझकर इसका समूलोन्मूलन कर दिया था। इस प्रकार ऊपर विवेचित चन्देक प्रसिद्धतम शिक्षा केन्द्रों के वर्णन से स्पष्ट है कि शिक्षा की दौड़ में भारत सदा से ही आगे रहता आया है। तथा इस दौड़ में इन विद्यापीठों या गुरुकुलों ने अनुपेक्षणीय भूमिका निभायी है।

आजकल भारतवर्ष में जो गुरुकुल मिलते हैं वे उपरोक्त गुरुकुलों या विद्यापीठों के ही रूप हैं। जिनमें आज प्राचीन आदर्शों की सुरक्षा की जा रही है। हमें विश्वास है कि इस आणविक युग की विभीषिका से सन्त्रस्त मानव और मानवता को गुरुकुल एक नई दिशा, दृष्टि एवं सन्देश देने में समर्थ होंगे।

⊙

"कोई रचना केवल लेखक से ही महान् नहीं बनती बल्कि वह समीक्षकों एवं पाठकों से भी परिश्रम की मांग करती है।" —**सम्पादक**

मुक्तक

सारस्वत मोहन 'मनीषी'

मरुस्थल के प्यासे अधरों को यह सावनी महीना है।
लहरों से भिड़ जाने वाला यह मनचला सफीना है।
पाखण्डों के तिमिर नाश हित सच्चाई का सूरज है।
जिसकी टक्कर कहीं न मिलती वह अनमोल नगीना है।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की उपयोगिता

□ डा० कैलाशचन्द्र विद्यालंकार,

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, यूनिवर्सिटी कालिज, कुरुक्षेत्र

⊙

मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में पचास प्रतिशत योगदान संस्कारों का होता है और शेष पचास प्रतिशत वातावरण का। प्रथम पचास प्रतिशत अंश का परिमार्जन और संवर्धन शिक्षा के द्वारा किया जाता है और वातावरण उस शिक्षा के लिए आधारभूमि प्रस्तुत करता है। इस सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए वर्तमान भारत में प्रचलित शिक्षा-प्रणाली के मूल्यांकन और उपयोगिता को देखते हुए गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के स्वरूप और उसके महत्त्व को देखना होगा। समाज शिक्षित वर्ग से क्या अपेक्षा करता है और वर्तमान समय में शिक्षित वर्ग स्वस्थ और प्रगतिशील समाज का निर्माण कर पा रहा है अथवा नहीं? भारतीय समाज में सहस्रों वर्षों के अनुभव पर आश्रित और स्थापित नैतिक मूल्य जिनका पोषण करने का उत्तरदायित्व गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली लेती है क्या वे वर्तमान समय में निरर्थक हो चुके हैं? यदि ये मूल्य ही निरर्थक हो गए हैं तो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ही क्या आवश्यकता है? इत्यादि प्रश्न मन को आन्दोलित करते हैं तो बुद्धि को चिन्तन के लिए प्रेरित।

मनुष्य के व्यक्तित्व में भौतिक शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का सम्मिलित अस्तित्व है। इनमें से सभी के सन्तुलित विकास से एक अच्छे नागरिक तथा सजग नेता का निर्माण होता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास है। स्वस्थ मन के साथ सरल और स्पष्ट चिन्तन तथा विवेक से युक्त बुद्धि का अस्तित्व देखा जाता है। विवेक से धर्म, अर्थ और काम के पुरुषार्थत्रय का समन्वयन करता हुआ मानव जीवन के परम-लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करता है।

वर्तमान शिक्षा-पद्धति की आधारशिला ऐसे व्यक्ति के हाथों और ऐसे वातावरण में रक्खी गई थी जिसमें इन सबके लिए सोचने का न तो कोई अवसर ही था और न इच्छा ही थी। अतः न तो इस शिक्षा में सन्तुलन है, न मौलिकता है और न मानवोचित सहृदयता है। समाज के उदात्त मूल्यों का समावेश और उनके प्रति आदर का भाव भी उसमें नहीं है। अतः इस शिक्षण-पद्धति में से निकला नवयुवक पंगु है और असन्तुलित है। वह बौद्धिक चमत्कार से युक्त होने का दावा तो करता है किन्तु उसमें सर्जनात्मक मौलिकता का अभाव है। वह धन सम्पदा युक्त भौतिकवादी सभ्यता की इन्द्र धनुषी चकाचौंध से चुंधियाया हुआ देश, समाज,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार को ही नहीं अपितु स्वयं को भी खो बैठा है। यह विघटन की स्थिति बुद्ध के मध्यम मार्ग, वैदिक त्यागमय कर्त्तव्य मार्ग और गीता के अनासक्ति योग, ज्ञान योग तथा भक्तियोग को भूल कर कभी हिप्पियों की निरुद्देश्य परम्परा में L. S. D., गांजा, चरस, मदिरा आदि के मादक प्रभाव से जीवन की वास्तविकताओं से आँखें मोड़ लेना चाहती है तो कभी मनुष्य को इतना समाजवादी बना देती है कि व्यक्ति के जीवन का मूल्य उसके लिए मशीन के एक बेजान पुर्ज़े से अधिक नहीं रह जाता। भावनात्मक सम्बन्ध की तो बात ही क्या है। जीवन के अन्तिम समय तक उसे लालसाओं और तृष्णाओं का आकर्षण शान्ति से आत्मचिन्तन का अवसर ही प्रदान नहीं करता। उसके लिए आजीविका जीवन से भारी हो जाती है। वह अर्थ का उपार्जन सुख से जीवन व्यतीत करने के लिए नहीं करता अपितु उसके पीछे भागता हुआ जीवन के सुख, चैन, शान्ति सभी को खो बैठता है।

इसके अतिरिक्त शिक्षा का सबसे प्रमुख उद्देश्य यही है कि वह मनुष्य को सभी पूर्वाग्रहों से उन्मुक्त करके स्वतन्त्र चिन्तन करने की शक्ति प्रदान करे तथा मनुष्य में स्वस्थ नेतृत्व करने का सामर्थ्य उत्पन्न करे परन्तु वर्तमान शिक्षा-पद्धति तो स्वतन्त्र सुदृढ़ तथा विचारपूर्ण सिद्धान्तवादी व्यक्तित्व के स्थान पर परमुखापेक्षी और दुर्बल-चरित्र व्यक्तित्व को प्रदान करती है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का जन्म इन सब दोषों से बचने के लिए हुआ था। उसके मूल में स्वामी दयानन्द के मूलमन्त्र कार्य कर रहे थे कि बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है। बच्चे का प्रशिक्षण मातृभाषा में होना चाहिए जिससे वह उस सब ज्ञान को आत्मसात् कर सके और स्वतन्त्र तथा मौलिक चिन्तन की उद्भावना कर सके। सत्य विद्याओं को जानने तथा असत्य को छोड़ने में मनुष्य को सदा तत्पर रहना चाहिए। अन्याय को सहन करना भी उतना ही अनुचित है जितना किसी दूसरे के प्रति अन्याय करना। मनुष्य को परा तथा अपरा, विद्या तथा अविद्या, सम्भूति और असम्भूति इत्यादि सर्वविध ज्ञान का उपार्जन करना चाहिए। ऐसे कार्य करने चाहिएं जो सर्व हितकारी हों। इत्यादि।

इन मूलमन्त्रों के साथ तत्कालीन समाज के वातावरण से दूर 'संगमें च नदीनां, उपह्वरे च गिरीणां धिया विप्रो अजायत' वाली उक्ति को ध्यान में रखते हुए नदियों के तट पर अथवा पर्वतराज हिमालय के चरणों में सुरम्य वनों के शान्तिमय वातावरण में गुरुकुलों की स्थापना की गई। गुरु के सामीप्य तथा व्यवस्थित वातावरण में छात्रों को उन्मुक्त विकास का अवसर देने के लिए प्रबन्ध किया गया जिससे Education शब्द की मूलभावना—मनुष्य की अन्तर्निहित सभी शक्तियों का समुचित विकास की पूर्ति हो सकी। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही रक्खा गया जिससे छात्र अपने देश के गौरव को पहचान सकें और उनमें स्वाभिमान जाग उठे। वह दासता के दीनतामय प्रभाव से उभर सकें। सभी छात्र समान खान, पान, वस्त्र, पुस्तक, रहन-सहन आदि का प्रयोग करते हुए वर्ग हीन समाज के सदस्य बनने के लिए तैयार होने लगें। भारतीय शास्त्रों का बुद्धिसंगत और युक्तियुक्त स्वरूप उनके सामने आया जिससे अपनी परम्पराओं के प्रति सम्मान की भावना के साथ साथ अपने प्रति सम्मान जगा तथा परम्परागत उदारतामय दृष्टिकोण भी विकसित हुआ। कट्टर सम्प्रदायवाद, अस्पृश्यता आदि के अन्धविश्वासों के स्थान पर ज्ञान पर आश्रित उदार मानवतावाद का विकास हुआ जिसमें विचारों का तथा पूजापद्धति का भेद होते हुए भी जीवन के मूल्यों का समन्वय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की प्रवृत्ति जाग उठी और प्रत्येक मनुष्य को मनुष्य मान कर उसकी बुराई के प्रति तो शत्रुता की भावना रही किन्तु व्यक्ति के प्रति नहीं।

विज्ञान के क्षेत्र में बढ़ते हुए आधुनिकता के चरणों से छात्रों को अवगत कराने के लिए प्रयत्न हुआ कि उनको भी मातृभाषा के माध्यम से सरल रूप में प्रस्तुत किया जाये जिसमें अपूर्व सफलता भी मिली। पश्चिमी देशों में विज्ञान का शिक्षण स्तर ऊँचा इसीलिए है कि अपनी मातृभाषा में बच्चा विज्ञान के मूल सिद्धान्तों को स्वाभाविक उत्सुकता की शान्ति की प्रवृत्ति के कारण ही जान जाता है किन्तु यहाँ तो भाषा के दुर्ग को तोड़ना ही कठिन हो जाता है। गुरुकुल की इस परम्परा को अब सर्वत्र विद्यालयों में अपनाया जाने लगा है किन्तु सरल तथा जीवन में प्रचलित परीक्षणों और उनके निरीक्षण की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में शिक्षण संस्थाओं में नैतिक और धार्मिक शिक्षा तथा उस प्रकार के वातावरण का सर्वथा अभाव है और यह धर्मनिरपेक्षता के नाम पर है। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सम्भवतः यह नहीं है कि धर्म का सर्वथा अभाव अपितु इसका तात्पर्य यही है कि धर्म तथा नैतिकता की शिक्षा इस प्रकार दी जाये कि शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों में मनुष्य धर्म के प्रति आस्था के साथ साथ धर्म सहिष्णुता की भावना उत्पन्न हो। गुरुकुल में धर्म शिक्षा का विशेष पाठ्यक्रम निर्धारित है। उससे अपने धर्म के समुचित ज्ञान पर आश्रित धर्म सहिष्णुता की भावना उत्पन्न होती है। उसमें धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन से दूसरे धर्मों की अच्छाइयाँ सामने आकर सार्वभौम धर्मभावना का विकास होता है। इस धर्म पर ही चरित्र निर्माण आश्रित है जिसके अभाव में सामाजिक पतन अनैतिकता को बढ़ावा देने में सहायक होता है।

अपने धर्म और संस्कृति के समुचित ज्ञान का अभाव या तो मनुष्य को अन्धविश्वासी बना देता है अथवा परानुयायी बना देता है। पर-धर्म को वह अपने पूर्वाग्रहों के कारण पूर्णतया अपना नहीं सकता और अपने विषय में कुछ जानता नहीं। यही कारण है कि आज का नवयुवक भटकता-सा प्रतीत होता है अथवा प्रवाह में बहकर या तो सर्वथा अवसरवादी बन जाता है अथवा विद्रोही। उसे समुचित दिशा का ज्ञान नहीं होता।

यद्यपि यह आवश्यक है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में समय की मांग के अनुसार परिवर्तन किए जा सकते हैं किन्तु उसके मूल आधार तो वही हैं जो ऊपर गिनाए जा चुके हैं जिनमें गुरु-शिष्य का सामीप्य, समाज से दूर सारा समय अपने सर्वतोमुखी विकास में लगाना, शरीर और मन के स्वास्थ्य के साथ चरित्र की पवित्रता तथा अपने धर्म को पहचानते हुए वर्गवाद तथा सम्प्रदायवाद से दूर रहना। यही वर्तमान समाज के लिए आवश्यक बातें अनुभव होती हैं जिनको आगामी समाज और राष्ट्र के कर्णधारों में उद्भूत करने के लिए उनके संस्कारों के परिमार्जन तथा वातावरण प्रदान करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्पष्ट उपयोगिता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का उत्थान और आर्यसमाज

प्रिन्सिपल पी० के० बन्सल

□

स्वतन्त्रता के ३२ वर्ष के पश्चात् भी देश उतना ऊंचा नहीं उठ सका जितना हम समझते थे कि आजादी मिलेगी और हमारे देश में हमारा ही राज्य होगा, हमारी ही योजनाएं होंगी और हम देश से गरीबी और बेरोजगारी को शीघ्र ही दूर कर के गान्धी जी के स्वप्नों के भारत का निर्माण कर सकेंगे। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। क्यों ?

हमारे देश में कुछ लोग ऐसे हैं जो इस संसार को मिथ्या समझते हैं। इस दुनिया में धरा ही क्या है। यदि ऐसा समझ लें तो काम नहीं चलेगा। लोग पुरुषार्थ नहीं करेंगे। फिर तो सब संन्यासी बन जाएंगे। सन्यासियों का बोझ गृहस्थियों पर पड़ेगा, फकीर बढ़ेंगे, ग़रीबी और बढ़ेगी। देश और भी नीचे जाएगा। परन्तु मेरा विश्वास है कि हमारा यह देश जरूर तरक्की करेगा। क्योंकि इस की कुछ विशेष सस्कृति है, कुछ सुन्दर परम्पराएं हैं, कुछ अच्छी बातें हैं जिनसे यह सब देशों का गुरु समझा जाता था।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

हमारा Mental attitude हमारा दृष्टिकोण दूषित है। हम यह समझ लेते हैं कि होगा वही जो होना है। जो भाग्य में लिखा है उसे कोई टाल नहीं सकता। परन्तु यह गलत है। कर्म या पुरुषार्थ से हम भाग्य को बदल सकते हैं। हमारी संस्कृति तो कर्म सिद्धान्त को मानती है कि पिछले अच्छे कर्मों से ही अब सुख मिला है, यदि अब पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो वर्तमान खराब हो जाएगा। यदि पिछले बुरे कामों के कारण दुःख है तो पुरुषार्थ से वर्तमान को सुन्दर बनाया जा सकता है। यह दुर्भाग्य की बात है कि कुछ लोग Corruption से बहुत जल्दी अमीर हो गए। बहुत से ऐसे अमीर लोग हैं जो देखते-देखते करोड़पति बन गए, परन्तु ऐसे लोग सदैव प्रसन्न नहीं रहते, उन्हें रात को सुख की नींद नहीं आती। उन्हें Peace of Mind नहीं। बहुत से देश जो हम से पीछे थे वे आगे निकल गए क्योंकि वहां के लोग पुरुषार्थी थे। विदेशों में लोग ८ से ५ बजे तक काम करते हैं और एक क्षण पहले घण्टी बजाने वाले को कड़ा दण्ड दिया जाता है, क्योंकि यदि किसी फैक्टरी में एक हजार वर्कर काम कर रहे हैं तो उस फैक्टरी के एक हजार मिनट के काम की हानि हो गई, वहां के लोग ऐसा समझते हैं। यह है mental attitude की बात। जो लोग अधिक तरक्की कर जाते है। वे अधिक बुद्धिमान नहीं होते। वास्तव में वे पुरुषार्थ अधिक करते हैं। एक लड़का Merit में आता है दूसरा Second Division में पास होता है। यह जरूरी नहीं कि दूसरे लड़कों की बुद्धि अच्छी नहीं। अन्तर यह है कि पहले विद्यार्थी ने मेहनत अधिक की अतः हमें काम अधिक करना चाहिए और बातें कम।

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्यों का कार्यकाल

चित्र उपलब्ध नहीं है

आचार्य श्री विष्णुमित्र जी
१९१२ से १९२३ तक

चित्र उपलब्ध नहीं है

आचार्य श्री सोमदत्त जी विद्यालंकार
१९२४ से १९४२ तक

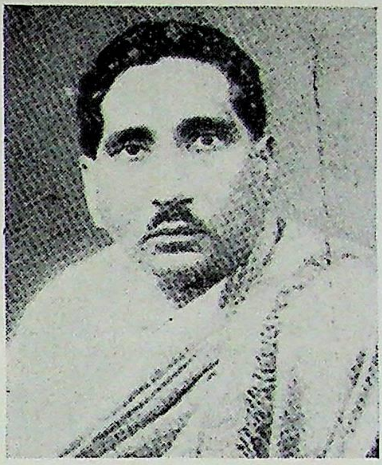

आचार्य श्री प्रियव्रत विद्यालंकार
१९४३ से १९६४ तक

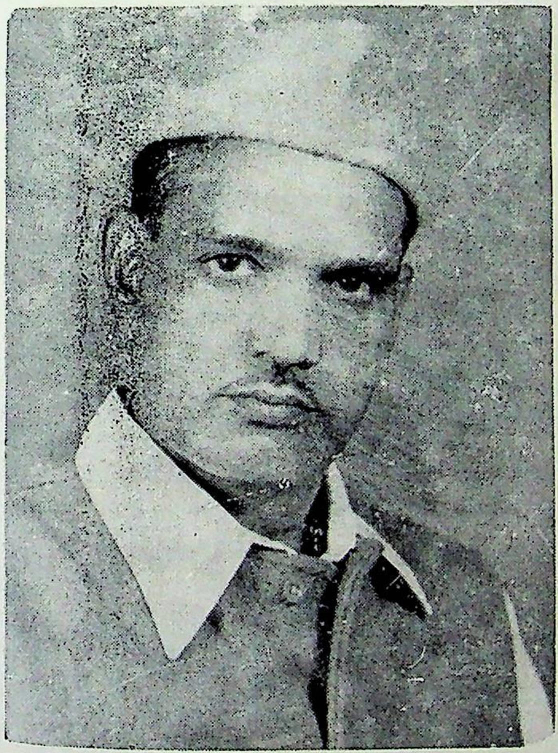

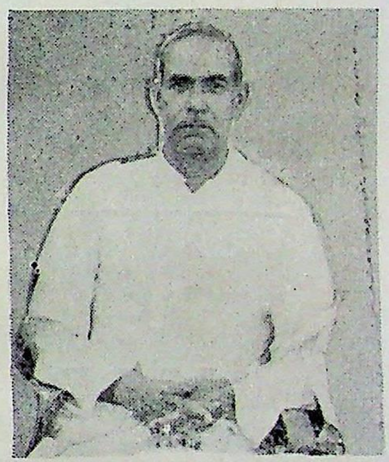

आचार्य श्री राजेन्द्र पाल एम.ए.
१९६८ से १९७३ तक

वर्तमान आचार्य श्री हरिदत्त शास्त्री
१९७६ से अब तक

चित्र उपलब्ध नहीं है

आचार्य श्री विश्वनाथ जी
१९६५ से १९६७ तक

चित्र उपलब्ध नहीं है

आचार्य श्री सत्यव्रत जी एम. ए.
१९७४ से १९७५ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवम्।

बनावट और गति में अद्‌भुत • हीरो की क्वालिटी में चार चांद

हीरो जेट-आनन्दमय सवारी के लिए नए क्षितिज की ओर।

हीरो

भारत की सर्वाधिक बिकने वाली साइकिल बनाने वालों की ओर से

हीरो साईकिल्ज़ प्राइवेट लिमिटेड

हीरो नगर जी. टी. रोड • लुधियाना • पंजाब पिन १४१००३

टेलीफोन—२८०००, टेलैक्स—०३८६-२०५

With best compliments from

MODI RUBBER LIMITED

MODIPURAM

MANUFACTURERS OF MODI CONTINENTAL TYRES

in collaboration with

CONTINENTAL GUMMI-WERKE AKTIENGESELLSCHAFT, WEST GERMANY

Passenger Tyre • Truck Tyre • Tractor Tyre

Light Truck Tyre • Jeep Tyre • A.D.V. Tyre

Tyres • Tubes • Flaps

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : विशिष्ट सम्मतियाँ

□

मैंने गुरुकुल कुरुक्षेत्र देखा। वहां अच्छा कार्य हो रहा है, यह देखकर छात्रों के साथ बातचीत की और आचार्य के साथ विचार-विनिमय किया। मेरी राय से इस गुरुकुल में जो विद्या-दान और शील-संवर्द्धन का कार्य हो रहा है, वह श्रेष्ठ और उन्नतिकारक है। मैं इस संस्था की पूरी सफलता चाहता हूं और भविष्य में इसका काम ज्यादा बढ़े और संस्था प्रतिष्ठा प्राप्त करे।

□ **नरहरि विष्णु गाडगिल**
भू० पू० राज्यपाल, पंजाब,
चंडीगढ़

X X X X

कुछ वर्ष पूर्व मुझे विद्या-विहार कुरुक्षेत्र का निरीक्षण करने का अवसर मिला था। मेरे हृदय पर उस समय जो प्रभाव पड़ा, उससे मैं इस संस्था के उत्तम और उपयोगी कार्य की सराहना करता हूं। ......मेरी शुभ कामना है कि संस्था के व्यवस्थापकों, अध्यापकों, संरक्षकों और विद्यार्थियों का पवित्र आदर्श भगवान पूरा करे।

□ **भीमसेन सच्चर,**
भू० पू० राज्यपाल, आन्ध्र प्रदेश,
हैदराबाद

X X X X

मैंने दो बार गुरुकुल कुरुक्षेत्र का अवलोकन किया। गुरुकुल के प्रबन्ध, ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य तथा संस्था के वातावरण ने मुझे प्रभावित किया। ......मैं इस संस्था की उन्नति और वृद्धि चाहता हूं तथा आशा करता हूं कि स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के इस स्मारक की रक्षा जनता पूरी समझ से करेगी।

□ **अमरनाथ विद्यालंकार**
भू० पू० मन्त्री, शिक्षा-विभाग, पंजाब,
चण्डीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले वर्ष मुझे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में जाने का अवसर मिला था। वैसे तो सभी शिक्षा-केन्द्र मानवता के मन्दिर होते हैं, किन्तु यह गुरुकुल एक ऐसा मन्दिर है, जिसकी पृष्ठभूमि पर केवल महान आत्माओं का आशीर्वाद ही नहीं, अपितु उच्चतम आदर्श भी अंकित है। आर्य-समाज ने शिक्षा प्रसार के निमित्त जो कार्य किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। एक महान आदर्श को लेकर प्रज्वलित किये गये अनेक दीपकों में से एक उज्जवल दीपक यह संस्था है।

□ **यश**
उप-मन्त्री, शिक्षा-विभाग, पंजाब,
चण्डीगढ़

X X X X

गुरुकुल कुरुक्षेत्र से मेरा पिछले कई वर्षों से निकट का सम्बन्ध रहा है। यह संस्था निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। शिक्षा के उच्च स्तर, अनुशासन की सुदृढ़ स्थिति तथा शिक्षण, भोजन और आवास की सुन्दर व्यवस्था के कारण इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। इस संस्था में परम्परागत गुरुकुलीय पूर्वाग्रहों तथा प्रतिबद्धताओं को त्याग कर युगानुरूप जो मध्यम मार्ग अपनाया है, वह अन्य गुरुकुलों के लिए पथ-प्रदर्शक हो सकता है। विश्वास है, श्री हरिदत्त शास्त्री जैसे कुशल, कर्मठ तथा अनुभवी आचार्य के प्रशासन में यह संस्था उन्नति के उच्चतम शिखरों को छू सकेगी।

□ **प्रा० रामनिवास 'मानव'**
अध्यक्ष, प्रगतिशील हरियाणा साहित्यकार संघ
अम्बाला शहर

□

(पृष्ठ ४४ का शेष)

हम लोग rights की बातें करते हैं। यह चाहिए, वह चाहिए, ये demands हैं, ये rights हैं। यह भी किसी को कहते सुना है कि हमारी ये duties हैं। महर्षि दयानन्द, महात्मा गान्धी के प्रयत्नों के बावजूद भी हमारे देश से जात-पात की बीमारी दूर नहीं हुई। मनु महाराज ने कर्म और स्वभाव के आधार पर चार वर्ण बनाए थे—वैश्य, क्षत्री, ब्राह्मण और शूद्र।

परन्तु कुछ स्वार्थी पौराणिकों ने इसे जन्म के आधार पर मानना सिखा दिया। १९०१ की जन गणना के आधार पर देश में २३७८ बिरादरियाँ थी।

आर्यसमाज एक महान् सांस्कृतिक आन्दोलन था, है, रहेगा। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है कि यह जात-पात में विश्वास नहीं करता। यह एक व्यक्ति के उत्थान में विश्वास नहीं करता सभी का उत्थान समान रूप से चाहता है। सचमुच यदि हम आर्य समाज के सपनों के अनुरूप भारत बनाना चाहते हैं तो हमें महर्षि के सपनों को, सिद्धान्तों को, नियमों को अपनाना पड़ेगा और तभी हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा साकार कर सकेंगे। मेरी सभी आर्यों से यही अपील है कि वे देश के उत्थान के लिए सभी प्रकार की नैतिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक संकीर्णतायें छोड़कर अपना सर्व स्वदेश हित अर्पित कर दें। यह काम आर्य समाज ही कर सकता है क्योंकि यही समाज है जो सर्वहितकारी नियमों के पालन में विश्वास करता है।

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-सिन्धु : सत्यार्थ प्रकाश

सारस्वत मोहन 'मनीषी' एम० ए०
संपादक—आर्य सन्देश (साप्ताहिक) १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११० ००१

□

विष पीकर अमृत बाँटा यह उस ऋषि का विश्वास है।
सभी समस्याओं का हल अपना सत्यार्थ प्रकाश है।

मजहब के चेहरों के दाग़ दिखाने वाला दर्पण है।
वैदिक धर्म, सत्य के सम्मुख इसका पूर्ण समर्पण है।
वेद, उपनिषद, आर्य ग्रन्थ का पूर्ण निकष या सार है।
इसका लक्ष्य नहीं है नफरत, मानवता से प्यार है।
सत्यं शिवं सुन्दरम् का अनुपम निर्दोष उजास है।
सभी··· ··· ···

सस्ता होने पर भी यह तो बहुत अधिक अनमोल है।
ठीक किसी ने कहा कि चौदह गोली का पिस्तौल है।
लेकिन नहीं मारता सबको देता जीवन दान है।
एक बार पढ़ ले तो दानव बन जाता इन्सान है।
घोर निराशा के पतझड़ में आशा का मधुमास है।
सभी··· ··· ···

दिग्दर्शन है इसमें केवल सार्वभौम सिद्धान्त का।
वसुधा ही परिवार, जिक्र है नहीं व्यक्ति या प्रान्त का।
पाखण्डों के सर्प मारने सच्चाई का मोर है।
रूढ़िवादिता की काली रजनी में वैदिक भोर है।
पिंजरे में बंदी पंछी की खातिर यह आकाश है।
सभी··· ··· ···

इसको पढ़कर जाने कितने सही राह पर आये हैं।
कितने गूंगे बहरों ने भी वैदिक मंत्र गुंजाये हैं।
इसके दीवाने कितने जो बिना पिए ही झूम गए।
हँसते-हँसते फाँसी के फंदों को निर्भय चूम गए।
इसके कारण आर्यजनों का गौरवमय इतिहास है।
सभी··· ··· ···

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव को देवता बनाने की यह सुन्दर सीढ़ी है।
इसको पढ़ आदर्शवान हो सकती सारी पीढ़ी है।
नहीं पथिक, रास्ता नहीं यह निर्देशक या मंजिल है।
हर डूबते सफीने खातिर सचमुच यह तो साहिल है।
गागर में सागर है यह तो कंकर में कैलाश है।
सभी··· ··· ···

हर प्यासे अधरों की खातिर यह अमृत का बादल है।
दुखी हृदय की खुशी निहित, सूनी आँखों का काजल है।
समय शीश पर सबसे सुन्दर गौरव का शुभ चावल है।
मन का मैल काटने को यह ज्ञान रूप गंगाजल है।
सुधा-सिन्धु है छक-छक पीले जिसको जितनी प्यास है।
सभी समस्याओं का हल ऋषि का सत्यार्थ प्रकाश है।

⊙

–डोली बनादी तूने–

सारस्वत मोहन 'मनीषी' एम० ए०

एक जंगल में नई बस्ती बसादी तूने।
वक्त-पत्थर पे सफल जोंक लगादी तूने।
लोग मानें या न मानें था करिश्मा सचमुच;
अर्थियाँ जितनी चलीं डोली बनादी तूने।
सच तो ये है कि किया काम निराला ऐसा,
आग पानी में दयानन्द लगादी तूने।
रात किया दिन को भगा ऐसे नशे से नफरत;
जिसका टूटे न नशा ऐसी पिलादी तूने।
तेरी निष्ठा का कोई मूल्य चुकाये क्योंकर;
बुझती हुई वेद-शमां फिर से जलादी तूने।
चाँद, सूरज व सितारे थे कभी कैद जहाँ;
ऐसे अंबर में पुनः धूप उगादी तूने।
जिनके पाँवों में न पायल थी न बिन्दिया मुख पर;
ऐसी अबलाओं की फिर मांग सजादी तूने।
ढूंढ़ इतिहास को देखा, न मिला तुझ जैसा;
अपने कातिल को निराली ही सजा दी तूने।
भूल पायेंगी न सदियाँ ओ मनीषी! तुमको;
गर्दनें गर्व की पैरों में झुकादी तूने।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृक्षादि में जीव का अस्तित्व

आचार्य महामुनि शास्त्री,
गुरुकुल भैंसवाल कलाँ, सोनीपत (हरि०)

आचार्य महामुनि आधुनिक युगीन दार्शनिक चिन्तक हैं। इनकी 'वृक्षादि में जीव का अस्तित्व' विषय पर एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। इस पर इन्होंने शास्त्रार्थ किए तथा सिद्ध किया कि जीव का अस्तित्व वृक्षादि में भी है। मैं आशा करता हूं कि इस महिमामय लेख को पाठक वृन्द विशेष चिन्तन के साथ पढ़कर किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे। —सम्पादक

मैं अपनी बुद्धि तथा शास्त्राध्ययन के अनुसार इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि वृक्षादि वनस्पति जगत् में भी मनुष्यादि प्राणी जगत् के अनुसार जीवात्मा विद्यमान है।

जिस प्रकार मनुष्य और पशु आदि में उनके शरीरों का अधिष्ठाता जीवात्मा है उसी प्रकार वृक्षादि में भी है। जिस के कारण उनकी उत्पत्ति स्थिति आदि कर्म होते हैं। स्वपक्ष-मण्डन के साथ परपक्ष का खण्डन भी आवश्यक होता है। अतः 'नास्तित्व' पक्ष के पोषक (साधक) वचन युक्ति आदिका प्रथम प्रतिपादन करता हूं।

१. **पूर्वपक्ष का प्रथम हेतु (शास्त्र वचन) युक्ति** :—न्याय दर्शन का सूत्र है—"इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानानि-आत्मनो लिङ्गानि" (१-१-१०)। क्योंकि आत्मा (जीव) एक सूक्ष्म-आकार रहित द्रव्य है, उसका बाह्य इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं हो सकता इसलिए उसका अनुमान प्रमाण से ज्ञान किया जाता है। क्योंकि गुणों-से गुणी द्रव्य का ज्ञान (अनुमान) हुआ करता है। इसलिए जहां इच्छादि गुणों का दर्शन होता है वहां ही आत्मा की सत्ता है। जहां इन गुणों की प्रतीति नहीं होती वहां जीव नहीं माना जा सकता।

२. **द्वितीय हेतु (शास्त्र वचन) युक्ति**—"चेष्टेन्द्रियाथश्रियः शरीरम्" (न्याय दर्शन १-१-११) "इष्टानिष्ट प्राप्ति परिहारानुकूलो व्यापारः चेष्टा" इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के त्याग के अनुकूल कर्म को चेष्टा कहते हैं, वह जिसके आश्रय से होती है उसे शरीर कहते हैं। इस प्रकार का कोई कर्म (व्यापार) वृक्षादि में नहीं दीखता, इसलिए इन में आत्मा अर्थात् जीव नहीं माना जा सकता। तथा जिसके आश्रय (आधार) से आंख कान आदि इन्द्रियां अपना अपना कार्य करती हैं वह शरीर है। क्योंकि वृक्षादि में इन्द्रियों का अभाव है इसलिये उनमें जीव भी नहीं है। इसी प्रकार जिस स्थान पर इन्द्रियों द्वारा विषय गृहीत होने पर सुख व दुःख का अनुभव किया जाता है उसको ही शरीर कहते हैं। वृक्षादि में इस प्रकार के सब सुख दुःख के अनुभव का अभाव है। इसलिए उनमें जीव का होना भी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

३. **तृतीय हेतु** :—वृक्षादि में जीव स्वीकार करने पर उनको काटने पीटने खाने आदि पर उनको पीड़ा अर्थात् दुःख अनुभव होगा—इसलिए हिंसा जन्य पाप होगा। जीव न मानने पर कोई भी दोष नहीं आता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. **चतुर्थ हेतु** :—यदि वृक्षादि में भी जीव माना जावेगा तो उनके फल पत्रादि का भक्षण भी मांस रुधिर आदि के समान त्याज्य होगा ।

५. **पञ्चम हेतु** :—वृक्षादि को जड़ कहा गया है जड़ नाम निर्जीव पदार्थ का है सजीव का नहीं अतः वृक्षादि निर्जीव हैं ।

६. **षष्ठ (छठा) हेतु**—मनुष्यादि सजीव प्राणियों में जो सन्तति होती है वह स्त्री और पुरुष के समागम से स्त्री के गर्भाशय में होती है और दोनों प्रकार की है अर्थात् पुरुष भी स्त्री भी, परन्तु वृक्षादि में ऐसा नहीं होता, उनमें तो नर वृक्षादि से नर, मादा वृक्षादि से मादा ही उत्पन्न होती हैं । जैसे आम्र वट पीपल आदि से आम्रादि पुंलिङ्गी-तथा शिशमा (शीशम) जामुन, पीपली, हरित की, (हरड़) आदि स्त्री जाति के वृक्षों से तत्सदृश स्त्रीलिङ्गी सन्तति उत्पन्न होती है । अतः इनमें जीव नहीं माना जा सकता ।

इति पूर्वपक्षः ।

अब इनका यथाक्रम उत्तर दिया जाता है ।

१. प्रथम हेतु शास्त्रवन द्वारा प्रतिवादी आत्मा के इच्छादि गुणों के अभाव से वृक्षादि स्थावरों को सिद्ध करना चाहता है । जो ठीक नहीं है क्योंकि न्याय शास्त्र का लक्ष्य (उद्देश्य) प्रमाणादि सोलह (१६) पदार्थों का प्रतिपादन करना है । इसलिए न्याय शास्त्र के प्रथम सूत्र की उत्थानिका में वात्स्यायन मुनि लिखते हैं—"प्रमाता प्रमाणं प्रमेयं प्रमितिरिति चतस्टषु चैवं विधासु अर्थतत्वं परिसमाप्यते" इसका भाव है कि –प्रमाता-प्रमाण प्रमेय और प्रमिति (ज्ञान) इन चारों में न्याय दर्शन का प्रतिपाद्य-विषय आ जाता है । अर्थात इन चारों का यथार्थ ज्ञान कराना न्याय शास्त्र का उद्देश्य है । तदनुसार पूर्वोक्त सूत्र में प्रमाणों द्वारा प्रमेय का ज्ञान करने वाले प्रमाता जीवात्मा का लक्षण किया गया है ।

प्रमाता में क्रमशः इच्छादि गुणों का होना आवश्यक है । वृक्षस्थ आत्मा प्रमाता नहीं है क्योंकि उसके पास प्रमा (यथार्थ ज्ञान) के साधन ज्ञानेन्द्रियों और अन्तःकरण (मन) का अभाव है ।

जैसे अनयत्त मूर्छित (बेहोशी) वा सुषुप्तावस्था में मनुष्य जड़वत् (पृथिव्यादि वत्) होने से इच्छादि गुणों के अभाव से प्रमाता नहीं है किन्तु आत्मा को शरीर में तब भी स्वीकार किया जाता है । तद्वत् वृक्षादि में भी स्वीकार करना चाहिए । क्योंकि शरीर में जीव को सिद्ध करने वाले जहां इच्छादि गुण कारण है वहां प्राण अपान आदि कर्म भी कारण है ।

२. प्रतिपक्ष के हेतु भूत दूसरे शास्त्र वचन का उत्तर—इस विषय में निवेदन है कि न्याय दर्शनकार ने अपने प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से प्रमाता जीव का लक्षण किया है जो सर्वथा उपयुक्त है । परन्तु अन्य शास्त्र सांख्य वेदान्त आदि की दृष्टि से 'शरीरं श्रयतेः' अर्थात् जो जीव का आश्रय=आधार अर्थात् ठहरने का (निवास का) घर है वह शरीर कहाता है, इसका खण्डन तो उससे नहीं हो सकता, अर्थात् सांख्य दर्शन आदि शास्त्र अपने लक्ष्य (प्रतिपाद्य विषय) की दृष्टि से वृक्षादि को शरीर कह सकते हैं ।

३. प्रतिपक्ष के तृतीय हेतु का उत्तर—वृक्षादि की सजीवता से उनको काटने पीटने आदि से पीड़ा होगी ऐसा मानना अज्ञानता है । क्योंकि सुख व दुःख उन्हीं जीवों को हो सकता है जिनकी वृत्ति सब अवयवों के साथ हो, क्योंकि सांख्य दर्शन में कहा है—"पञ्चावयवयोगात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसंवित्तिः" संवितिः = संवेदन अनुभव होना, सुख संविति सुख का अनुभव, सुख शब्द से दुःख का भी उपलक्षण से ग्रहण कर लेना चाहिये, क्योंकि सुख दुःख का सहचारी है। अर्थात् लौकिक सुख दुःख परस्पर सम्बद्ध हैं।

जब पाँचों इन्द्रियों का अपने-अपने पाँचों विषयों के साथ सम्बन्ध होता है तभी सुख वा दुःख का अनुभव होता है। जैसे बधिर मनुष्य को गाली प्रदान से दुःख व प्रशंसा वचनों से सुख नहीं होता, अन्धे को सुरूप या कुरूप पदार्थ की प्राप्ति से तज्जन्य सुख व दुःख का अनुभव नहीं होता, शून्य बहिरी वाले को स्पर्श जन्य सुख दुःख, पिन्नस रोग वाले को सुगन्ध से हर्ष व दुर्गन्ध से घृणा, शून्य जिह्वा वाले को रसास्वादन जन्य सुख व दुःख की प्राप्ति नहीं हो सकती। उसी प्रकार वृक्षादि स्थावर शरीर वाले जीवों को सुख व दुःख की प्राप्ति नहीं हो सकती। क्योंकि वहां प्राप्ति के साधन नहीं हैं। वृक्षादि का जीव अत्यन्त मूर्च्छित व महा सुषुप्ति अवस्था में होता है। जैसे—मनुष्यों को जब वे सुषुप्ता अवस्था में व मूर्च्छित होते हैं, तब उनको किसी प्रकार के सुख व दुःख की प्राप्ति नहीं होती, क्योंकि शरीर के भीतर होते हुए भी उनका शरीर के बाह्य अवयवों के साथ उस समय सम्बन्ध नहीं रहता।

४. चतुर्थ हेतु का उत्तर :—पशु आदि की सजीवता में और वृक्ष वनस्पति औषधि आदि की सजीवता में भेद है। पशु आदि में ज्ञानेन्द्रिय और मन का सम्बन्ध होने से सुख दुःख, काम-क्रोध, लोभ, मोह भयादि का अनुभव जीव करता है। वृक्षादि में ज्ञानेन्द्रियों के व मन के अधिष्ठाता भाव से सुख दुःख प्राप्ति व कामादि विकारों का हो सकना सम्भव नहीं है। प्राणियों को निरर्थक पीड़ा देने व प्राणों से विमुक्त करने हिंसा जन्य पाप होता है। उनके यथा योग्य संवर्धन पालन पोषण से पशु आदि को सुख होता है, तथा उनसे यथा योग्य उपकार लेने से मनुष्यों को भी सुख प्राप्त होता है, इसलिए उपकारक गवादि प्राणियों की रक्षा करने से पुण्य होता है। मांस तामस भोजन होने से मनुष्यों के लिए अभक्ष्य है।

पशु आदि प्राणियों की व्यर्थ व स्वार्थवश हिंसा से मनुष्य का स्वभाव क्रूर बन जाता है। जिससे कोमलता, दया, सहानुभूति, सहिष्णुता, पर दुःख कातरता आदि सद्गुणों की न्यूनता हो जाती है। मनुष्य स्वार्थी बन जाता है। मनुष्य आध्यात्मिक मार्ग से भ्रष्ट हो जाता है। इत्यादि कारणों से मांस भक्षण तो सर्वथा निषिद्ध है।

वृक्षादि के छेदन-भेदन आदि से उपर्युक्त दोष सम्भव नहीं। भक्ष्याभक्ष्य का विचार वनस्पति जगत् के विषय में भी है, परन्तु वह उनकें गुणावगुण के भेद के कारण है।

प्रतिपक्ष के पञ्चम हेतु—अर्थात् वृक्षादि को जड़ कहा गया है, जड़ नाम निर्जीव का है सजीव का नहीं, अतः वृक्षादि निर्जीव है। इसका उत्तर—

प्रतिवादी का उक्त कथन समुचित नहीं है। क्योंकि जड़ और चेतन का लक्षण स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इस प्रकार किया है—

जड़—"जो वस्तु ज्ञानादि गुणों से रहित है उसे जड़ कहते हैं", इस लक्षण के अनुसार परमाणु से लेकर पृथ्वी पर्यन्त जगत् जड़ कहा जावेगा तथा वृक्षादि स्थावर और गर्भस्थ शिशु, अण्डा और अत्यन्त मूर्च्छित व सुषुप्त अवस्था को प्राप्त मनुष्यादि भी जड़ कहे जावेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. प्रतिवादी के षष्ठ हेतु का उत्तर :—मनुष्यादि प्राणियों का 'सजीव' विशेषण व्यर्थ क्योंकि प्राणी, चेतन चर ये समानार्थक शब्द हैं तथा अप्राणी, जड़, अचर ये भी एकार्थक हैं। इसलिए प्राणी तो सभी सजीव ही होते हैं। अप्राणी दो प्रकार के हैं, सजीव भी, निर्जीव भी अप्राणी (जड़) वृक्षादि स्थावर हैं और निर्जीव अप्राणी (जड़) पृथिव्यादि परमाणु पर्यन्त जगत् है।

सभी प्राणी माता-पिता के समागम से ही उत्पन्न होते हैं, यह नियम नहीं है। माता पिता के समागम किये बिना भी तामस अणुओं के योग से उष्मज, सुरसी, ढोरा, खपरा आदि तथा घास फूस अन्नादि के गलने सड़ने से कृमि आदि प्राणी उत्पन्न हो जाते हैं, उनमें कोई लिङ्ग विशेष नहीं होता। इसी प्रकार मांस अन्नादि के सड़ने से उत्पन्न होने वाले कृमियों में भी कोई लिङ्ग विशेष नहीं होता। इसलिए प्राणियों का गर्भाशय में ही उत्पन्न होना, माता पिता के संयोग से ही होना, उनमें पुलिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग विशेष का होना आदि नियम (व्याप्तियां) सब अनैकान्तिक अर्थात् व्यभिचार सहित हैं। इसलिए ये सब हेत्वाभास हैं अर्थात् वास्तव में अहेतु हैं।

इसी प्रकार वृक्षों में भी कोई लिङ्ग विशेष नहीं है। ये सब भिन्न-भिन्न जातियां हैं जो अपने-अपने बीज विशेष से उत्पन्न होती हैं। शब्दमात्र में लिङ्ग होने से तत् शब्द वाच्य वस्तु भी तल्लिङ्गी प्रतीत होती है, अर्थात् शब्द में ही लिङ्ग है वस्तु में लिङ्ग भेद नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन में यह दर्शाया गया है कि जीव कहां-कहां है, और उनमें जीव होने की क्या पहचान है। औषधि, वनस्पति आदि में प्राण, अपान आदि के कारण रसाभिसरण है जो आत्मा का लिङ्ग है। पशु आदि प्राणियों में रसाभिसरण अर्थात् रुधिराभिसरण के साथ-साथ अन्तःकरणकाकार्य भी दीखता है (जाना जाता है) जो आत्मा होने का लिङ्ग है पशु आदि प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य में आत्मा प्रकटतम है। मनुष्य में मनन शीलता, विवेक विज्ञान है। वह अपने ज्ञान को वाणी द्वारा दूसरों पर प्रकट कर सकता है। आगामी काल के लिए त्रिवार्षिक, पञ्चवार्षिक आदि योजनाएं बना सकता है। धर्मा धर्म को जानता है। लोक परलोक को समझता है, योग साधनों से मुक्त होकर मोक्ष की भी अभिलाषा करता है। किन्तु पशु आदि प्राणी अपने जीवन निर्वाहार्थ सहज ज्ञान सम्पन्न हैं। वे विवेक से अपने ज्ञान को बढ़ा नहीं सकते, स्वहितार्थ भविष्यत् कालिक योजनाएं नहीं बना सकते। अपने मनोभावों को वाणी द्वारा मनुष्यवत प्रकट नहीं कर सकते। इस प्रकार औषधि वृक्षादि जड़ में पशु पक्षी आदि जंगमों में और मनुष्यों में आत्मा (जीव) अपने लक्षणों से क्रमशः प्रकट प्रकटतर और प्रकटतम हैं।

इस प्रकार शास्त्रों में वृक्षों में जीव साधक अनेक प्रमाण हैं, जो विस्तार भय से नहीं लिखे जा सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल की विशेषताएं

१. गुरुकुल कुरुक्षेत्र अपने जलवायु की उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है। कुल पिता श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी अपनी अस्वस्थ अवस्था में स्वास्थ्य-सुधार तथा जलवायु परिवर्तन के लिए यहां ही आकर विश्राम लिया करते थे।

२. ताजी शाक-सब्जी तथा शुद्ध दूध-इस गुरुकुल की अपनी विशेषता है।

३. फल तथा शाक-सब्जी ताजी मिल सके-अतः गुरुकुल का अपना एक बाग है जिसमें ऋतु अनुसार सब प्रकार की सब्जी उत्पन्न की जाती है।

४. शुद्ध दूध मिल सके-अतः गुरुकुल की अपनी एक गौ-शाला है।

५. आजकल के समय में, जबकि शुद्ध दूध और घी के दर्शन भी दुर्लभ हो रहे हैं गुरुकुल में शुद्ध दूध देने तथा घृत देने का उसी तरह यत्न किया जा रहा है।

६. निर्विघ्न शान्त वातावरण गुरुकुल की सबसे बड़ी विशेषता है।

७. शिक्षा का प्रबन्ध योग्य उपाध्यायों के अधीन है, जिनमें बाहर के ग्रेजुएट तथा शास्त्री अध्यापकों के अतिरिक्त बड़ा भाग गुरुकुल के स्नातकों का है।

८. ब्रह्मचारियों के नियन्त्रण तथा सदाचार की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

९. राजकीय विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले अंग्रेजी—गणित—विज्ञान (साइंस) इतिहास, भूगोल, ड्राइंग आदि सभी विषय तो यहां पढ़ाए जाते ही हैं इनके अतिरिक्त यहां संस्कृत तथा धर्मग्रंथों की भी विशेष रूप से शिक्षा दीक्षा दी जाती है। इस प्रकार यहां प्राच्य तथा पाश्चात्य दोनों प्रकार के ज्ञान-विज्ञानों का सुन्दर समन्वय होता है।

१०. सब के साथ समान व्यवहार रखा जाता है चाहे वह राजा का पुत्र हो या रंक का। चाहे वह उच्च जाति का हो या छोटी जाति का। गुरुकुल में बिना भेद भाव के सब समान रूप से रहते हैं।

११. ब्रह्मचारी आश्रम में भी सदा अध्यापकों के निरीक्षण में रहते हैं।

१२. शिक्षा हिन्दी माध्यम द्वारा दी जाती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गुरु का विद्यार्थी के साथ घनिष्ठ सम्पर्क, बालक का निरन्तर एक शुद्ध वातावरण में निवास, मातृभाषा द्वारा शिक्षा का आधार तथा दृष्टि कोण, अपनी सभ्यता-परम्परा एवं आचार-विचार तथा आहार विहार की मर्यादाओं का पालन करना आदि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के मूलभूत तत्व हैं। इसलिये शिक्षा तब तक राष्ट्र के लिए हितकर नहीं हो सकती जब तक कि उसके प्रवर्तकों का दृष्टिकोण ऊपर बताए गये इन आदर्शों से प्रेरित न हो। क्योंकि गुरुकुल पद्धति में शिक्षित बालक ही अपनी प्राचीन सभ्यता, अपने पुरखों और अपनी परम्पराओं पर श्रद्धा तथा विश्वास रखते हैं। इसीलिए जीवनोपयोगी शिक्षा प्राप्त करके परिवार के साथ साथ वह राष्ट्र का भी एक अच्छा अंग सिद्ध हो सकता है ये सब विशेषताएं गुरुकुल कुरुक्षेत्र में बाहुल्येन विद्यमान हैं। अतः उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति में यह गुरुकुल अग्रणी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल का इतिहास

उद्देश्य :–

विद्वानों के अनुसार खाना, पीना, सोनादि क्रियाओं में तो मनुष्य पशु का समान धर्मा है। इन दोनों में विभेदक तत्त्व एक धर्म या विवेक ही ऐसा है जो दोनों को परस्पर पृथक् करता है। इस धर्म रूप विवेक का ज्ञान केवल सच्छिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। उत्तम शिक्षा ग्रहण करने से ही मनुष्य का आचरण उत्तम होता है। विद्वान् और सदाचारी मनुष्य ही देवता या विवेकी की संज्ञा प्राप्त करते हैं। क्योंकि शिक्षा ही विद्यार्थी का शारीरिक— मानसिक—और आत्मिक विकास करके उसे उत्तम नागरिक बनाती है। इसलिए मनुष्य जीवन के लिए जहां शिक्षा आवश्यक है वहीं शिक्षा का मनुष्य को सदाचारी तथा धर्मात्मा बनाने वाली होना भी आवश्यकत्वेन अपरिहार्य है। अन्यथा उल्टी शिक्षा का परिणाम तो अद्यत्वे स्कूल कालिजों में किसी से भी नहीं छिपा है।

शिक्षा को सफल बनाने के लिए जिस प्रकार गुरु शिष्य का सान्निध्य अत्यन्त आवश्यक है। उसी प्रकार अपनी भाषा, अपना वेश, अपना भोजन-छादन, और अपनी संस्कृति की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। इनके अतिरिक्त ब्रह्मचर्य का पालन कराना, परिश्रमी दृढ़ अध्यवसायी बनाना, धर्मात्मा तथा सच्चे अर्थों में वैदिक धर्म के विद्वान् पैदा करना, राष्ट्र भाषा के माध्यम से शिक्षा देना एवं सादा जीवन तथा उच्च विचार की प्राचीन प्रथा का प्रचार करना आदि भी सच्छिक्षा के उद्देश्य के अन्तर्गत ही आते हैं।

इसी प्रकार की शिक्षा के उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के लिए ही महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में गुरुकुलों की स्थापना को आवश्यक घोषित किया। इन्हीं उद्देश्यों को लक्ष्य में रख कर गुरुकुलों के आद्यप्रवर्तक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भी अपना सर्वस्व त्याग करके गुरुकुलों की स्थापना की।

स्वामी जी द्वारा प्रदर्शित शुभ मार्ग पर स्वयं तथा औरों को भी चलाने के नेक उद्देश्य से ही सम्वत् १९६६ में थानेश्वर के रईस दान-वीर आर्य लाला ज्योति प्रसाद जी के हृदय में यह शुभ संकल्प पैदा हुआ कि स्वामी जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी की एक शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के रूप में इस धर्म-क्षेत्र कुरुक्षेत्र में भी स्थापित हो। कृत-भूरि-परिश्रम लाला जी के अनथक प्रयास के परिणाम स्वरूप ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्वीकृति मिल जाने पर लाला जी ने कन्थला कलां गाँव का अपना सारा भू-भाग (१०४८ बीघा जमीन) तथा दस हजार रुपये नकद समर्पण कर १ वैशाखी सम्वत् १९६९ की शुभ तिथि में पुण्य श्लोक तपः पूत स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर कमलों से इस गुरुकुल की स्थापना करवाई। गुरुकुल की आधारशिला रखते हुए भाव विह्वल अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने हृदय के कोमल उद्गारों को निम्न शब्दों में प्रकट किया—"जिस धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि में एक दिन भारत भूमि के विनाश का बीज बोया गया था उसी भूमि में आज यह भारत की उन्नति का बीज बोया गया है। मंगलमय भगवान् करे कि इस ज्ञान तरु से ऐसे सुगन्धित फूल उत्पन्न हों जो भारत भूमि को फिर से अपनी पुरानी उन्नतावस्था में लाने में सहायक हों।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थापना के अनन्तर लाला ज्योति प्रसाद जी के तथा उनके परम मित्र लाला भगीरथ लाल जी के दृढ़ प्रयासों से यह गुरुकुल उनके जीवन काल में ही अपने यौवन को प्राप्त कर चुका था। सन् १९१४ में लाला ज्योति प्रसाद जी दिवंगत हो गये। तब मानो उनके वियोग को न सहन करते हुए उनके अभिन्न-हृदय मित्र लाला भगीरथ लाल जी भी उनके पीछे-पीछे कुछ ही काल के पश्चात् समस्त कुलवासियों को रोता हुआ छोड़ कर चल दिये। किन्तु अपने जीवन काल में ही लाला ज्योतिप्रसाद जी ने गुरुकुल रूपी एक ऐसा कल्प वृक्ष रोप दिया था जो कि उनके नश्वर भौतिक शरीर के नष्ट होने पर भी सृष्टि-पर्यन्त उनकी पुण्य कीर्ति को आलोकित करने में समर्थ है।

इन दोनों महापुरुषों के अकाल-कालकवलित हो जाने पर मुख्याधिष्ठाता के रूप में लाला नौबत राय जी ने तथा आचार्य के रूप में पण्डित विष्णु मित्र जी ने गुरुकुल का कार्य भार वहन किया। दोनों महानुभावों के प्रगाढ़ परिश्रम से संस्था ने यथा-शक्ति उन्नति की। मुख्याधिष्ठाता लाला नौबत राय जी के स्वर्गवासी होने के बाद तथा उनके साथ ही विष्णु मित्र जी द्वारा भी आचार्य पद का त्याग कर देने के बाद गुरुकुल का कार्यभार गुरुकुलीय स्नातक पंडित सोमदत्त जी विद्यालंकार के योग्य कन्धों ने सम्भाला। इन्होंने भी यथाशक्ति तथा यथामति संस्था को उन्नति की ओर प्रेरित किया। सम्वत् १९८५ में इनके चले जाने के बाद लाला दीवान चन्द रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर अम्बाला ने निःस्वार्थ भाव से संस्था को चलाया। उनके समय में इस संस्था ने पर्याप्त उन्नति की। सन् १९४१ तक यह संस्था अष्टम क़क्षा तक केवल माध्यमिक कक्षाओं के रूप में ही चलती रही।

अप्रैल १९४२ से इस संस्था का भार आचार्य प्रियव्रत जी विद्यालंकार ने सम्भाला। जो आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता दोनों पदों पर युगपत् कार्य करते रहे। इनके आने के बाद इन्होंने संस्था को उच्च विद्यालय के रूप में (हाई स्कूल) चलाना प्रारम्भ किया। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्यों के इतिहास की परम्परा में आचार्य प्रियव्रत जी का कार्य-काल ही सर्वाधिक रहा है। इनके समय में ही संस्था ने उच्च विद्यालय रूप आन्तरिक उन्नति के साथ-साथ भवन निर्माण आदि भौतिक उन्नति को भी प्राप्त किया। इसी प्रकार ट्यूबवैल, पुष्पोद्यान, उपवन तथा स्नानागार आदि आधुनिक उपकरण भी इन्हीं महनीय विभूति की परिश्रान्ति का फल है।

इसी प्रकार पं० प्रिय व्रत जी के कार्यकाल के अनन्तर श्री विश्वनाथ जी के आचार्यत्व में भी गुरुकुल ने अधिकाधिक उन्नति की। इनके चले जाने के बाद गुरुकुल के आचार्य पद को श्री राजेन्द्र पाल जी ने विभूषित किया। इन्होंने पुष्कल द्रव्य-राशि-संग्रह करके संस्था को और आगे बढ़ाया। इनके संरक्षण में ही गुरुकुल में पंखे आदि आधुनिक विद्युच्चालित व्यजन का आगमन हुआ। काल क्रम से इनके बाद आचार्य पद का भार श्री सत्यव्रत जी ने धारण किया। किन्तु दुर्भाग्यवश इनको गुरुकुल में निःस्वार्थ सेवा करने का सुअवसर कम ही मिल सका। वस्तु स्थिति ये है कि आचार्य प्रिवव्रत जी के बाद में गुरुकुल में कोई भी आचार्य स्थिर नहीं रह सका। इसी अस्थिरता का परिणाम इस दौरान गुरुकुल में पर्याप्तरूपेण अपेक्षित उन्नति का अभाव है।

किन्तु महान् हर्ष का विषय है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्यों के इतिहास की परम्परा में वर्तमान आचार्य श्री हरिदत्त जी शास्त्री एक ऐसे महाभाग कर्मठ व्यक्तित्व वाले आचार्य आये हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्होंने अपने अब तक के थोड़े से कार्यकाल में ही संस्था को चार चाँद लगा दिये। कर्ज से डूबे हुए तथा अनुशासन रहित गुरुकुलीय वातावरण को इन्होंने अपने कुशल प्रशासन के कारण सुव्यवस्थित कर अपनी असीम सुचिर कार्य-योग्यता-सम्पादन का परिचय दिया है। इन्हीं के संरक्षण में गुरुकुल में पहली बार नूतन-नूतन आधुनिक यन्त्र तथा सुविधाएं गोबर गैस प्लांट, शौचालय तथा नवीन भवन निर्माण आदि के रूप में विकसित हुई हैं। विकास के इन कार्यों में आचार्य के साथ-साथ गुरुकुल के माननीय ज्ञानवान भण्डारी श्री ज्ञान सिंह जी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें यद्यपि शौचालय की तो प्रारम्भ में ही आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। किन्तु अद्यत्वे तो चारों ओर बस्तियों के बस जाने के कारण उसकी आवश्यकता आत्यन्तिक हो चुकी थी। किन्तु यह कार्य सहज साध्य नहीं था। इस में एक लाख रुपये के लगभग खर्च आया है। जिसका श्रेय अथक परिश्रमी वर्तमान आचार्य को जाता है। इन्हीं के सुचिन्तित निरीक्षण में यह संस्था दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है। कुशल अनुशासक होने के कारण ही इन्होंने अपने सहकर्मी अध्यापक वृन्द तथा कर्मचारी वृन्दारक के साथ मिल कर गुरुकुल के इतिहास में पहली बार छात्रों की संख्या को २८५ तक पहुंचाया है। फिर भी विद्यार्थियों के अभिभावकों को आश्रम में बिल्कुल स्थान न होने से उनके बालकों को प्रविष्ट करने में असमर्थता दिखानी पड़ी।

ऐसी स्थिति में भवनों की कमी अभी भी अनुभव की जा रही है। जिसके लिए विद्वत्ता तथा कुशल प्रशासन दोनों तत्त्वों की प्रामाणिक मीमांसा रूप आचार्य महोदय क्रियाशील हैं। उनके अपने शब्द है—"दुनिया में पैसे की कोई कमी नहीं। पैसा बटोरने वाला चाहिए।" अनुकम्पा सम्पादक परम पिता परमात्मा की महती कृपा से इनमें यह गुण प्रबलतया विद्यमान है। इसी का परिणाम गुरुकुल के इतिहास में पहली बार विगत वर्ष जलसे पर एकत्रित २१००० रुपये हैं। इसी प्रकार गुरुकुल कुरुक्षेत्र की वर्तमान प्रबन्धकर्त्री सभा के सुयोग्य प्रधान श्री शिवराम जी वर्मा विधायक एवं मुख्याधिष्ठाता, श्री राममूर्ति जी सेठ कैथल और प्रबन्धकर्त्री सभा के अन्य माननीय सभी प्रतिष्ठित सदस्यों के मार्ग दर्शन में भी गुरुकुल बहुमुखी उन्नति की ओर अग्रसर है। जनता जर्नादन का भी यथा समय अनेक प्रकार का सहयोग मिलता रहा है। अस्तु

गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी की पीठ के साथ पीठ लगाए खड़ा है। ऐसी स्थिति में श्रद्धा-प्रेमी, दान-वीर महानुभावों से निवेदन है कि वे स्वामी जी के अभीष्ट लक्ष्य को पूरा करने के लिए तथा इसीलिए उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये इस ज्ञान यज्ञ रूपी गुरुकुल को अपने दान दक्षिणा रूपी घृत से सम्पन्न करें। क्योंकि "हतो यज्ञस्त्वदक्षिणः" अर्थात् दक्षिणा हीन कभी पूर्ण नहीं होता है। यज्ञ पूरा होते देखकर शहीदात्मा प्रसन्न होकर आशीर्वाद देगी जिसने आपके लिए अपना खून तक बहा दिया था। क्योंकि "सर्वेषा मेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते" अर्थात् सब दानों में विद्या के लिए दिया गया दान ही अच्छा होता है। अतः आशा है कि आप सब आगन्तुक महानुभाव पुष्कल द्रव्य राशि प्रदान करके अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करेंगे।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल का परिचय

आज से लगभग ६८ वर्ष पूर्व १३ अप्रैल सन् १९१२ बैसाखी के पुण्य पर्व पर स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना की। श्री लाला ज्योति प्रसाद जी रईस थानेसर निवासी ने अपनी १०४८ बीघे जमीन और १००००/- (दस हजार रुपये) नकद देकर इस शुभ कार्य के आरम्भ में प्रशंसनीय योगदान दिया। तभी से यह गुरुकुल आर्य संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में निरन्तर कार्यरत है। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि में स्थित यह संस्था प्रत्येक सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्य में योगदान देती आ रही है।

उद्देश्य

इस संस्था का उद्देश्य पवित्र एवं शान्त वातावरण में प्राचीन वैदिक संस्कृति और विभिन्न आधुनिक विज्ञानों की उच्च शिक्षा देना है। जिससे विद्यार्थी चरित्रवान और भारतीय नागरिक बन सके।

विशेषताएं

(१) इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये बालकों को छोटी आयु में ही प्रविष्ट किया जाता है और सदाचारी गुरुजनों की देख रेख में रखा जाता है।

(२) सुकुमारमति बालकों को शहरों के दूषित वातावरण से दूर रखा जाता है जिससे उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति निर्बाध रूप से हो सके।

(३) गुरुकुल कुरुक्षेत्र में १½ मास का कुल अवकाश होता है। पहली जून से ३० जून तक और १५ दिन का अवकाश दीपमाला के उपलक्ष्य में होता है।

(४) छात्रों के रहने की व्यवस्था गुरुकुल के छात्रावास में है प्रत्येक छात्र को छात्रावास में रहना अनिवार्य है।

(५) भोजन व्यवस्था विद्यार्थियों से प्राप्त भोजन व्यय से ही गुरुकुल करता है। जो प्रत्येक विद्यार्थी से १२ मास का लिया जाता है।

(६) अतः भोजन व्यय प्रत्येक मास की १० तारीख तक गुरुकुल कार्यालय में पहुंचना आवश्यक है। संरक्षक किसी परिस्थिति के कारण भी मास की १५ तारीख तक भोजन व्यय नहीं भेजेंगे तो बिना सूचना के छात्र का नाम काट दिया जावेगा।

(७) आधुनिक सरकारी या अर्धसरकारी हाई स्कूलों में जो विषय पढ़ाये जाते हैं वे ही गुरुकुल में पढ़ाये जाते हैं। उनके अतिरिक्त प्रथम श्रेणी से दसवीं तक गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है इस पाठ्यक्रम को हम पूर्व और पश्चिम का सुन्दर समन्वय कह सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) इन विविध विषयों के अध्यापन के अतिरिक्त स्वास्थ्य तथा चरित्र पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

(९) यह सब होते हुए भी शिक्षा शुल्क और छात्रावास का कोई खर्चा नहीं लिया जाता। छात्रों के पालन पोषण का वास्तविक व्यय से भी कम उनके माता पिता देते हैं।

(१०) छात्रों के कपड़े, बिस्तर, पुस्तकें तथा स्टेशनरी और दूसरे सामान का खर्चा माता पिता को ही देना होता है।

(११) कोई विद्यार्थी मूल्यवान वस्तुएं जैसे घड़ी, अंगूठी, गले की चेन (जंजीर) मूल्यवान वस्त्र आदि नहीं रख सकता।

(१२) प्रत्येक विद्यार्थी को गुरुकुलीय मर्यादा का पालन आवश्यक है।

(१३) गम्भीर दोष सिद्ध होने पर शिक्षार्थी को पृथक किया जा सकता है पृथक करने का आचार्य को पूर्ण अधिकार है।

(१४) गुरुकुल के साथ किसी किस्म का विवाद कुरुक्षेत्र के न्यायालय (कोर्ट) में ही होगा।

सरकार द्वारा मान्यता

(१) दशम श्रेणी उत्तीर्ण विद्यार्थी को "विद्याधिकारी" का प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है। जो मैट्रिकुलेशन के समकक्ष है और सभी विश्वविद्यालयों से मान्यता प्राप्त है। इससे सरकारी नौकरी में कोई बाधा नहीं होती।

(२) उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा विद्याधिकारी परीक्षा को हाई स्कूल के समकक्ष मान्यता दी गई है शर्त यह है कि वह पूरक परीक्षा द्वारा उत्तीर्ण न हो।

(३) पंजाब विश्वविद्यालय ने विद्याधिकारी को मैट्रिकुलेशन तथा विशारद के समकक्ष माना है और इन्टरमिडियेट तथा शास्त्री परीक्षा में सीधा प्रवेश स्वीकार किया है।

(४) इनके अतिरिक्त बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, भागलपुर, कलकत्ता, अलीगढ़, जोधपुर, कुरुक्षेत्र, बम्बई और राँची विश्वविद्यालयों, जम्मू कश्मीर सैकण्डरी बोर्ड, मध्य प्रदेश बोर्ड भोपाल, बिहार सरकार, हिमाचल प्रदेश सरकार तथा भारत के सरकारी रक्षा मंत्रालय ने जल, स्थल तथा वायु सेना में भर्ती के लिये विद्याधिकारी परीक्षा को मैट्रिकुलेशन के समकक्ष मान्यता दी है।

(५) इस प्रकार यह गुरुकुल भारतीय रहन सहन व वातावरण में एक भारतीय पद्धति पर चलने वाला अपने ढंग का पब्लिक स्कूल है।

(६) इस गुरुकुल में इस समय महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश और कलकत्ता के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

(७) विद्यार्थियों के रहने और पढ़ने के लिए मकान सुन्दर एवं स्वच्छ हैं। खेलने के लिए खुले मैदान हैं।

यहां के आचार्य, मुख्याध्यापक तथा अन्य शिक्षक वर्ग विद्वान अनुभवी तथा ट्रेंड हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के लिए गुरुकुल में पुस्तकालय तथा वाचनालय का समुचित प्रबन्ध है। इसमें हिन्दी, संकृत, अंग्रेज़ी के दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र आदि नियमित रूप से आते हैं।

इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को वक्तृत्व तथा लेखन का भी अभ्यास कराया जाता है। विद्यार्थी अन्तर्विद्यालय वाक प्रतियोगिता एवं टूर्नामैन्ट में भाग लेते हैं और विजयी होकर आते हैं।

आश्रम व्यवस्था

प्रत्येक प्रविष्ट बालक का गुरुजनों की अध्यक्षता में आश्रम में रहना अनिवार्य है।

प्रत्येक श्रेणी का अधिष्ठाता होता है जिसके निरीक्षण में श्रेणी के विद्यार्थी नित्य कर्मों का पालन करते हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार विद्यार्थियों की दिनचर्या निम्न है।

जागरण	प्रातः	५-०० बजे
व्यायाम	,,	५-३० बजे
स्नान	,,	६-३० बजे
सन्ध्या	,,	७-०० बजे
(नाश्ता) प्रातः राश	,,	७-३० बजे
विद्यालय	,,	८ बजे से ११-४५ बजे
भोजन विश्राम	,,	१२-०० बजे
स्वाध्याय	,,	१ बजे से २-३० बजे
विद्यालय	,,	२-३० से ४-३० बजे
जलपान	सायं	४-३० बजे
क्रीड़ा	,,	५-३० बजे
सन्ध्या	,,	६-३० बजे
भोजन	,,	७-०० बजे
स्वाध्याय	रात्रि	८ से ९-३० बजे
शयन	,,	९-३० बजे

नोट : सर्दियों में घण्टा आध घण्टा का अन्तर हो जाता है।

मासिक व्यय

माता-पिता व संरक्षकों को ब्रह्मचारियों के भरण पोषण का व्यय और पुस्तकों तथा वस्त्र आदि का व्यय देना होगा।

इस व्यवस्था के लिये मासिक भोजन व्यय प्रथम श्रेणी से दशवीं श्रेणी तक ७५/- रुपये देने होंगे। भोजन निरामिष एवं सात्विक दिया जाता है। पुस्तकों व वस्त्रादि का व्यय इससे अतिरिक्त होगा। जोकि भोजन व्यय के साथ ही देना पड़ेगा।

चिकित्सा

बालकों के स्वास्थ्य की देखरेख के लिये योग्य चिकित्सक नियुक्त है। बीमारियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोकथाम तथा चिकित्सा का उत्तम प्रबन्ध है। प्रति मास प्रत्येक विद्यार्थी का तोल होता है। जिसकी सूचना संरक्षक महोदय को दे दी जाती है।

व्यायाम व खेल

प्रतिदिन नियम पूर्वक प्रातःकाल व्यायाम (पी० टी०) तथा सायंकाल योगासन, हाकी फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी, कुश्ती, तैराकी आदि खेल होते हैं।

प्रवेश नियम

नवीन बालकों का प्रवेश जून और जुलाई में होता है। विशेष अवस्था में वर्ष के बीच में भी छात्र प्रविष्ट कर लिये जाते हैं। आयु ८ वर्ष से कम और ११ वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिये। जमानत सहित निम्न व्यय करना होता है:

प्रवेश	३०-००	
रक्षा धन (जमानत)	१००-००	यह राशि गुरुकुल छोड़ने पर वापिस कर दी जाती है।
इमारत फण्ड	५०-००	
तख्त	५०-००	
बिजली (पंखा) व्यय	३०-००	
बर्तन	२०-००	
क्रीड़ा	१२-००	वार्षिक
चिकित्सा	१२-००	वार्षिक
	२७४-००	
महासभा सदस्य शुल्क	१००-००	वार्षिक

वस्त्रादि का ब्योरा (विद्यालय की ड्रेस)

(१)	सफेद खद्दर की बुशर्ट आधी बाजू	४
(२)	नीली निकर	४
(३)	खाकी निकर	२
(४)	बुनियान बगैर बाजू के	४
(५)	कमीज सफेद खद्दर के	८
(६)	पायजामा सफेद खद्दर के	८
(७)	बन्द गले का कोट या लाल जर्सी	२

इसके अतिरिक्त सर्दी गर्मी का पूरा बिस्तरा होना चाहिये। स्नान के लिए तौलिया, कच्छा या लंगोट भी होना चाहिये।

पाठ विधि एवं विशेषताएं

(क) संस्कृत, अंग्रेज़ी व धर्म शिक्षा के अतिरिक्त सभी विषयों की पाठ विधि अष्टम कक्षा तक हरियाणा सरकार से स्वीकृत पाठ विधि होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा कृषि उद्योग निगम सीमित किसानों की सेवा में

अपनी तमाम कृषि संबंधी जरूरतों के लिए हमारे पास पधारें

सुविधाएं :

ट्रैक्टर : ज़ीटर २५११ : २५ हार्स पावर ● ज़ीटर ५७११ : ५७ हार्स पावर
ट्रैक्टरों के असली पुर्जे, सिंचाई के पम्प सैट, अनाज भण्डारण कोठियां, पौल्ट्री उपकरण, प्रत्येक किस्म की रसायनिक खादें, कीटनाशक दवाएं, उत्तम प्रमाणित बीज, "हरअमृत" पशु एवं मुर्गी चारा, "डिलिशिया" खाद्य एवं फलों के संशोधित उत्पादन, किराये पर ट्रैक्टर, बुलडोज़र एवं कम्बाइनें, किराए पर खेतों में दवाइयों का हवाई तथा ज़मीनी छिड़काव, ट्रैक्टरों तथा कृषि यन्त्रों की रिपेयर तथा सरविसिंग।

हमारे किसान सेवा केन्द्र निम्नलिखित स्थानों पर हैं

अम्बाला ● यमुना नगर ● लाडवा ● पिहोवा ● नीलोखेड़ी ● करनाल
पानीपत ● सोनीपत ● पलवल ● गुड़गांव ● रोहतक ● भिवानी ● हिसार ● सिरसा

मुख्यालय : एस. सी. ओ. ८२५-२६, सैक्टर २२-ए, चण्डीगढ़

गुरुकुल का कबड्डी दल जिसने कबड्डी में कुरुक्षेत्र जिला स्तरीय खुली प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान ग्रहण कर चैंम्पियनशिप शील्ड जीती। मध्य में व्यायाम शिक्षक बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Do You Know?

HARCOBANK

Offers highest interest on your Savings

• **Saving Bank deposits**	5.25%
• **Long-term deposits**	32.93%
• **Fixed deposits :**	
15 days to 45 days	2.75%
91 days to less than 6 months	4.25%
6 months to less than 9 months	4.75%
9 months to less than 1 year	5.75%
1 year to 3 years	7.25%
Over 3 years and Upto 5 years	8.75%
Above 5 years	10.25%
• **Provident fund deposits of Institutions**	9.25%
• **Recurring Deposits**	Upto 10.25%

SPECIAL ATTRACTIVE FEATURES

- Money Multiple Certificates
- Pension-cum-Gratuity Scheme
- Regular income on-Long-term deposits
- Lockers available at moderate rates
- Free locker facility to depositors having deposits of Rs. 50,000/- with the Bank.

Please Call on us we are always at your service

THE HARYANA STATE COOPERATIVE BANK LTD.

(A SCHEDULED BANK)

Bank Square • Sector 17-B • Chandigarh

Phones : 22178, 29059, 28253, 22283

Capt. MANGE RAM M. L. A.
Chairman

B. L. TANWAR
Managing Director

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) नवम, दशम् की पाठ विधि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अनुसार है।

(ग) संस्कृत तीसरी कक्षा से और अंग्रेजी चतुर्थ कक्षा से प्रारम्भ होगी।

(घ) इस प्रकार गुरुकुल का विद्याधिकारी उत्तीर्ण छात्र संस्कृत, अंग्रेजी में अन्य स्कूलों की अपेक्षा अधिक ज्ञानवान होगा। वह प्रतियोगिता की परीक्षाओं में अधिक सफल सिद्ध होगा।

(ङ) गुरुकुल कुरुक्षेत्र का विद्याधिकारी उत्तीर्ण छात्र शास्त्री परीक्षा में सीधा बैठ सकता है। वह दो वर्ष में शास्त्री एवं एक वर्ष में ओ० टी० करके पंजाब, हरियाणा में तीन वर्ष में ही बी० ए० बी० एड० के बराबर ग्रेड प्राप्त कर सकता है। जो ग्रेड पांच वर्ष में प्राप्त होता है।

मर्यादा अनुशासन

१. (क) गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को शिक्षा काल तक अविवाहिता रहना होगा।

(ख) आश्रम में प्रविष्ट छात्रों के लिये गुरुकुलाश्रम के नियमों का पालन करना आवश्यक है।

२. यदि कोई विद्यार्थी छुट्टी की समाप्ति पर उपस्थित नहीं होगा तो बिना आज्ञा अनुपस्थिति के दण्ड के रूप में एक रुपया प्रतिदिन के हिसाब से धन संरक्षक को देय होगा और १५ दिन से अधिक अनुपस्थित होने की अवस्था में छात्र का नाम अवकाश समाप्ति की तिथि से पृथक कर दिया जावेगा।

३. ब्रह्मचारियों का मासिक व्यय प्रत्येक मास की १० तारीख तक कार्यालय में पहुंच जाना चाहिये। यदि कोई ब्रह्मचारी नियमोलंघन के कारण गुरुकुल से पृथक किया जावेगा तो इस अवस्था में जमानत धन नहीं लौटाया जावेगा।

४. यदि किसी ब्रह्मचारी का मासिक व्यय नियमपूर्वक नहीं प्राप्त होगा और अप्राप्त राशि जमानत धनं के बराबर हो जाएगी तो ब्रह्मचारी को पृथक कर दिया जावेगा, इसकी बाबत संरक्षक को हर मास सूचित किया जाता है। शिक्षा निःशुल्क है। विद्यार्थियों के भरण पोषण का वास्तविक व्यय ही लिया जाता है। इस व्यय में किसी प्रकार की कमी सम्भव नहीं है।

५. अध्ययन में असमर्थता अथवा प्रवेश की किसी प्रतिज्ञा या शिक्षणालय के किसी नियम का उलंघन करने पर अथवा असदाचार आदि कोई दोष होने पर ब्रह्मचारी को गुरुकुल से पृथक किया जा सकेगा। इसके संरक्षक से गुरुकुल से पृथक होने तक का सारा व्यय लिया जावेगा।

कोई भी परीक्षार्थी इस गुरुकुल की किसी भी परीक्षा में प्राइवेट रूप से सम्मिलित नहीं हो सकता। गुरुकुल में आश्रम निवास तथा नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित होकर अध्ययन करना आवश्यक है।

इस प्रकार यह संस्था पालन-पोषण, बौद्धिक शिक्षा, चरित्र गठन और पूर्व तथा पाश्चात्य विषयों के शिक्षण का सुन्दर सुयोग प्रदान करती है।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल - गरिमा

प्रहर्षिणी छन्दः (संस्कृतम्)

ले० विद्यानिधि शास्त्री, व्याकरणाचार्य (भैंसवाल)

१. आनन्दं वनपवनोद्भवं किरन्ती
लोकानां भगवति भक्तिनुद्गिरन्ति ।
कल्याणीमुपदिशती श्रुतिं त्रिसत्यां
जागयदि् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥१॥

अर्थ :—वन की हवा से आनन्द को बिखेरती हुई, भगवान् की भक्ति में लोगों को लगाती हुई, तीनों कालों में सत्य कल्याणी वेदवाणी का उपदेश करती हुई, गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥१॥

२. आदर्शं बहुमतमुत्तमं मुनीना
माद्यानामनुपधि बोधयन्त्यृषीणाम् ।
वेदाज्ञामवदधती सदैव नित्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥२॥

अर्थ :—सर्वसम्मत प्राचीन ऋषि मुनियों के उत्तम आदर्श को निष्कपटता से सिखाती हुई, नित्य वेदाज्ञापालन का ध्यान दिलाती हुई, गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥२॥

३. उन्नेत्री गुरुजनगौरवं पुराणं
संस्कर्त्री बटुहृदयं सुशिक्षमाणम् ।
निश्चेत्री निगमगवीं स्थिरैकमत्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥३॥

अर्थ :—पुराने गुरुजनों के गौरव को ऊंचा उठाती हुई, शिक्ष्यमाण ब्रह्मचारियों के हृदय को संस्कृत करती हुई, स्थिर ऐकमत्यवाली वेदवाणी का निश्चय कराती हुई गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥३॥

४. शब्दार्थं विशकलयन्त्यनन्यलभ्यं
तन्वाना जननिवहं सुसभ्यमिभ्यम् ।
आलोकं प्रणिदधती शुभं सुमत्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥ ४॥

अर्थ :—अन्य से अप्राप्य वास्तविक शब्दार्थ को स्पष्ट करती हुई; जन समूह को सभ्य एवं सौभाग्य संपन्न बनाती हुई, शोभन बुद्धि में सुन्दर प्रकाश फैलाती हुई गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. संध्याया हवनविधेश्च सेवनेन
प्रीणाना यमनियमाद्यपस्कृतेन ।
कुर्वाणा रुचिमभितः परात्मरत्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥५॥

अर्थ :—यम नियमसहित सन्ध्या हवन के सेवन से तृप्त करती हुई, चहुं ओर परमात्मरमण में रुचि पैदा करती हुई, गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥५॥

६. प्राचीनं सुविशदमागमं दिशन्ती
सिद्धांन्तं प्रतिपदमुन्नयं नयन्ती ।
अत्युच्चैर्विमलयशा विकासवत्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥६॥

अर्थ :—प्राचीन स्पष्ट वैदिक सिद्धान्तों की उन्नति का प्रतिक्षण निर्देश करती हुई, आधुनिक विकासयुक्त जगत् में उच्च निर्मल यश वाली गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥६॥

७. यन्निष्ठाः प्रमुदितमानसा विशिष्टाः
शुदान्तःकरणवचस्तनूभिरिष्टाः ।
निर्भ्रान्ता सरणिरसावमुत्र गत्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥७॥

अर्थ :—जिस पद्धति के उपासक सदा प्रसन्नवदन, मन वचन कर्म शरीर से शुद्ध, विशिष्ट योग्यता संपन्न सब के प्रिय हैं, जो परलोक में जाने योग्य निर्भ्रान्त मार्ग को बताने वाली है ऐसी गुरुकुल पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥७॥

८. ब्रह्मण्यं प्रचरति चर्यमार्यवर्यः
सत्यकार्यो भवति कृति च यत्र मर्यः
रुन्धाना प्रणवजपेन सात्महत्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥८॥

अर्थ :—जहां आर्य जन ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करके सत्कार तथा सफलता को प्राप्त करते हैं, जो ओ३म् के जप द्वारा आत्महत्या को रोकती है वह गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥८॥

९. यत्रामी व्रतनिरतास्तपोमहोभि
भ्राजिन्ते शमदमसाधनैरहोभिः ।
सा वाण्यां मधु दधतीष्टवीर्यवत्यां
जागर्याद् गुरुकुलपद्धतिर्जगत्याम् ॥९॥

अर्थ :—जहां प्रतिदिन व्रती लोग शम दम आदि की साधना से प्राप्त तपस्या के तेज से प्रदीप्त होते हैं, वह प्रिय अभीष्ट बल वाली तथा वाणी में मिठास घोलने वाली गुरुकुलों की पद्धति जगत् में सदा जागरित रहे ॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाजस्य नियमाः

□ सर्वासां सत्यविद्यानाम्, ये च पदार्था विद्यया ज्ञायन्ते तेषां सर्वेषामादिसूलमीश्वरः ।

□ परमेश्वरः सच्चिदानन्दस्वरूपः निराकारः, सर्वशक्तिमान्, न्यायकर्ता, दयायुक्तः, जन्मरहितः, अन्तःशून्यः, विकार-रहितः, अनादिः, उपमारहितः, सर्वेषामाधारः, सर्वेषां स्वामी, सर्वव्यापकः, सर्वेष्वन्तर्गतः, जरारहितः, अमरणधर्मा, भयशून्यः, नित्यः पवित्रः, सृष्टिकर्ता चास्ति । तस्यैं-वोपासना कर्तव्या ।

□ सर्वासां सत्य विद्यानां पुस्तकमस्ति वेदः । वेदाध्ययनाध्यापनं, श्रवणं श्रावणञ्चास्ति परमो धर्मः सर्वेषामार्याणाम् ।

□ सत्यस्य ग्रहणे, असत्यस्य च परित्यागे सर्वदा उद्यतेत् ।

□ सर्वाणि कार्याणि धर्ममनुसृत्यं च विचार्य कार्याणि ।

□ सृष्टेरुपकारः आर्यसमाजस्य अस्ति प्रधानोद्देश्यः । शारीरिका, आत्मिका, सामाजिका चोन्नतिः कार्येतिसारः ।

□ सर्वैं सह प्रीतिपूर्वकं, धर्मानुसारं, यथायोग्यो व्यवहारः कर्तव्यः ।

□ अविद्याया नाशः, विद्यायाश्चोन्नतिः करणीया ।

□ स्वकीयोन्नतया एव नरो न तुष्येत्, परं सर्वेषामेव उन्नत्यां निजोन्नतिं जानीयात् ।

□ सर्वे जनाः सामाजिकानां सर्वहितकारिणां नियमानां पालने पराधीननाः स्युः हितकारिणि नियमे च सर्वेऽपि स्वतन्त्राः स्युः ।

संग्रह कर्ता :—
हरिदत्त शास्त्री

□

को वा जगति यो न परिश्रुतोऽस्ति,
क्षेत्रे कुरोः सकल ज्ञान पराभिषक्ता ।
गीता त्वया पूर्व युगे सुगीता,
विष्णु ! पुनस्तवाभिनन्दयामः ॥

आशास्यमहं तव चरण पंकज रेणुभिर्या,
नीता धरेयं सुमनस्विनी विभा ।
विद्या द्रुमोऽयं तव प्रीति भाग्भवन्,
भूयात् कदम्बैः सहपुष्पशाली ॥

डॉ० सी० एन० त्रिपाठी
हिन्दी विभाग, K.U.K.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Vidya Vihar Gurukul Kurukshetra

BALANCE SHEET AS SHOWN ON 31st MARCH 1979

LIABILITIES		
General Fund		
As per last Balance sheet	1,59,622-50	
Add : Net surplus for the year (As per income and expenditure Account)	43,231-42	2,02,853-92
Building Fund		
As per last Balance Sheet	2,18,364-00	
Addition during the year	4,575-00	2,22,939-00
Library Fund		
As per last Balance Sheet		1,000-00
Security Refundable	32,960-25	
Add : Received during the year	14,450-00	
	47,410-25	
Less : Refunded during the year	12,290-55	35,119-70
Sundry Liabilities		
(As per last Balance Sheet) Flood Relief Fund payable	208-00	
National Defence fund payable	750-00	958-00
Sundry Creditors (Old)		
As per last Balance Sheet	7,024-37	
Less : Amount written back	7,024-37	0-00
Suspense Account (Old)		
As per last Balance Sheet	2,267-26	
Less : Amount written back	2,267-26	0-00
Deposits from others :		
As per last Balance Sheet	10,900-00	
Less : Refunded during the year	5,000-00	5,900-00
Provident Fund		
Acharya Shri Hari Datt Shastri		1,104-00
Total Carried over		4,69,874.62

ASSETS		
Land and Building		
As per last Balance Sheet	2,35,908-34	
Addition during the year	81,770-67	3,17,679-01
Stock of Goods with Store		
As per last Balance Sheet	19,627-97	
Add : purchased during the year	25,105-88	
	44,733-85	
Less : Sold during the year	22,798-30	21,935-55
Electric Fans		
As per last Balance Sheet		15,351-47
Library Books		
As per last Balance Sheet	5,812-35	
Add : purchased during the year	889-80	6,702-15
Furniture		
As per last Balance Sheet		10,836-77
Diesel Engine Gangadhar		
As per last Balance Sheet		2,030-00
Gobar Gas Plant		
As per last Balance Sheet		16,962-35
Grass Cutting Machine		318-00
Stock Agricultural Product		
As per last Balance Sheet	23,001-00	
Less : Consumed in Bhandar	5,592-55	
	17,408-45	
Less : Sale during the year	17,408-45	0-00
Security Deposit with		
Haryana State Electricity Board for Tubewell		710-00
Loan and Advances		
Advance to Employee	18,835-80	
Advance to Shopkeeper	100-00	
Loan to Marketing Society Thanesar	5,748-42	24,684-22
Total Carried over		4,17,209-52

(Contd. on page 2)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIABILITIES			ASSETS		
Total Brought forward		4,69,874-62	Total brought forward		4,17,209-52
			Provident Fund Investment Account		
			Deposited with Post Office Account 278784		1,104 00
			Grant Recruitment for 1978-79		
			From Govt. of India Ministry of Education and Social Welfare		8,310-00
			Cash and Bank Balances		
			Cash in hand	7,826-01	
			With Mr. Sudama Ram (Ex-accountant)	5,791-32	
			With P. N. B. Saving Bank Account (Old and unconfirmed)	56-81	
			With S. B. I. on S/B Account No. 1775	26,538-44	
			With Kurukshetra Central Cooperative Bank in S. B. Account	1,812-37	
			Saving Bank account with Post Office Kurukshetra	1,226-15	43,251-10
TOTAL		4,69,874-62	TOTAL		4,69,874-62

ACCOUNTANT ACHARYA CHAIRMAN

Auditor's Report : Certified in terms of our Separate report of even date annexed.

DELHI
Dated : 11-10-79

For MORE DATTA & CO.
Sd./- **K. RAJINDER SINGH**
Chartered Accountants

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिक विवरण (रिपोर्ट) १९७९-८०

⊙

शिक्षा विभाग :—गुरुकुल में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के पाठ्यक्रमानुसार विद्याधिकारी (मैट्रिक) की शिक्षा का पूर्ण प्रवन्ध है। गुरुकुल के शिक्षा विभाग में सुयोग्य प्रशिक्षित आचार्य सहित ग्यारह अध्यापक हैं। जिनके नाम निम्न हैं :—

१.	आचार्य	श्री हरिदत्त शास्त्री	"कोविद"
२.	मुख्याध्यापक	श्री रेवाधर	बी० ए०
३.	अध्यापक	श्री बलवीर सिंह	एम० ए० बी० एड०
४.	,,	श्री धर्मवीर	शास्त्री
५.	,,	श्री विश्वनाथ	,,
६.	,,	श्री शुक देव	,,
७.	,,	श्री जय प्रकाश	बी० ए०
८.	,,	श्री जय भगवान	एस० जे० बी० टी०
९.	,,	श्री किशन लाल	एस० बी०
१०.	,,	श्री राम मेहर शर्मा	पी० टी० आई०
११.	,,	श्री चन्द्र प्रकाश जी	बी० ए० बी० एड०

परीक्षा परिणाम १९७९-८०

कक्षा	प्रतिशत परिणाम—सन् १९७८-७९
अष्टम श्रेणी	१००%
सप्तम श्रेणी	१००%
षष्ठ श्रेणी	९३·८%
पंचम श्रेणी	९५·२%
चतुर्थ श्रेणी	९८·२%
तृतीय श्रेणी	१००%
द्वितीय श्रेणी	१००%
प्रथम श्रेणी	९३·१%

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सन् १९७८-७९ में विद्याधिकारी प्रथम खण्ड तथा द्वितीय खण्ड में कुल २० परीक्षार्थी प्रविष्ट हुए। जिनका विवरण निम्नलिखित है :—

कक्षा	प्रतिशत परिणाम	कुल प्रथम श्रेणी	कुल द्वितीय श्रेणी
विद्याधिकारी प्रथम खण्ड	१००%	३	५
विद्याधिकारी द्वितीय खण्ड	१००%	४	८

सूचना :—कुल २० विद्यार्थियों में से धर्म शिक्षा में ४ तथा संस्कृत साहित्य में १ ने विशेष योग्यता प्राप्त की।

गुरुकुलीय पंच वर्षीय छात्र संख्या विवरणिका

श्रेणी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	योग
१९७५-७६	—	१६	२३	३७	३५	३६	३०	११	१२	—	२००
१९७६-७७	१६	१०	३५	३०	३३	३५	३६	१०	६	६	२१७
१९७७-७८	२०	१९	२६	४०	४१	३०	३१	१८	१३	१२	२५०
१९७८-७९	२६	१९	३६	६०	४७	३१	२४	१७	९	१२	२८१
१९७९-८०	२५	२२	४१	४७	३८	२९	१८	१६	१२	८	२५६

सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा भाषण अभ्यास

गुरुकुल में नियमित रूप से प्रत्येक शनिवार को विद्यार्थियों की वाल वाग्वर्धिनी सभा का आयोजन किया जाता है, जिसमें विद्यार्थी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी में भाषण, गीत, भजन और मन्त्र एवं श्लोकों की अन्त्याक्षरी और कहानी आदि प्रस्तुत करते हैं। इससे विद्यार्थियों में अनेक कलाओं का विकास होता है। राष्ट्रीय पर्वों और आर्य समाज के पर्वों पर विशेष सभा का आयोजन होता है जिस में विद्यार्थी, अध्यापक और बाहर के विशिष्ट विद्वान व्यक्ति भाग लेते हैं, जिस से बच्चों के ज्ञान में विशेष वृद्धि होती है। विद्यार्थी अनेक भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेकर विजयी होकर गुरुकुल के गौरव को बढ़ाते हैं।

अतिथि के रूप में अनेक विद्वान गुरुकुल में समय-समय पर आते रहते हैं। विद्यार्थियों की ज्ञान वद्धि के लिए तुरन्त सभा का आयोजन कर लाभान्वित होते हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की शिक्षेतर उपलब्धियाँ–१९७९-८०

जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिता (कुरुक्षेत्र)

कुश्ती—प्रथम चैम्पियनशिप (दिनांक १४-१२-७९ से १६-१२-७९ तक)

१.	विजेन्द्र सिंह	षष्टम कक्षा
२.	जय भगवान	षष्टम कक्षा
३.	सज्जन सिंह	सप्तम कक्षा
४.	बलवान सिंह	अष्टम कक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५.	बलीन्द्र सिंह	नवम कक्षा
६.	कर्मवीर सिंह	दशम कक्षा
७.	महावीर सिंह	षष्टम कक्षा
८.	निर्मल सिंह	षष्टम कक्षा
९.	नरेशपाल	नवम कक्षा
१०.	वेद प्रकाश	नवम कक्षा
११.	राजेन्द्र सिंह	अष्टम कक्षा

कबड्डी द्वितीय चैम्पियनशिप—कुरुक्षेत्र (दिनांक १४-१२-७९ से १६-१२-७९)

१.	योगेन्द्र सिंह	दशम कक्षा दलाध्यक्ष
२.	नत्थू राम	दशम कक्षा
३.	सत्यवीरसिंह	दशम कक्षा
४.	हवा सिंह	नवम कक्षा उपदलाध्यक्ष
५.	राजेन्द्र कुमार	नवम कक्षा
६.	पवन कुमार	नवम कक्षा
७.	महेन्द्र सिंह	अष्टम कक्षा
८.	परमेश्वर राव	अष्टम कक्षा
९.	कामेन्द्र सिंह	अष्टम कक्षा
१०.	वेद प्रकाश	नवम कक्षा

जिला स्तरीय प्रतियोगिता (कुरुक्षेत्र) योगा—दिनांक ८-२-८०

१.	राजेश कुमार	नवम कक्षा	द्वितीय स्थान
२.	पवन कुमार	नवम कक्षा	तृतीय स्थान
३.	बलवान सिंह	नवम कक्षा	तृतीय स्थान
४.	राजकुमार	अष्टम कक्षा	प्रथम स्थान

हरियाणा स्तरीय खेल प्रतियोगिता (करनाल) कुश्ती—दिनांक २१-१-८० से २९-१-८०

१.	वेद प्रकाश	नवम कक्षा	प्रथम स्थान
२.	बलीन्द्र सिंह	नवम कक्षा	द्वितीय स्थान
३.	महावीर सिंह	षष्टम कक्षा	द्वितीय स्थान

राष्ट्रीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिता दिनांक २७-१-८० से ३-२-८० तक

१. **एथलैटिक्स** :—(दौड़) में हमारे गुरुकुल से हवा सिंह कक्षा नवम का छात्र गुंटूर (आन्ध्र प्रदेश) में हरियाणा की तरफ से खेलने गया।

२. **कबड्डी** :—दिनांक ३-२-८० से १०-२-८० तक
हमारे गुरुकुल से योगेन्द्र कक्षा दशम का छात्र हरियाणा की तरफ से कोयम्बतूर (तमिलनाडु) में खेलने गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा स्तरीय खेल प्रतियोगिता (करनाल) योगा दिनांक २४-३-८० से २६-३-८० तक

१.	बलवान सिंह	कक्षा नवम	द्वितीय स्थान
२.	जय भगवान	कक्षा षष्टम	द्वितीय स्थान
३.	राजकुमार	कक्षा अष्टम	द्वितीय स्थान
४.	राजवीर सिंह	कक्षा अष्टम	द्वितीय स्थान

कार्यालय

गुरुकुल के आय-व्यय विवरण को समुचित रूप में रखने के लिए गुरुकुल का अपना एक कार्यालय है, और डाक व्यवस्था के समुचित संचालन के लिये कार्यालय में एक गणक, एक लिपिक, एक सेवक, एक स्टोर कीपर, एक चौकीदार और एक सफाई कर्मचारी है। कार्यालय में अर्थ शुचिता पर विशेष ध्यान दिया जाता है, अनावश्यक ढंग से खर्च होने वाली राशि को बचा कर गुरुकुल के रचनात्मक कार्यों में लगाया जाता है। गत वर्षों से इस वर्ष गुरुकुल कार्यालय के कार्य में अधिक नियमितता आई है, जिस का श्रेय वयोवृद्ध, ईमानदार, निष्ठावान आर्य समाजी श्री बाबूराम जी को जाता है।

भोजन भण्डार

भोजन व्यवस्था को समुचित रूप से चलाना अनुभवी, कुशल भण्डारी श्री ज्ञान सिंह जी के हाथों में है। भारतीय त्यौहारों की परम्परा के अनुसार स्वादिष्ट भोजन उनकी देख रेख में बनता है। आज की व्यवस्था में लगभग ३०० व्यक्ति विद्यार्थियों सहित भोजन भण्डार में एक समय में भोजन करते हैं। इस व्यवस्था को ठीक चलाना और भोजन सन्तुलित पौष्टिक और समय पर मिलना—इसका श्रेय भण्डार के कर्मचारी और भण्डारी जी को जाता है। भण्डार में भण्डारी जी सहित ११ कर्मचारी काम करते हैं।

कृषि विभाग

भवनों के आस-पास जो गुरुकुल की भूमि है उस पर गुरुकुल खुद ही कृषि करता है। जिसकी आय लगभग ७००००/- रु० है और लगभग ४००००/- खाद, पानी बीज तथा कर्मचारियों के वेतन आदि पर व्यय हो जाता है। कृषि विभाग में मैनेजर सहित ६ कर्मचारी काम करते हैं। गुरुकुलीय कृषि सम्बन्धी सभी पुराने रिकार्ड उचित देख रेख, परिश्रम और नियमित योजना बद्ध कार्यक्रमानुसार कार्य करने से टूट गये हैं। कन्थल कलां में गुरुकुल की लाला ज्योति प्रसाद द्वारा प्रदत्त १७० एकड़ भूमि है। १४८ एकड़ भूमि सालाना पट्टे पर दी हुई है। १४८ एकड़ भूमि जो ठेके पर दी जाती है उस से गुरुकुल को केवल ४४ हजार रुपये मिलते हैं। शेष २२ एकड़ भूमि बंटवारे पर दी जाती है। उस भूमि से गुरुकुल को एक वर्ष में १० हजार रुपये की जिन्स चारा आदि नियमित रूप से मिलता है।

गुरुकुल की आय के स्रोत निम्न प्रकार हैं :—

१.	अनुदान भारत सरकार	रु० ८३१०/-
२.	,, ,, हरियाणा सरकार	रु० ५८४०/- (नहीं मिला)
३.	दानी महानुभावों से प्राप्त	रु० ४००००/- (अनुमानतः)
४.	कृषि लगभग	रु० १२५०००/-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

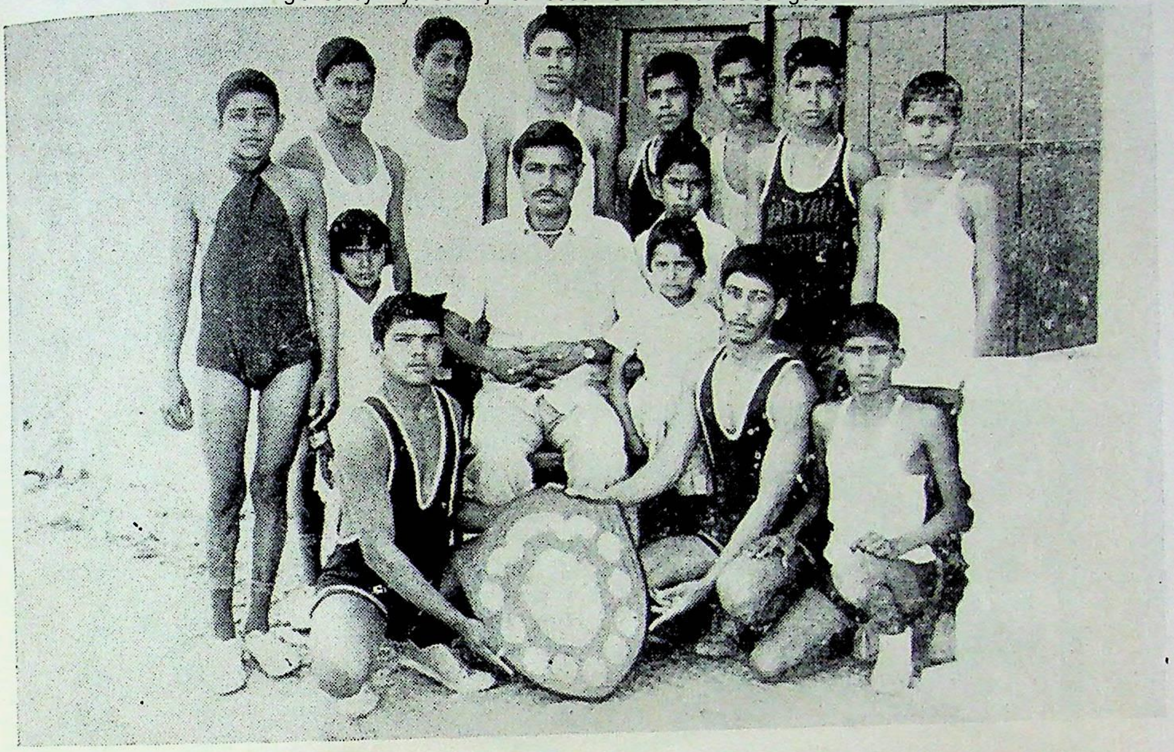

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का कुश्ती दल जिसने कुरुक्षेत्र जिला स्तरीय खुली प्रतियोगिता में सब को परास्त कर प्रथम स्थान ग्रहण कर चैम्पियनशिप जीती तथा शील्ड प्राप्त की। मध्य में व्यायाम शिक्षक बैठे हैं।

गुरुकुल का बैन्ड वादक दल—मध्य में बैन्ड शिक्षक राम मेहर जी बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् तत्सत परमात्मने नमः

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ६८वें वार्षिकोत्सव
पर हमारी शुभ कामनाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौशाला

गुरुकुल की अपनी गौशाला में छोटे बड़े ५० पशु हैं। औसतन १० गाय दूध देती रहती हैं। गौशाला का सारा दूध भण्डार में आकर प्रतिदिन विद्यार्थियों को प्रातराश में वितरित किया जाता है। औसतन गौशाला से प्रतिदिन ७० कि० दूध आता है लगभग ४० कि० दूध बाहर से प्रबन्धाधीन आता है। पशुओं की उचित देख-रेख के कारण और चारे की सुन्दर व्यवस्था के कारण गौशाला में उन्नति हुई है। इस उन्नति का श्रेय गौशालाके मैनेजर श्री सूर्यकान्त शर्मा को जाता है। गौशाला में मैनेजर सहित ५ कर्मचारी काम करते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय

गुरुकुल का अपना एक निजी चिकित्सालय है। जिसमें एक अनुभवी वैद्य और एक सहायक रूप में काम करते हैं। गुरुकुल के सारे विद्यार्थी इसी चिकित्सालय से औषधि प्राप्त कर स्वास्थ्य लाभ करते हैं। औषधालय में औषधि और वेतन पर ६०००/- रु० वार्षिक व्यय होता है।

पर्यटक

कुरुक्षेत्र एक ऐतिहासिक नगर और प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। इस नगर में देश विदेश से बहुत संख्या में भ्रमण करने के लिये दर्शक आते रहते हैं। विदेशियों के लिए गुरुकुल नई पद्धति का आकर्षण केन्द्र है। स्वदेशियों के लिए श्रद्धा का पात्र है। दर्शक लोग गुरुकुल के अनुशासित और विशुद्ध वातावरण को देख कर अति प्रभावित होते हैं। कभी कभी दैनिक संध्या हवन के दृश्य को देख कर दर्शक लोग प्रसन्नता से झूम उठते हैं। आधुनिकता के परिवेश में गुरुकुल को आकर्षक बनाने के लिये अनेक आवश्यकताएं अनुभव होती हैं। जो दानी महानुभावों के सहयोग से पूरी की जा सकती हैं। अतः मैं सभी गुरुकुल हितैषियों से अनुरोध करता हूं कि हर प्रकार से गुरुकुल की सहायता करें। जिन महानुभावों के पास पहुंचकर गुरुकुल के अध्यापकों ने धन की अपील की और उन की झोली में अपनी पवित्र कमाई का धन के रूप में जो हिस्सा दिया उन सब का मैं हृदय से धन्यवाद करता हूं कि इस से भी अधिक आप गुरुकुल को सहयोग देकर शिक्षा यज्ञ को सफल बनाकर पुण्य के भागी बनेंगे।

गुरुकुल की प्रबन्ध समिति के मार्ग दर्शन तथा सहयोग से गुरुकुल उन्नति पथ पर आरूढ़ है। एतदर्थ मैं प्रधान श्री चौधरी शिवराम जी वर्मा मन्त्री-हरियाणा सरकार, मुख्याधिष्ठाता श्री साधु राम गुप्ता लाडवा और प्रबन्ध समिति के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

हरिदत्त शास्त्री
आचार्य
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

⊙

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का भविष्य युवकों के कन्धों पर

ब्र० कर्मवीर सिंह आर्य, छात्र दशम श्रेणी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

□

किसी भी देश की आन्तरिक स्थिति का मजबूत होना उतना ही आवश्यक है जितना कि बाह्य का। यदि एक तरफ बाह्य स्थिति सुदृढ़ होने से देश की सुरक्षा सम्भव है तो दूसरी ओर आन्तरिक स्थिति के मजबूत होने पर देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होकर ऊँचा तो उठता ही है बल्कि उसका भविष्य भी उज्ज्वल हो जाता है। आन्तरिक से अभिप्राय: हम देश की उस स्थिति से लेते हैं जिसमें राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियाँ तीनों का समावेश होता है। किसी भी देश की सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक स्थितियाँ यदि सशक्त हों तो वह देश अवश्य ही आगे बढ़ता हुआ अपना विकास करता है तथा उस देश के लोगों का जीवन स्तर भी ऊँचा उठता है। अतः इस आन्तरिक स्थिति को मजबूत व सशक्त बनाने के लिए कुछ ऐसे युवक चाहियें, जो पूर्णरूपेण देश को मजबूत बना सकें। हाँ, यह सब कब ? और कौन कर सकते हैं ? इसका उत्तर है—यह सब कार्य गुरुकुलों के ब्रह्मचारी व स्नातकगण ही कर सकते हैं। आज देश की तीनों ही स्थितियाँ प्रकाश से परे होकर अन्धकार की तरफ गमन कर रही हैं। कहां तो वह प्राचीन समय—जिस समय दूसरे देश भी भारतवर्ष को जगद्गुरु मानते थे। भारतवर्ष की अपना एक प्रकार से सुयश, मान व प्रतिष्ठा थी। और अब देश की दशा गम्भीर व विचारणीय हो रही है। मैं यह मानता हूं कि देश का भविष्य युवकों के कन्धों पर है। यह सब कब हो सकता है जब युवकों को शराब, सिनेमा आदि से दूर हटा कर आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों, उत्सवों की ओर प्रेरित किया जाये, और रचनात्मक कार्यों में लगाया जाये।

आज का युवक ही कल को एक नेता या कोई सामाजिक कार्यकर्त्ता या कोई भी उच्च पदवी ग्रहण करेगा और देश के विकास में किसी न किसी तरीके से सहयोग देगा। मेरा कहने का अर्थ यह है कि जो आजकल के युवक हैं ये ही कल देश के नेता बनेंगे। शहीद भगत सिंह, आजाद व सुभाष चन्द्र बोस आदि कई ऐसे शहीद हुए जो आधुनिक युवकों की प्रेरणा के स्रोत हैं तथा युवकों को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

यह बात सर्वथा सत्य है कि देश का भविष्य युवकों के कन्धों पर है। यदि किसी देश के साहसी युवक अपने जोश व लगन से देश का कार्य-भार संभालते हैं तो देश जरूर ही उन्नति करेगा। यदि देश की बागडोर चरित्रहीन लोग लेंगे तो देश कदापि उन्नति के शिखर पर नहीं पहुंच सकता। वैज्ञानिक तथ्य के अनुसार आधार ही सही नहीं है तो इमारत खड़ी नहीं हो सकती है। यह सब गुरुकुलीय शिक्षण पद्धति द्वारा ही हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ७१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में कम्बल वितरण समारोह

⊙

गुरुकुल के सभा भवन में कम्बल वितरण समारोह आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता शिक्षा शास्त्री, श्री ज्ञान स्वरूप जी शर्मा (जिला शिक्षा अधिकारी कुरुक्षेत्र) ने की।

गुरुकुल के कृषि, गौशाला, पाकशाला, आश्रम और कार्यालय आदि अनेक विभागों में २५ कर्मचारी कार्यरत हैं। इनको इस समारोह में श्री ज्ञान स्वरूप जी ने अपने कर कमलों से एक-एक कम्बल प्रदान कर प्रोत्साहित किया।

इस के अतिरिक्त ९० छोटे विद्यार्थियों को भी छोटे शालनुमा कम्बल वितरित किये गये। ये कम्बल पानीपत निवासी श्री रामानन्द जी सिंहला, श्री सेठ आदित्य प्रकाश जी, सेठ बाबू राम जी मित्तल, सेठ योगेश्वर चन्द्र जी, श्रीमती बहिन विद्यावती जी, रईस लाला श्री सुमेर चन्द जी, श्री प्रेम चन्द जी गुप्ता आदि ने उदारतापूर्वक दान में प्रदान किये थे। हम सब कुलवासी इन श्रेष्ठी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

□

(पृष्ठ ७० का शेष)

कालेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी जो कि आये दिन आज अपनी शक्ति का अनुचित प्रयोग कर हड़तालें, बसों पर पथराव, तोड़फोड़ करते रहते हैं। यदि उनकी इस शक्ति का देशहित किसी अच्छे कार्य में उपयोग किया जाए तो देश को अवश्य ही लाभ होगा।

प्रत्येक भारतीय युवकों को अपने देश से प्रेम करते हुए देश के गौरव को ऊँचा उठाते हुए, देश का गौरवमय भविष्य बनाने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए क्योंकि आज के युवक ही कल के नेता हैं। और देश का भविष्य युवकों के कन्धों पर है।

वेदामृत

स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्य दत्वा ब्रजत ब्रह्म लोकम्॥ अथर्व १९-७१-१

स्तुति करते हम वेद ज्ञान की,
परम पावन उस समृद्धि धाम की,
जो वेद माता है प्रेरक सबकी,
मनुज मात्र को वह पावन करती,

जो आयु, बल सन्तति है देती,
पशु धन कीर्ति बुद्धि विद्या देती,
दिये हैं उसी ने अमित दान,
सर्वोत्तम मोक्ष का पावन ज्ञान॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा के आदर्श गुरुकुल का वेदमूल

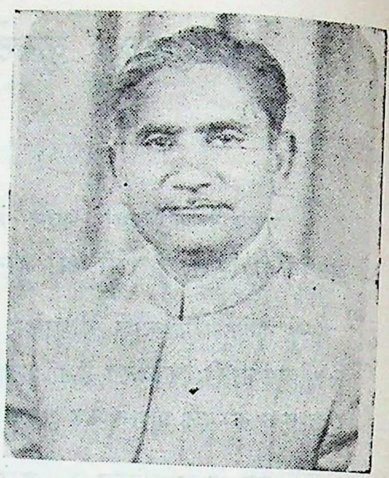

□

हिन्दी रूपान्तर, कविवर सुरेश,
स्नातकोत्तर हिन्दी प्राध्यापक,
गवर्नमैण्ट कॉलिज, लुधियाना

विद्या ह वै ब्राह्मण माजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि ।
असूयाकायानृजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्यवती तथा स्वाम् ॥
य आतृणत्त्यवितथेन कर्णाविदुःखं कुर्वन्नमृतं सम्प्रयेच्छन् ।
तं मेन्येत पितरं मातरं च तस्मै न द्रुह्येत्कतमच्चनाह ॥
अध्यापिता ये गुरुं नाद्रियन्ते विप्रो वाचा मनसा कर्मणा वा ।
यथैवे ते न गुरोर्भोजनीयास्तथैव तान्न युनक्ति श्रुतं तत् ॥
यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम् ।
यस्ते न द्रुह्येत्कतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन् ॥

— सामवेद संहितोपनिषद् ब्राह्मण खण्ड ३

ब्राह्मण के पास पहुंच बोली विद्या, 'रक्षा तू मेरी कर मैं निधि तेरी ।
दे मुझे न कुटिल असंयत निंदक को, विकसेगी शक्ति अनिंदित यूँ मेरी ॥
तथ्य अविकृत कानों में कह अहरह, हर दुःख प्रसाद अमरता को तू दे ।
माने माता-पिता रूप गुरु तुझको, शिष्य वह द्रोह जो तुमसे नहीं करे ॥
ले विद्या विप्र करे निन्दा गुरु की, अगर कहीं मन कर्म याकि वाणी से ।
गुरु के भोजन योग्य नहीं वह जैसे, फलती विद्या कभी न उसको वैसे ॥
जाने तू जिसको जागरूक शुचिव्रत, मेधावी स्थिर ब्रह्मचर्यव्रतधारी ।
अद्रोही वह शिष्य तुम्हारा ब्रह्मन्, रक्षक मुझ निधि का ही एक अधिकारी॥

⊙

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न क्षेत्रों में गौरव प्राप्त करने वाले गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पुराने छात्र

१. श्री सत्य देव जी भारद्वाज, उद्योगपति, केनिया।

२. श्री रत्न चन्द जी सूद, इंग्लिश विभाग कनाडा।

३. श्री सोम दत्त जी, अध्यक्ष, खादी एवं ग्रामोद्योग, बम्बई।

४. डॉ० धर्म पाल मैणी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।

५. श्री विनय कुमार, प्राचार्य, आयुर्वेद महाविद्यालय, पटियाला।

६. श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता, अध्यक्ष, ENT विभाग सिविल हस्पताल, करनाल।

७. डॉ० ब्रह्म स्वरूप जी शर्मा, प्राचार्य, कृष्णा आयुर्वेद महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

८. डॉ० राम प्रताप जी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग विश्वविद्यालय, जम्मू तवी।

९. डॉ० हरि प्रकाश, व्यवस्थापक, फार्मेसी गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार।

१०. डॉ० भ० ह० राजूरकर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मराठवाड़ा (महाराष्ट्र)।

११. श्री केवल कृष्ण जी पुरी, संचालक, मैं० देवी दास गोपाल कृष्ण। आयल मिल लिमिटेड, मोगा।

१२. डॉ० प्रियव्रत जी, भूतपूर्व उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

१३. श्री मोती लाल जी अग्रवाल, उद्योगपति अग्रवाल भवन, जी० टी० रोड, पानीपत।

१४. श्री मदन सिंह, सरपंच, गाँव दाहा, (करनाल)।

१५. श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता, रंगवाले, बारह टूटी (दिल्ली-६)।

१६. श्री वेद प्रकाश जी, प्रो० डी० ए० वी० कालेज, अम्बाला शाहर।

१७. श्री विजय पाल शास्त्री, अध्यापक, आर्य हायर सैकेंडरी स्कूल, नरवाना।

१८. श्री विद्या सागर जी, आकाशवाणी दिल्ली।

१९. श्री धर्म पाल जी भूतड़ा, मैसर्ज कमल इण्डस्ट्रीज छाबड़ा कम्पाउण्ड, बाकोला ब्रिज, बुलस्रोयस कॉलोनी रोड, सान्ता क्रुज (पूर्व) बम्बई—२३ पिन ४०००५५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. श्री ओम प्रकाश जी माहेश्वरी, प्लाट नं० २१ 'अंकुर' फ्लैट नं० १२ गारोडिया नगर, घाटकोपर (पूर्व) बम्बई—४०००७७।

२१. श्री ब्रज मोहन जी सारडा, ४० लैन्सडाउन रोड, कलकत्ता—२०।

२२. श्री कन्हैया लाल जी चितलांगिया, ४० लैन्सडाउन रोड, कलकत्ता—२०।

२३. श्री कन्हैया लाल जी पारख, १६८-१३ कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता—७।

२४. श्री ब्रह्म देव जी मोदी, मोदी हाउस, ३-डी शास्त्री नगर, जोधपुर, राजस्थान।

२५. श्री भागीरथ प्रसाद जी मड़दा, मड़दा मार्ग, चूरु राजस्थान।

२६. नत्थू राम जी सोनी, उत्तरादा बाजार, चुरु राजस्थान।

२७. श्री श्याम सुन्दर मण्डावे वाला, मै० शुभकरण जी श्याम सुन्दर सर्राफ, चुरु, राजस्थान।

२८. श्री वासुदेव जी पण्ठरेड वाला, द्वारा सुरेश ट्रेडिंग कम्पनी, गुदड़ी बाजार, चुरु राजस्थान।

२९. डॉ० कैलाश नाथ, डिग्री कालेज कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

३०. डॉ० अमर सिंह जी, प्राध्यापक संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

३१. श्री ओम प्रकाश जी अग्रवाल, पानीपत।

३२. डॉ० जयदेव जी, अध्यक्ष, लक्ष्मी मैडिकल हाल, अम्बाला छावनी।

३३. पं० सहदेव जी, इंजीनियरिंग कालेज, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

३४. डॉ० देवराज जी, आर. एम. पी. कच्चा घेर थानेसर।

३५. श्री विजयपाल सिंह, मैनेजर, लक्ष्मी कमर्शियल बैंक, चण्डीगढ़।

३६. श्री सत्य देव जी शर्मा, मै० सत्यदेव शर्मा एण्ड सन्स, ५८, जी. बी. रोड, दिल्ली।

३७. डॉ० बृजभूषण शर्मा, सहायक अनुसन्धान अधिकारी, कुरुक्षेत्र।

३८. नारायणदत्त विद्यालंकार, सम्पादक—नवनीत, मुंबई—३४।

३९. श्री क्षितीश जी विद्यालंकार, सम्पादक, हिन्दी हिन्दुस्तान, देहली।

४०. श्री अशोक भारद्वाज, पटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली।

⊙

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्यक्रम

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, हरिद्वार द्वारा

नवम कक्षा (विद्याधिकारी)

□ संस्कृत साहित्य :

वेणी संहार नाटक	...	
शिवराज विजय	...	पं० अम्बिकादत्त व्यास
काव्य दीपिका	...	पं० रामगोविन्द शुक्ल
अनुवाद चन्द्रिका	...	पं० चक्रधर 'हंस' नौटियाल
संस्कृत निबन्ध माला	...	प्रो० सी० मिश्रा

□ धर्म शिक्षा :

गीता (अध्याय प्रथम से तृतीय और बारहवें अध्याय से अठारवें अध्याय तक)	...	
सत्यार्थ प्रकाश	...	महर्षि दयानन्द सरस्वती
योगदर्शन	...	पं० श्री राम शर्मा आचार्य

□ हिन्दी :

काव्य कुसुम	...	डा० गिरधारी लाल शास्त्री
गद्य मुक्ताहार	...	श्री बैजनाथ सिंह
हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास	...	ले० गुलाब राय
विद्यार्थी जीवन	...	
हिन्दी व्याकरण	...	प्रो० वंशीधर व धर्मपाल शास्त्री
आहुति नाटक	...	

□ अंग्रेजी :

गद्य Prose	...	P. N. Aggarwal
काव्य Poetry	...	Jaidev Sharma
महापुरुषों की जीवनियां Great Lives	...	V. Rajamani, M.A.
न्यू लाइट जनरल इंगलिश	...	A Board of Educationists
New Light General English	...	

□ गणित :

बीज गणित (सांख्यिकी)	...	जे० एन० शर्मा व ए० आर० वशिष्ठ
ज्यामिति	...	जे० एन० शर्मा व ए० आर० वशिष्ठ

□ विज्ञान :

भौतिकी	...	वाई० डी० गुप्ता व के० एस० त्रिवेदी
रसायन शास्त्र	...	जे० पी० गोयल व बी० पी० त्यागी
जन्तु विज्ञान	...	ए० सी० सहगल
वनस्पति विज्ञान	...	ए० सी० सहगल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्यक्रम

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, हरिद्वार

द्वारा स्वीकृत दशम श्रेणी (विद्याधिकारी खण्ड द्वितीय)

☐ संस्कृत साहित्य :

मुद्राराक्षस	...	पं० विशाख दत्त
शिवराज विजय	...	पं० अम्बिकादत्त व्यास
काव्यदीपिका	...	पं० राम गोविन्द शुक्ल
अनुवादचन्द्रिका	...	प० चक्रधर 'हंस' नौटियाल
संस्कृत निबन्ध माला	...	प्रो० सी० मिश्रा

☐ धर्म शिक्षा :

तर्कभाषा	...	श्री केशव मिश्र
सत्यार्थ प्रकाश	...	महर्षि दयानन्द सरस्वती

☐ हिन्दी :

काव्य कुसुम	...	डॉ० गिरधारी लाल शास्त्री
गद्य मुक्ताहार	...	श्री बैजनाथ सिंह
हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास	...	ले० गुलाब राय
अशोक नाटक	...	
हिन्दी व्याकरण	...	प्रो० वंशीधर व धर्मपाल शास्त्री

☐ अंग्रेजी :

गद्य Prose	...	P. N. Aggarwal
काव्य Poetry	...	Jaidev Sharma
महापुरुषों की जीवनियां	...	V. Rajamani, M.A.
न्यू लाइट जनरल इंगलिश	...	A Board of Educationists

☐ गणित :

बीजगणित (त्रिकोणमिति)	...	जे० एन० शर्मा व ए० आर० वशिष्ठ
ठोस ज्यामिति	...	जे० एन० शर्मा व ए० आर० वशिष्ठ

☐ विज्ञान :

भौतिकी	...	वाई० डी० गुप्ता व के० एस० त्रिवेदी
रसायन शास्त्र	...	जे० पी० गोयल व वी० पी० त्यागी
जन्तु विज्ञान तथा वनस्पति	...	ए० सी० सहगल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दे मातरम्

संकलन—सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार

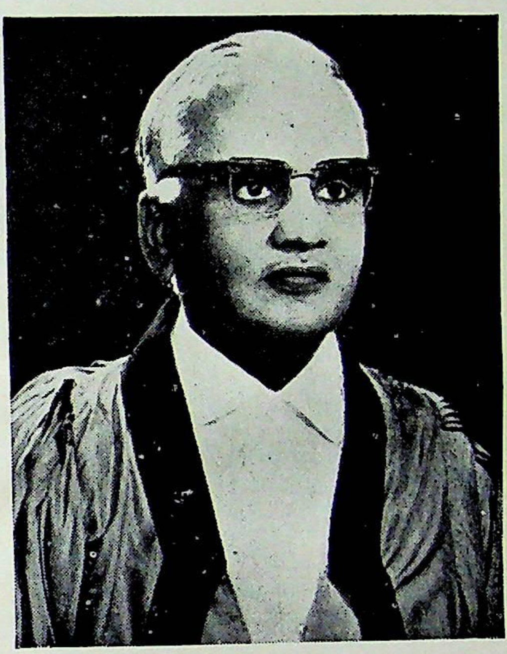

कुलं पवित्र जननी कृतार्था वसुंधरा पुण्यवती च तेन।
अपारसंवित् सुखसागरेऽस्मिन लीनं परेब्रह्मणि यस्य चेत: ।।

(भूदेवी = भूमिमाता या ब्रह्मगवी-ब्राह्मण की गौं) ।।

जय जय जननी भूदेवी तुझको बार बार प्रणाम हैं।
यह मंजु अञ्जलि प्रेममय अर्पित तुझे अभिराम हैं ।।
महिमा हिमालय की शिखायें गा रहीं तेरी स्वयं।
भागीरथी की विचियों में स्पष्ट तेरा नाम हैं ।।
हम देखते तुझ में सदा नवप्रेम का उल्लास हैं।
हम को मधुरतम गोद ही तेरी परम विश्राम हैं ।।
तेरे विशद आकाश की स्वाधीनता में हम पलें।
स्वर्गीयता मिश्रित जहां उज्जवल ऊषा का धाम हैं ।।

तेरे वनों की स्तब्धता में दिव्य कोई राग हैं।
सब ओर से मानों बरसता पुण्य का परिणाम हैं ।।
तूने हृदय मोती पिरो कर प्रेम के दृढ़ सूत्र में।
अनुपम बनाई यह हमारी चारू मुक्तादाम हैं ।।
तू ही बजाती बीणा वह जिसके कि हम सब तार हैं।
जो तार सारे एक स्वर हो कह रहे अविराम हैं ।।
हम हैं सदा तेरे हमारी तू हृदयवर वासिनी।
सम्बन्ध है यह तेरा हमारा नित्य हैं निष्काम हैं ।।

(श्रीयागीश्वराक्षरैः प्रियैं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□ 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'—(सारे संसार को आर्य बनाओ)

किसान की खुशहाली हमारा एकमात्र उद्देश्य

और हमने यह सिद्ध कर दिया है। हरियाणा जो गत वर्षों में एक कमी वाला राज्य था, आज खाद्यान्न में अधिकोष राज्य है। इस शानदार उपलब्धि में, हमारा योगदान कुछ कम नहीं। वास्तव में निम्नलिखित कृषि उद्देश्यों के लिये हम दीर्घ-अवधि के ऋण जुटाने में एकाधिकार रखते हैं :—

□ लघु सिंचाई □ कृषि यन्त्र □ भूमि विकास □ जल प्रबन्ध
□ डेरी विकास □ एवं सभी समरूप गतिविधियां।

ऋण 10½% वार्षिक ब्याज की दर पर ७ से १२ साल की अवधि के लिये उपलब्ध कराये जाते हैं।

प्रगति ३०-६-१९७९ तक

		(राशि लाखों में)
१.	हिस्सा पूंजी	३५६-२३
२.	आरक्षित एवं अन्य निधियां	२५१-५६
३.	देय ऋण	६८१०-५६
४.	परिचालित ऋण-पत्र	८९४३ ६६
५.	कार्यशील पूंजी	९९४०-३१
६.	वसूली	१००%

७. १९६६ से उपलब्ध कराये गये ऋण :

		संख्या	(राशि लाखों में)
(क)	लघु सिंचाई	८०७२०	६११५-४७
(ख)	ट्रैक्टर	१४६८६	४२२९-२१
(ग)	अन्य	४४६३९	२१४०-९९

बैंक सवा सात प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर पर एक साल की सावधि जमानतें स्वीकार करता है। पूरी जानकारी के लिए कृपया राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक या राज्य में तहसील मुख्यालय पर कार्यरत किसी भी प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंक से सम्पर्क स्थापित करें।

धर्म चन्द
प्रबन्ध निदेशक

बलबीर सिंह चौहान
सचिव

हरियाणा राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक समिति

सैक्टर २२-सी, चण्डीगढ़ १६० ०२२

तार :—कृषि बैंक

दूरभाष : २६६८०, २७७९८, २१२५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : मेरी दृष्टि में

दिनांक १-१-१९८० को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के एक समारोह की मैंने अध्यक्षता की। यह गुरुकुल बच्चों के चहुंमुखी विकास के लिए भरसक प्रयत्न कर रहा है। परिणामस्वरूप जहां बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा है वहां शिक्षा एवं अनुशासन का स्तर भी उच्चकोटि का है। बच्चों में स्वाभिमान की भावना है।

गुरुकुल में संस्कृत की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस से बहुत छोटे विद्यार्थी भी संस्कृत के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करते हैं। शिक्षा के साथ साथ कृषि के क्षेत्र में बच्चों को पूर्ण ज्ञान दिया जाना भी इस गुरुकुल की एक विशेषता है। बच्चों की कठिनाइयों का भली प्रकार तथा वैज्ञानिक ढंग से समाधान किया जाता है।

बच्चों की सफाई, प्रांगण की सफाई प्रशंसनीय है। मैं गुरुकुल के चहुंमुखी विकास की शुभ कामना करता हूं।

ज्ञान चन्द
जिला शिक्षा अधिकारी
कुरुक्षेत्र

⊙

अर्चना

□ प्रेरणा सिन्धु

पावन पूजा के अधिकारी देव मेरे तुम बन जाओ,
वरना इस जग से मेरा यह अस्तित्व मिटा जाओ।

उपेक्षित इस जीवन के तुम बनो सहारा,
ठोकर बहुत खा चुके ना, अब करो किनारा।
काल कराल इस निशा गहन में
तुम मधुर दीप बन आ जाओ।

झंझा के झटकों में, तुम्हीं एक अवलम्ब बनो,
तूफ़ानों में घिरी है किश्ती, तुम्हीं एक पतवार बनो।
तप्त बालु-से इस जीवन की दोपहरी में
तुम महातरु बन छा जाओ।

है गरल पान करना, अब छोड़ो,
या यह प्रिय विश्वास ना तोड़ो।
टूटे हृदय और इस बुझी आश के,
अन्तिम सम्बल बन आ जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर शुभकामनाएँ

ज्योति इन्डस्ट्रीज

२०-सी • फोकल प्वाइन्ट • लुधियाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मण्येवाधिकारस्ते

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर हार्दिक बधाई

बनवारी लाल एण्ड सन्ज

अम्बाला छावनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर शुभकामनाएँ

गोपाल कृष्ण गुप्ता एंड सँज

अम्बाला छावनी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर हार्दिक बधाई

नारंग मैडिकल हाल

अम्बाला छावनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्मा इन्द्राय गायत

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर हार्दिक बधाई

ओरियन्टल साइन्स एपेरेटस वर्कशाप

अम्बाला छावनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्मै देवाय हविषा विधेम

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर शुभकामनाएँ

वीटो हॉबीज

अम्बाला छावनी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर हार्दिक बधाई

कृष्णा राइस मिल्ज

अम्बाला छावनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो रायोः वनिर्महान्

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर हार्दिक बधाई

फेयरडील एजेन्सीज़

अम्बाला छावनी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर शुभकामनाएँ

काशमीर मैडिकल स्टोर्ज

अम्बाला छावनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव पर शुभकामनाएँ

लैबोरेट्री इक्विपमैन्ट ट्रेडर्स

अम्बाला छावनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या :—भूमि मेरी माता है और मैं भूमि का पुत्र हूं ।

On the 68th Anniversary of
GURUKUL KURUKSHETRA
With best wishes from

Lakshmi Medical Hall

AMBALA CANTT.-133 001

Phones : Office : 20269 □ Res. 21333

Distributors :

Unichem Laboratories Ltd. Bombay-400060
German Remedies Ltd. Bombay-400018

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहिचित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्ये पोषरयीणामरिष्टि तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ।

हे ऐश्वर्य के भण्डार प्रभो। आज हमें श्रेष्ठ धन, ज्ञान, शक्ति, सौभाग्य, धनों की वृद्धि, शरीरों का आरोग्य वाणी का माधुर्य प्रदान करो तथा हमारे दिनों को सुदिनों में परिवर्तित करो।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के

६८वें वार्षिकोत्सव की सफलता की कामना करते हुए

हम आप सभी का अभिनन्दन करते हैं।

राम इन्डस्ट्रियल कम्पनी

देहली रोड • मेरठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम पंचायत उमरी ब्लाक थानेसर

जो एक प्रगतिशील पंचायत है उसके १९७९-८० के उन्नति के कार्यों का व्यौरा

ग्राम पंचायत अपने ग्राम निवासियों को पंचायत के साथ पूरा-पूरा सहयोग देने का धन्यवाद करती है।

- ग्राम पंचायत ने निम्नलिखित कार्य अपने ग्राम के लिए किए हैं।
  ग्राम में वाटर सप्लाई, स्ट्रीट लाइट, हाई स्कूल, शिशु कल्याण केन्द्र, आयुर्वैदिक डिस्पैन्सरी, पशु चिकित्सालय केन्द्र पक्की चारों ओर की फिरन तथा गांव की समस्त गलियों को तथा नालियों को पक्का किया हुआ है।
- ग्राम पंचायत ने लड़कियों का सिलाई सैन्टर चालू किया हुआ है।
- ग्राम पंचायत ने हरिजनों के लिए २ हरिजन कालोनी तथा हरिजन चौपाल बनाई हुई है।
- इस वर्ष पंचायत ने मरम्मत गलियां तथा नालियां पुलियों का निर्माण किया। तथा एक महिला मंडल भक्त तथा पशु केन्द्र का रिहाइशी क्वार्टर का भी निर्माण किया है।
- ग्राम पंचायत खेल कूद को बढ़ावा देने के लिए स्टेडियम के निर्माण के लिए सरकार से अनुरोध किया हुआ है।
- ग्राम पंचायत ने अनाज के बदले मजदूरी के अधीन अपने रास्तों तथा फिरनी ठेसमाजरा पर मिट्टी का कार्य किया है तथा शेष कार्य चालू है।
- ग्राम पंचायत अपने गांव के छोटे जमीदारों को तथा हरिजनों को साझी भूमि हर वर्ष पट्टे पर देकर उनकी जीविका का साधन जुटाया हुआ है। जिस में ६ ट्यूबवैल चालू हैं तथा ४ टयूबवैल निर्माणाधीन है।
- ग्राम पंचायत ने अपने ग्राम निवासियों की भावना तथा गांव के वातावरण को दूषित करने वाली हानिकारक शराब के ठेके को बन्द करा दिया है। जिस से समस्त इलाके की एक पुरानी मांग को पूरा किया है।
- ग्राम पंचायत ने जी टी रोड पर यात्री शैड बनाने के लिये सरकार से अनुरोध किया हुआ है।

जय कृष्ण शर्मा
ग्राम सचिव, उमरी

चौ० राम सिंह सरपंच
उमरी ब्लाक, थानेसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संश्रुतेन गमे महि—हम वेदादि शास्त्रों के अनुकूल चलें ।

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best wishes from

HAFED

puts nourishment in your milk

- ☐ The quality of your milk is dependent upon the health of the cattle from which it comes.
- ☐ The progressive farmer knows this. So he gives his live stock HAFED Cattle feed. Protein-rich. Made from high-grade bran and oil cakes. Balanced in the right proportion.
- ☐ Fortified with vitamins.
- ☐ HAFED Cattle Feed also ensures greater milk yield. Which means more money for the farmer.
- ☐ He saves time and labour, too. For there's no grinding, no mixing.
- ☐ Available in 50 and 70 kg. sacks.

The Haryana State Co-op. Supply & Marketing Federation Ltd.

19-20, Madhya Marg, Sector 7-C, Chandigarh

in the service of the farmer

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहे वसतु नोऽतिथिः—हमारे घर में अतिथि आकर रहे।

डी. ए. वी. कालेज चण्डीगढ़

उत्तर भारत का सर्वोत्तम शिक्षण संस्थान

☐ हमारा कालेज़ पंजाब विश्वलिद्यालय चंडीगढ़ से सम्बद्ध सभी कालेजों से बड़ा है। हमारे यहां लगभग ५००० विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। हमारे विद्यार्थी प्री-युनिवर्सिटी, प्री-मैडीकल तथा प्री-इंजीनियरिंग कक्षाओं में अनेक वर्षों से प्रथम स्थान प्राप्त कर रहे हैं। सैकड़ों विद्यार्थियों ने विभिन्न विश्व-विद्यालय परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। यह संख्या अन्य सभी कालेजों के विद्यार्थियों से कहीं अधिक है।

☐ हमारे कालेज ने खेलों के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है। पिछले आठ वर्षों से हमने विश्वविद्यालय का सामान्य योग्यता चलविजयोपहार जीता है। क्रिकेट, टेबल टैनिस, बास्कटबाल, मुक्केबाजी, निशानेबाजी, योग क्रिया, बैडमिंटन, लॉन टैनिस, बालीबाल, रिले-दौड़ तथा क्रॉस कंट्री दौड़ में विश्व-विद्यालय स्तर पर चैम्पियनशिप जीती है।

कालेज के इतिहास में भारतीय क्रिकेट टीम में **श्री कपिल देव** का चुना जाना एक महत्वपूर्ण घटना है।

☐ हमारे विद्यार्थियों ने विभिन्न कालेजों तथा विश्व विद्यालय स्तर पर आयोजित भाषण वाद-विवाद एवं संगीत प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किये हैं।

☐ यहां पर भारत के प्रत्येक प्रान्त एवं विदेशों से सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।

☐ यहां विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षा के अतिरिक्त धर्म शिक्षा भी दी जाती है। विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है।

कृष्ण सिंह आर्य
प्रिंसीपल,
डी. ए. वी. कालेज चंडीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९८वें वार्षिक महोत्सव के शुभ अवसर पर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रति

सफलता की शुभकामनाओं सहित

☐ उमरी सहकारी समिति ने ग्रामीण किसानों तथा कृषि वाहकों को अपनी पैदावार बढ़ाने के लिए कर्ज़ा	८१०८५०-००
☐ किसान भाइयों को खाद बेचा	३२१८७८-५५
☐ ग्राम में चीनी का वितरण मास० फरवरी ता मार्च ८०	२२३२०-०४
☐ कपड़ा वितरण	२७०१३-५४
☐ बीज, जीरी. साबुन, नमक, कापियां, माचिस दूधादि	६४००-२०

सहकारी समिति ने २ गोदाम लगभग २५०० बोरियां की क्षमता का निर्माण किया हुआ है तथा अपनी बिल्डिंग में आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी तथा पोस्ट आफिस को कमरे दिए हुए हैं समिति ने ग्रामीणों की सुविधा के लिए टेलीफोन सेवा का प्रबन्ध भी किया हुआ है।

इस सोसाइटी में दौलतपुर, सोढी, बोढी, जिखरी ठेसमाजरा, कलाल माजरा, शादीपुर इत्यादि शामिल है। किसान भाइयों से अनुरोध है कि सहकारी समिति का अपनी पैदावार बढ़ाने में पूरा-पूरा सहयोग लें।

☐ समिति ने अपने मैम्बरान को कुल १३१४९०६-५० रु० कर्जा दिया है।

☐ समिति की वसूली तकरीबन ७०% है।

☐ समिति ने पंजाब नैशनल बैंक थानेसर से मु० ५००००/- रु० की Cash credit limit बाबत खरीद खाद, कपड़ा, चीनी, साबुन, सोडा इत्यादि के लिये मन्जूर करवा रखी है।

राम सरण शर्मा, मैनेजर
सहकारी समिति, उमरी

चौ० राम सिंह, प्रधान
सहकारी समिति, उमरी

दी उमरी को-आ० क्रैडिट एण्ड सर्विस सोसाइटी लि०

उमरी (कुरुक्षेत्र)-दूरभाष : ५४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best compliments of

M/s. KURUKSHETRA ELECTRIC CO.

Government Approved Contractors

Kurukshetra (Haryana)—Phones : Offi. 24, Resi. 93

Dealers in : **All sorts of Electrical Goods**

Agent and Distributors for :

JYOTI AND NAHAN MOTORS □ BAJAJ-ORIENT FANS AND LAMPS □ ELECTRICAL ACCESSORIES

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेट बैंक आफ पटियाला

प्रधान कार्यालय • माल रोड • पटियाला

उत्तरी भारत का एक प्रमुख बैंक

(देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक का सहयोगी)

हर प्रकार के बैंकिंग कार्य के लिये तथा

कृषि • छोटे उद्योग • छोटे व्यापार • मध्यम व बड़े उद्योग • विदेशी मुद्रा का लेन देन • परिवहन चालक • फार्म ग्रैजुएट व तकनीकी माहिरों आदि को आसान शर्तों पर वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

हम पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जम्मू व कश्मीर, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, तमिलनाडू, कर्नाटक, पश्चिमी बंगाल व संघ शासित प्रदेशों दिल्ली व चण्डीगढ़ में स्थित शाखाओं द्वारा आपकी सेवा कर रहे हैं।

जी० के० आहलुवालिया
प्रबन्ध निदेशक

अश्मानं त्वं कृधि—हमारे शरीर को पत्थर सा दृढ़ बनाओ।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ६८वें वार्षिकोत्सव

पर हमारी शुभ कामनाएँ

मैं० महावीर राइस कम्पनी

चीका, कुरुक्षेत्र फोन : 45

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

Kind Attention □ *Indenting Officers*

Govt. Departments, Corporations, School & Colleges & Co-operatives ; etc.; etc.

infed

(A Govt. Approved Source of Supply)

at your service to meet your requirements of
Steel & Wooden Furniture □ Footwears □ Furnishing & Handlooms □ Sports Goods □ Hand Tools and Light-Engineering items □ General supplies to Schools and Colleges etc.

ENSURE

HIGH QUALITY • COMPETITIVE RATES • TIMELY DELIVERIES

Please visit our Co-operative Emporiums at :

CHANDIGARH • KURUKSHETRA • BHIWANI • GURGAON • NARNAUL

The Haryana State Industrial Cooperative Federation Limited

S. C. O. 20 (2nd Floor) Sector 17-E, Chandigarh—Phone : 25128

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best compliments from

A.K.M. Construction & Engineering Co.

278, Sector 33-A, Chandigarh

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलोखेड़ी खण्ड की विशेषताएँ

- ☐ (क) जनसंख्या 112941 (ख) क्षेत्रफल 590.21 (वर्ग किलो मी०)
  (ग) पंचायतों की संख्या=98 (घ) शामलात भूमि 16642 A. 5 K. 16 M.
- ☐ शामलात भूमि से 1979-80 में पट्टे पर देने से आय 1829308-00 रुपये हुई। 1336 A. 4 K. 4 M. भूमि हरिजनों को पट्टे पर दी गई।
- ☐ इस खण्ड में नीलोखेड़ी को उप तहसील बनाकर 2½ मास से कार्यारम्भ हो गया।
- ☐ रोजगार कार्यालय तथा दूध संयन्त्र खोला गया है।
- ☐ जल वितरण योजना के अधीन गाँव अमीन, सगा, सोंकड़ा और निगदू में कार्य सम्पन्न हो चुका है।
- ☐ प्राथमिक चिकित्सालय को पूर्ण चिकित्सालय बना दिया। तरावड़ी और निगदू में भी चिकित्सालय खोलने की सरकार द्वारा घोषणा हो चुकी है।
- ☐ काम के बदले अनाज की योजना में सरकार द्वारा 2000000-00 रु० से अधिक की सहायता पंचायतों को दी जा चुकी है। कई गांवों की गलियाँ पक्की की जा चुकी हैं। 5350 क्विंटल अन्न इस योजना के अधीन खण्ड को प्राप्त हो चुका है। जिससे ५३ लिंक रोड, ४९ गलियाँ, कई गाँवों में ९०० क्विटल चावल और ३०० क्विंटल गेहूं के बदले काम चालू है।
- ☐ इस खण्ड में शिक्षा का प्रसार :—गाँव एबला, मोहड़ी और अमीन में प्राथमिक पाठशाला को मिडल बना दिया गया। तरावड़ी जाम्बा में मिडल स्कूल को हाई स्कूल बना दिया गया।
- ☐ गाँव झंजाड़ी, रायपुर, समानाबाहु में बस स्टैण्ड पर यात्रियों की सुविधा के लिए शैड लगवाए गए।
- ☐ इस खण्ड में हरिजनों के लिए चौपालों पर 320000 रु० की लागत से १६ गांवों में चौपालों का निर्माण किया गया।
- ☐ पशु हस्पताल गाँव जाम्बा, कारसा डोड, झंजाड़ी, बरसालु, अन्जणथली माजरा-रोडान्, सगा, सीकरी और बुढेड़ा में पशु हस्पताल बनाने के लिए उद्घाटन किए जा चुके हैं। समानाबाहु और रायसन गाँव में 'स्टाकमैन' सैंटर खोलने का उद्घाटन हो चुका है।
- ☐ इस खण्ड के प्रत्येक गाँव को लिंक रोड द्वारा मेन सड़क से जोड़ा जा चुका है।

हरि कृष्ण मुरारी
खण्ड विकास पंचायत अधिकारी
नीलोखेड़ी (करनाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर पालिका नीलोखेड़ी उन्नति के पथ पर

वर्ष १६७६-८० की विशेषताएं और नगर पालिका का सत्र

- नीलोखेड़ी नगर पालिका का बजट ६०००००-०० रुपये
- जनसंख्या—११०००
- चुंगी की आय १६००००-०० रुपये
- गोल मार्केट का निर्माण मान्यवर मुख्यमन्त्री श्री भजन लाल जी द्वारा, श्री जय प्रकाश जी सर्वोदय नेता की याद में किया गया। इस पर १२०००-०० रुपये व्यय हुए।
- ७०००-०० रुपये की लागत से शहर में पक्की नालियाँ, पुलियाँ और पक्की गलियाँ बनवाई गई जिस से वर्षा ऋतु में चलने फिरने की सुविधा के साथ-साथ मच्छरों से भी छुटकारा मिल सकेगा।
- नगर पालिका के कार्यालय का निर्माण १८०००-०० रुपये की लागत से किया गया।
- शहर को अप ग्रेड करके सब तहसील बनाने की घोषणा मुख्यमन्त्री श्री भजन लाल जी ने की ही नहीं बल्कि नगर पालिका के कार्यालय में अस्थायी तौर से नायब तहसीलदार का कार्यालय दो मास में कार्य करने लग गया है तथा ब्लॉक नीलोखेड़ी की आबादी को नजदीकी सेवाएं उपलब्ध हो गई हैं।
- नगर पालिका ने एक लाख रुपये का कर्जा लेकर पानी सप्लाई का प्रबन्ध नगर में करके जनसंख्या की आवश्यकता को पूर्ण किया है।
- मुख्यमन्त्री श्री भजन लाल जी ने नगर पालिका की जन सम्बन्धी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पचास हजार रुपये का अनुदान प्रशासक महोदय श्री हरी कृष्ण जी मुरारी की कार्यकुशलता को देखते हुए ही दिया जिस से छोटे-छोटे कामों का निर्माण किया जाना है।
- शहर में लोगों की सुविधा के लिये स्ट्रीट लाईट के १७३ प्वाइंट से बढ़ा कर २८० कर दिये गये।

इस समस्त उन्नति का श्रेय महामान्य प्रशासक महोदय श्री हरी कृष्ण जी मुरारी के सहयोग का परिणाम है। जब से नगर पालिका का कार्यभार इन की देख रेख में आया है तब से नगर पालिका चौमुखी उन्नति करती जा रही है। आप लगनशील और सुदृढ़ प्रबन्धक हैं। ईश्वर आपका सहयोग, जनसंख्या, नगरपालिका सदा बनाये रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यानं ते पुरुष नावयोनम् :—हे पुरुष। आगे बढ़, पीछे मत हट।

With best compliments of

Parkash Enterprises

Manufacturers of : CONDUIT PIPES & TUBES
Factory : Kuldip Nagar, G. T. Road, Ambala Cantt.
Office : Idgah Road, Ambala Cantt.
Phones : Factory : 20510 □ Office : 20724

Parkash Engineering Works

Idgah Road, Ambala Cantt.

The Ambala Conduit Industries

2557/15-19 Bengali Mohalla, Ambala Cantt.

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best wishes from

AGGARWAL SILICATE & CHEMICAL WORKS

Jarout Road, Near Dhul Kot Power House, Ambala City.

Phone : Factory 57942

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मञ्चोऽग्निसपर्यत—सब मिल कर यज्ञ करो।

६८वें वार्षिक महोत्सव के शुभ अवसर पर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रति

सफलता की शुभकामनाओं सहित

बवासीर एवं भगन्दर की बिना आप्रेशन

सफल चिकित्सा

अर्शीना टेबलेट तथा अर्शीना प्रलेप

खाने के लिए | लगाने के लिए

निर्माता :—

योगी फार्मेसी-कनखल

(आयुर्वेदिक औषधि निर्माण एवं अनुसन्धान में अग्रणी)

पोस्ट : गुरुकुल काँगड़ी-२४९४०४ हरिद्वार (उत्तर प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं यजस्व — यज्ञादि शुभ कार्य स्वयं करो।

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best wishes from

Sumeru & Sehri

BRAKE DIVISION

HMT Ancillary • 219 Industrial Shed • Panchkula

Phone : 27430

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये

Chaudhary Construction Co.

Engineers & Contractors

H. O. 97, Sector 11-A • Chandigarh 160 011

Phone : 25620

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ILK POWDER
...cked with all the essential ...rients. But with hardly any ... Just the drink for dieting ...ople, sedentary workers and ...se wanting to keep their ...olesterol level in check. ...kes delicious curds, gulab-...muns, pastries. And more !

BUTTER
Adds a new tempting dimension of its own. It's creamier. It's tastier. It's healthier. Make yourself a sandwich with its creamy-rich goodness.

Shortly coming in its new packaging.

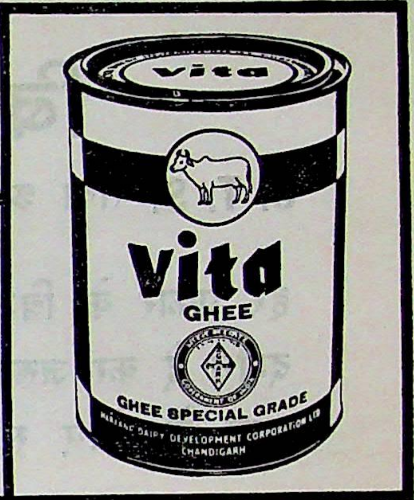

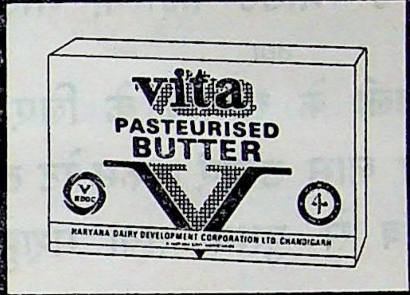

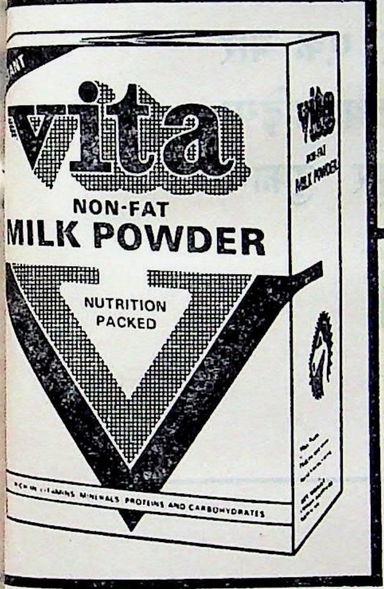

vita

A RANGE OF MILKY DELIGHTS FROM HARYANA

With best compliments of

M/S. AJAY SILICATE & CHEMICAL WORKS

Chandigarh Road • AMBALA CITY.

Phone : 56046

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली की

C. T. S. तथा अन्डर ग्राउंड वाइरिंग, मोटर वाइरिंग

तथा

हर प्रकार के बिजली के सामान के लिए एक बार दर्शन दे कर जरूर लाभ उठाएं। कम रेट तथा बढ़िया काम के लिए सब से पुरानी तथा मशहूर दुकान

कुमार ब्रदर्स

इलैक्ट्रिकल कन्ट्रैक्टर्ज एण्ड इन्जिनियरज

रेलवे रोड, कुरुक्षेत्र • फोन : 157

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best wishes from

SUMERU AND SEHRI

Manufacturers and Engineers

329, Sector 21—A • CHANDIGARH • Phone : 27430

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री महावीराय नमः

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best wishes from

BEENA SALES CORPORATION

Wholesale Paper, Board & Stationery Merchants

Bay No. 6 • Sector 20-C • Chandigarh

Phone : 20992

Stockists : **KRAFT PAPER**

Ashok Paper Mills & Rohtas Industries Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् तत्सत्

Always Insist on

SELEKT Motors & Monoblock sets

for

Quality Durability & Service

with a Guaranty of Twelve Years

M/s Anil Sales Co.

74, Netaji Subhash Market, Karnal

Phone : 3504

Distributors for :

Haryana • Punjab • Himachal

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमसो मा ज्योतिर्गमय

Always Insist on

SELEKT Motors & Monoblock Sets

for

Quality Durability & Service

with a Guaranty of Twelve Years

Kumar Brothers

Railway Road, Kurukshetra

Phone : 157

Dealers for : KURUKSHETRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमसो मा ज्योतिर्गमय

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best compliments from

CALCUTTA TRADING CO.

Dev Samaj College Road • AMBALA CITY.

Phones : Office 56068, Resi. 56169

Upper Ganges Sugar Mills Ltd.

9/1, R.N. Mukherjee Road • Calcutta 700 001

Sugar Mills & Distillery at :

SEOHARA—246746 Distt. BIJNOR (U.P.)

Manufacturers of Pure Crystal Cane Sugar, Industrial & Power Alcohol.

Oil Mill At :

CHANDAUSI—202 412 (U.P.)

Manufacturers of Pure Edible Oil

Morton Confectionery & Milk Products Factory

P. O. MARHOWRAH-841418 Dist. Saran (Bihar)

Manufacturers of Quality Confectionery & Milk Products.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best wishes from

M/s. Ram Chander Surinder Kumar

WHOLESALE CLOTH MERCHANTS & COMMISSION AGENTS

Ram Bhawan, Dev Samaj College Road, Ambala City.

Phone : 56990

Distributors :

MAFATLAL GROUP OF MILLS

LAL BHAI GROUP OF MILLS

M/s. Jindal Brothers

Dev Samaj Road, Ambala City

Distributors :

GRAVIERA SUITING & SHIRTING

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयं राष्ट्र जागृयामः—हम सब राष्ट्र में जागरूक हों।

हरियाणा प्रान्त में आयुर्वेदिक और यूनानी दवाइयों का

एक मात्र केन्द्र

धारीशाह दी हट्टी (रजि०)

सदर बाजार अम्बाला छावनी 133 001

⊙

वितरक :—

हमदर्द वक्फ लैबोरेट्रीज दिल्ली

और

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः — प्रभु दर्शन से मृत्यु-भय छूट जाता है।

शरीर को स्वस्थ एवं निरोग रखने हेतु

श्री कृष्णा फार्मेसी

महात्मा गांधी मार्ग, कनखल (हरिद्वार)

द्वारा निर्मित

आयुर्वैदिक औषधियां सदैव सेवन करें

निर्माता, निर्यातक, एवं थोक एवं खुदरा विक्रेता

आयुर्वैदिक औषधियां अपक्व द्रव्य, खनिज, जड़ी बूटियां, किराना शिलाजीत; केसर प्राकृतिक बंशलोचन आदि

हमारे सहायक व्यापार संस्थान :—

- श्री कृष्णा फार्मेसी प्रा० लि०, हालबाजार, अमृतसर
- एम० वी० फार्मा, प्रकाश चन्द मार्ग, अमृतसर

नोट :—विशेष जानकारी हेतु पत्र व्यवहार आमन्त्रित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६८वें वार्षिक महोत्सव के शुभ अवसर पर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रति

सफलता की शुभ कामनाओं सहित

दी कुरुक्षेत्र प्राइमरी को-ऑपरेटिव लैण्ड डिवैल्पमैन्ट बैंक लि०

थानेसर–फोन : १८५

यह बैंक किसानों के हित के लिए निम्नलिखित कार्यों के लिये कम ब्याज पर और लम्बे समय के लिए आसान किश्तों पर ऋण देता है

- ☐ कल्लर जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए
- ☐ भूमि समतल करवाने के लिए
- ☐ जमीन रहन छुड़वाने के लिए
- ☐ ट्यूबवैल मरम्मत के लिए
- ☐ जमीन खरीदने के लिए
- ☐ ट्रैक्टर खरीदने के लिए
- ☐ डेरी विकास के लिए
- ☐ भूमिगत नालियां

और अन्य विकास कार्यों के लिए भी ऋण प्रदान करता है पूरी जानकारी के लिए बैंक में प्रबन्धक से मिलें। ३१-३-८० का बैंक का लेखा जोखा निम्नलिखित है

☐ हिस्सा पूंजी	३०५७७५१-००
☐ शुद्ध लाभ ३०-६-७९ तक	२२६११८६-००
☐ १-४-७९ से ३१-३-८० तक दिये गये ऋण	९२·५६ लाख

इसके अतिरिक्त यह बैंक फिक्स डिपॉजिट भी स्वीकार करता है। जिसकी ब्याज दर सब बैंकों से अधिक है। आपका जमा करवाया हुआ धन देश के विकास कार्यों में खर्च किया जाता है।

कंवरजीत सिंह
चेयरमैन

परस राम
मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना की ६८वीं वर्षगांठ के पुनीत अवसर पर

शुभ कामनाएं प्रस्तुत करते हैं ।

स्टेनलैस स्टील रॉड ⊙ प्लेट ⊙ इनगार

के निर्माता

मित्तल उद्योग

गग्रेट

जिला उन्ना, हिमाचल प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठता का अनुसरण करना हमारी कार्य प्रणाली हैं।

With best compliments from

Shashtri Construction Co.

1036, Sector 21-B, Chandigarh

Adarsh Construction Co.

1036, Sector 21-B, Chandigarh

Amar Construction Co.

1036, Sector 21-B, Chandigarh

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तुता मया वरदा वेदमाता

On the 68th Anniversary of

GURUKUL KURUKSHETRA

With best wishes from

Haryana Electricals

All Type of Electric Motor Repair and Binding

7-Baba Sharwan Nath Market • KURUKSHETRA

Dealers in :

JYOTI-NAHAN S.E.I. MONOBLOCK & MOTORS

The Kurukshetra Central Co-Op. Bank Ltd.

KURUKSHETRA • Phones : 643, 160

SAVE THE MONEY AND THE MONEY WILL SAVE YOU

Deposit your savings with us and enjoy the benefit of higher rate of interest on all types of deposits; such as :—

- ⊙ Saving Bank —5½% p. a.
- ⊙ Term Deposits —3% p. a. to 10½% p. a. according to period.
- ⊙ **Money Multiple Certificates.** Rs. 1000/- deposited, under this scheme, will become Rs. 9746/86 after 20 years.
- ⊙ **Recurring deposits.** A regular monthly deposit of Rs. 10/- becomes Rs. 2117/47 after 120 months.

For details please contact the Branch Managers of our branches at Kaithal, Pundri, Guhla, Pehowa, Ladwa Dhand, Jathlana, Jakhauli, Thanesar, Ismailabad, Babain, Shahabad, Radaur, Bhagal and Thanesar City.

We have recently opened a new branch in Thanesar City just opposit Subzi Mandi.

Bank upon us and earn more interest.

KALI RAM (H.C.B.S.)
Manager

RAM SINGH (H.S C.S)
Managing Director

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112746

स्वयं यजस्व—यज्ञादि शुभ कार्य स्वयं करो।

६८वें वार्षिक महोत्सव के शुभअवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रति

सफलताओं की शुभ कामनाओं सहित

स्कूल, मॉडल स्कूल एवं कालेज की हर प्रकार की पुस्तकें

गाइड्स एवं कुँजियों तथा आफिस स्टेशनरी, फार्म व रजिस्टर

उचित दाम पर मिलने का एक मात्र स्थान

स्थापित १९४८ फोन : २९०

रतन बुक डिपो

मोती चौक • कुरूक्षेत्र

कलात्मक मुद्रण का प्रतीक

रूपा प्रिण्टर्ज

अम्बाला छावनी 133 001 • फोन : 21068

112746

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुलीय शिक्षक वर्ग

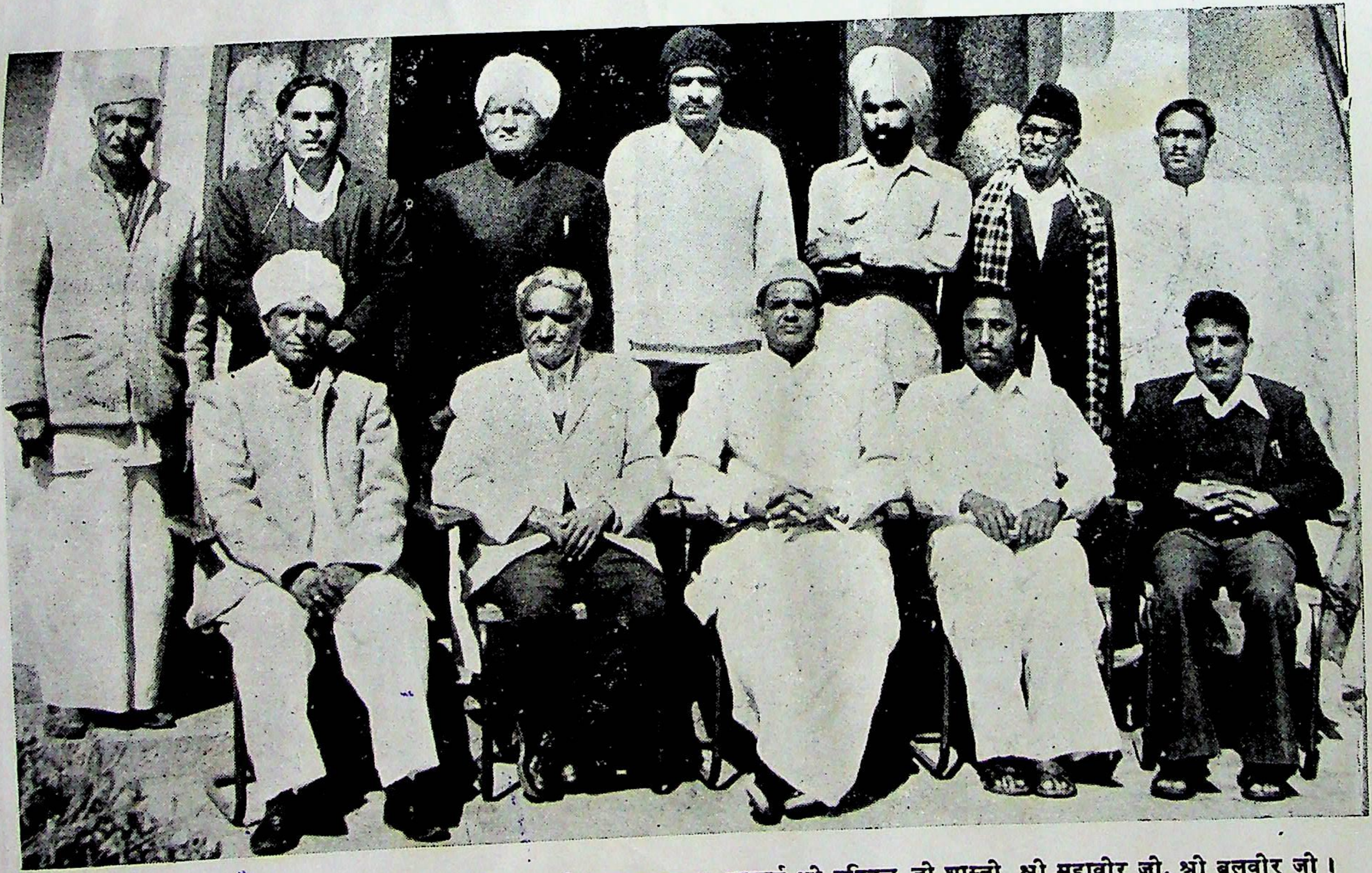

कुर्सी पर :—श्री शुकदेव जी शास्त्री, श्री पं० रेवाधर जी प्रधानाध्यापक, आचार्य श्री हरिदत्त जी शास्त्री, श्री महावीर जी, श्री बलवीर जी।
खड़े हुए :—श्री विश्वनाथ जी शास्त्री, श्री जय प्रकाश जी, श्री किशन लाल जी, श्री राममेहर जी—पी. टी. आई., श्री हरबंस सिंह जी, श्री जय भगवान जी शर्मा और श्री रत्नदेव जी शास्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

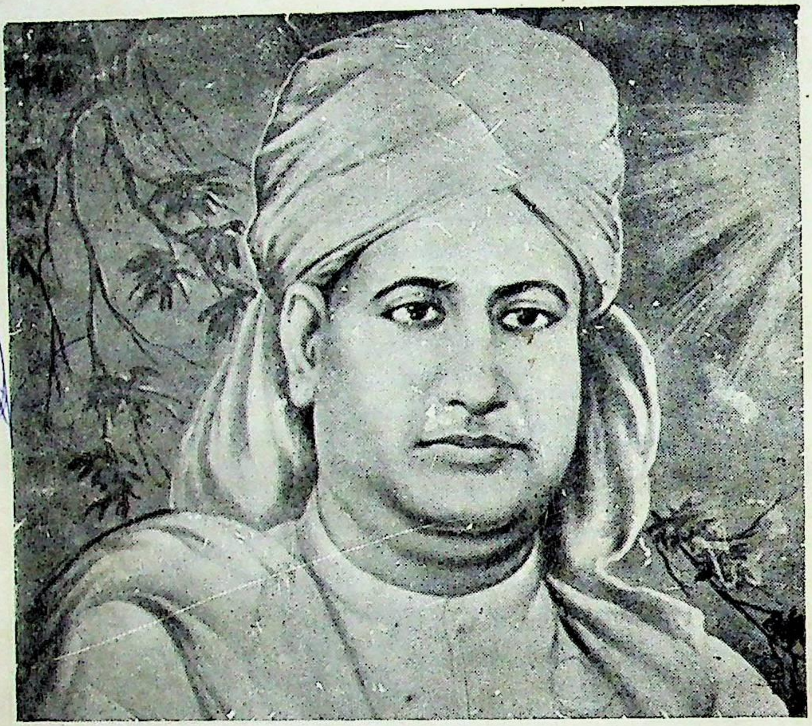

- १६ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में काठियावाड़ प्रान्त के मोरवी राज्य के टंकारा नामक गाँव में १२ फरवरी सन् १८२५ को देव दयानन्द का जन्म हुआ।
- उनके पिता का नाम कृष्ण जी तिवारी तथा माता का नाम अमृतबाई था।
- १०१ दिन पश्चात् उनका नामकरण संस्कार हुआ और उनका नाम मूलशंकर रखा गया।
- १४ वर्ष की आयु में शिवरात्रि पर्व पर शिवमन्दिर में शिवलिङ्ग पर चूहे को उछलता कूदता देख कर मन में वास्तविक शिव की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।
- विषूचिका के कारण इनकी बहन तथा प्रिय चाचा की असामयिक मृत्यु के कारण इनको वैराग हो गया।
- एक श्रेष्ठ सन्यासी एवं महान् विद्वान स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास लेकर मूलशंकर से स्वामी दयानन्द बन गये।
- तदुपरान्त मथुरा में सच्चे आर्ष वाङ्मय के ज्ञाता उद्भट विद्वान दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से विद्या प्राप्त की।
- ऋषि ने बौद्धिक धर्म के प्रचार के लिये सबसे पहले आर्य समाज की स्थापना बम्बई में १८७५ में की।
- ऋषि दयानन्द जी को अजमेर में 30 अक्तूबर सन् १८८३ को निर्वाण प्राप्ति हुई।

स्वत्वाधिकारी गुरुकुल कुरुक्षेत्र के लिये आचार्य हरिदत्त शास्त्री द्वारा रूपा प्रिन्टर्ज ५०१२, लोहे वाला कबाड़ी बाज़ार, अम्बाला छावनी से मुद्रित तथा प्रकाशित।
सम्पादक : वाचस्पति 'कुलवन्त', एम. ए., एम. फिल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri